DR. M. MOHAN RAO
IAS (Retd)
CHAIRMAN

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

M. ARUNA MOHAN RAO
IPS (Retd)
DIRECTOR (ACADEMICS)

जुलाई–2022 करेन्ट अफेयर्स मैग्जीन

- अर्थव्यवस्था
- सामाजिक मुद्दे
- विविध
- कला और संस्कृति
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी
- अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध
- आंतरिक सुरक्षा
- राजव्यवस्था एवं प्रशासन
- पर्यावरण एवं परिस्थितिकी

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

R-26, Zone-II, Opp Railway track, M.P. Nagar, Bhopal
Call us
0755-7967814, 7967718, +918319618002

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

जुलाई -2022

करेंट अफेयर

विषय - सूची

विषय	पृष्ठ सं.
कला और संस्कृति	1-3
• बुद्ध पूर्णिमा	
• राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती	
राजव्यवस्था एवं शासन	4-11
• जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति में संशोधन -2018	
• राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण **(NMA)** विरासत उप-कानून बना रहा है	
• राष्ट्रीय महिला विधायक सम्मेलन-2022	
• संसदीय कार्य मंत्रालय	
• पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन स्कीम	
• राष्ट्रीय वायु खेल नीति	
• भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय के लिए चुनाव	
पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण	12-22
• संरचनाओं के भूकंप प्रतिरोध में सुधार	
• विश्व मधुमक्खी दिवस	
• **UN-ESCAP** का 78वां आयोग सत्र	
• स्मार्ट सामग्री जो प्रकाश उत्तेजना का जवाब देती है	
• ग्रेटर पन्ना लैंडस्केप का विमोचन	
• पर्यावरण के लिए जीवन शैली- जीवन आंदोलन	
• 'मिट्टी बचाओ' कार्यक्रम	
• विश्व पर्यावरण दिवस 2022	
• जलवायु परिवर्तन प्रबंधन कार्यक्रम में अग्रणी	
• यंकी कुटी घाटी में हिमनदों की प्रगति	
• ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस	
अर्थव्यवस्था	23-36
• राष्ट्रीय स्टार्टअप सलाहकार परिषद (एनएसएसी) की चौथी बैठक	
• **GeM**, **CSC** और इंडिया पोस्ट ने **MoU** पर हस्ताक्षर किए	
• भारी उद्योग मंत्रालय ने **NRDC** के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए	
• चीनी का निर्यात और इथेनॉल उत्पादन	
• भारत में एफडीआई प्रवाह	
• भारतीय गैस एक्सचेंज पर ओएनजीसी	
• विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल **(FIF)** ने पूरे किए 5 साल	
• अनिवार्य पंजीकरण के तहत लाया गया कागज का आयात	
• सूक्ष्म और लघु उद्यम क्लस्टर विकास कार्यक्रम के नए दिशानिर्देश	

RAO'S ACADEMY

- **NMDC** का अब तक का सर्वश्रेष्ठ वार्षिक वित्तीय प्रदर्शन
- वित्त वर्ष 2021-22 में भारत का कपड़ा निर्यात अब तक का सबसे अधिक
- गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस के जनादेश का विस्तार
- मर्चेंट चौंबर ऑफ उत्तर प्रदेश का 90वां वर्ष समारोह
- सहकारी बैंक ऋण प्रवाह
- प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) डैशबोर्ड

विज्ञान और तकनीक 37-46

- विश्व मेट्रोलॉजी दिवस 2022
- बीज श्रृंखला विकास
- भारत में सड़कों को चलाने के लिए सुरक्षित बनाने के लिए ।ए
- **PARAM PORUL** सुपरकंप्यूटर
- 2030 तक 100 मिलियन टन कोयला गैसीकरण
- राष्ट्रीय एआई पोर्टल
- असम भूकंप के बारे में अध्ययन
- एक अनोखा लिक्विड-मिरर टेलीस्कोप
- इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि-4
- बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो - 2022
- डीएसटी ने जियोस्पेशियल सेल्फ सर्टिफिकेशन पोर्टल लॉन्च किया
- ग्राफीन में पाया गया तटस्थ इलेक्ट्रॉन प्रवाह

सामाजिक मुद्दे 47-68

- मालवीय मिशन
- भारत में असमानता की स्थिति रिपोर्ट
- आयुष मंत्रालय ने सोवा रिग्पास पर कार्यशाला का आयोजन किया
- आशा - **WHO** के ग्लोबल हेल्थ लीडर्स अवार्ड-2022 से सम्मानित
- व्हाट्सएप पर डिजिलॉकर सेवाएं
- **MoHUA** ने स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 लॉन्च किया
- राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) 2021 रिपोर्ट
- जल जीवन मिशन ने 50 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की
- **NHA** ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के लिए ऑनलाइन सार्वजनिक डैशबोर्ड लॉन्च किया
- प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी)
- विश्व तंबाकू निषेध दिवस
- श्रेष्ठ योजना
- आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के साथ एकीकृत 'ई-संजीवनी'
- चौथा राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक
- आयुष संस्थान को मिला एनएबीएल प्रत्यायन
- बाल स्वराज पोर्टल के तहत सीआईएस आवेदन
- भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम पर दिशानिर्देश
- वर्ल्ड ऑफ वर्क समिट

अंतरराष्ट्रीय संबंध 69-76

- 8वीं ब्रिक्स पर्यावरण मंत्रियों की बैठक
- निवेश प्रोत्साहन समझौता
- इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क
- भारत-जापान संबंध
- क्वाड लीडर्स समिट
- भारतीय नौसेना - बांग्लादेश नौसेना द्विपक्षीय पूर्व बोंगोसागर शुरू
- उपराष्ट्रपति ने गैबॉन का पहला उच्च स्तरीय दौरा किया
- भारत और स्वीडन मेजबान उद्योग संक्रमण वार्ता
- भारत और बांग्लादेश के बीच रेल

RAO'S ACADEMY

- भारत-सेनेगल ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए
- भारत बांग्लादेश संयुक्त सैन्य अभ्यास
- बहुराष्ट्रीय संयुक्त अभ्यास "पूर्व खान क्वेस्ट 2022"

आंतरिक सुरक्षा **77-81**

- सूरत और उदयगिरि युद्धपोत
- आईएनएस गोमती सेवामुक्त
- रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 76,390 करोड़ रुपये के प्रस्तावों को मंजूरी दी
- इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि-4

विविध **82-84**

- ट्राई का रजत जयंती समारोह
- विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस 2022
- डिजिटल इंडिया भाषा
- भारत का पहला लैवेंडर महोत्सव
- भारत **ITU** में फिर से चुनाव लड़ेगा

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

RAO'S ACADEMY

1 कला और संस्कृति

बुद्ध पूर्णिमा

बुद्ध जयंती, वैसाखी बुद्ध पूर्णिमा, वेसाक या बुद्ध पूर्णिमा, गौतम बुद्ध के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला उत्सव है।

- बुद्ध के जन्म को 'वेसाक' नामक उत्सव के हिस्से के रूप में मनाया जाता है, जो उनके जीवन की तीन प्रमुख घटनाओं को- उनके जन्म, ज्ञान और मृत्यु को जोड़ती है।

बुद्ध पूर्णिमा का इतिहास

- बुद्ध पूर्णिमा (जिसे बुद्ध जयंती भी कहा जाता है) राजकुमार सिद्धार्थ गौतम के जन्म का उत्सव मनाती है।
- 'पूर्णिमा' शब्द संस्कृत में 'पूर्णिमा' के लिए है, जो बताता है कि इसे पूर्णिमा के दिन क्यों मनाया जाता है, और 'जयंती' का अर्थ 'जन्मदिन' होता है।
- बुद्ध शब्द उन लोगों को दिया गया है जो 'बोधि' या ज्ञान प्राप्त करते हैं, इसलिए ज्ञान प्राप्त करने के बाद यह नाम सिद्धार्थ को दिया गया।
- बुद्ध पूर्णिमा आमतौर पर हिंदू/बौद्ध चंद्र कैलेंडर में 'वैसाखी' के महीने में मनाई जाती है।
- बुद्ध पूर्णिमा गौतम बुद्ध की 2566वीं जयंती होगी।

गौतम-बुद्ध के बारे में

- भगवान विष्णु के नौवें अवतार माने जाने वाले बुद्ध का जन्म चंद्र कैलेंडर में बैसाख मास की शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था।
- सिद्धार्थ गौतम, का जन्म 567 ईसा पूर्व के आसपास, क्षत्रिय वंश के तहत शाक्य साम्राज्य के माता माया और पिता राजा शुद्धोदन के यहाँ हुआ था।
- उनके पिता शाक्य वंश के मुखिया थे।
- ऐसा कहा जाता है कि उनके जन्म से बारह साल पहले ब्राह्मणों ने भविष्यवाणी की थी कि वह या तो एक सार्वभौमिक सम्राट या एक महान ऋषि बनेंगे।
- उसे तपस्वी बनने से रोकने के लिए उसके पिता ने उसे महल की परिधि में रखा।
- गौतम राजसी विलासिता में पले-बढ़े, बाहरी दुनिया से परिरक्षित थे।
- उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा से हुआ था और उनका एक पुत्र था जिसका नाम राहुल था।
- लगभग 29 साल की उम्र में, कपिलवस्तु की गलियों में, उन्हें तीन साधारण चीजों का सामना करना पड़ा: एक बूढ़ा आदमी, एक बीमार आदमी और एक लाश को जलती हुई भूमि में ले जाया जा रहा था।
- फिर उन्होंने दुख की समस्या के समाधान की तलाश में महल छोड़ने का संकल्प लिया।
- अपनी पत्नी और बच्चे को बिना जगाए चुपचाप विदाई देने के बाद, वे वन की ओर चले गये।
- गौतम को कई शिक्षकों से मिले और अंत में दो शिक्षकों के साथ काम करने के लिए तैयार हो गए।
- अरदा कलाम से, उन्होंने शून्यता के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अपने मन को अनुशासित करना सीखा।
- इसके बाद सिद्धार्थ ने उदरक रामपुत्र से मन की एकाग्रता में प्रवेश करना सीखा जो न तो चेतना है और न ही बेहोशी।
- छह साल तक सिद्धार्थ ने पांच साथियों के साथ तपस्या और एकाग्रता का अभ्यास किया।

PURSUIT OF EXCELLENCE
RAO'S ACADEMY

- सिद्धार्थ ने कठिन तपस्या के बाद निरंजना नदी में स्नान किया और फिर पीपल के पेड़ (बोधिवृक्ष) के नीचे बैठ गए।
- अपने जन्म के उसी दिन 35 वर्ष की आयु में, उन्होंने उस पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त किया और बुद्ध कहलाये।
- उन्हें शाक्य मुनि के नाम से भी जाना जाने लगा।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश अपने पांच साथियों को वाराणसी के पास सारनाथ के हिरण पार्क में दिया था।
    - ♦ इस घटना को धर्म-चक्र-प्रवर्तन (कानून का पहिया घुमाना) कहा जाता था।

चार आर्य सत्य

बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को चार प्रमुख आर्य सत्यों के माध्यम से समझाया गया है। वे हैं:

1. दुख।
2. दुख समुदाय।
3. दुख निरोध का सत्य (निरोध)।
4. दुख निरोध का मार्ग (दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा)।

यदि कोई इच्छाओं को नियंत्रण में कर सकता है, तो वह स्वतंत्र और शांति से रह सकता है। इसे 'अष्टांगिक मार्ग' का अनुसरण करके प्राप्त किया जा सकता है।

नोट: बौद्ध धर्म के तहत बुद्ध के पूर्ववर्ती कस्पा बुद्ध थे और उनके उत्तराधिकारी मैत्रेय होंगे।

राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती

संस्कृति मंत्रालय ने राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में उद्घाटन समारोह आयोजित किया।

राजा राम मोहन राय के बारे में

- राजा राम मोहन राय को 18वीं और 19वीं शताब्दी के भारत में उनके द्वारा लाए गए उल्लेखनीय सुधारों के लिए आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है।
- राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई, 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गांव में हुआ था।
- उनके पिता रामकांत रॉय वैष्णव थे, जबकि उनकी मां तारिणी एक शाक्त पृष्ठभूमि से थीं।
- राजा राम मोहन राय को उच्च शिक्षा के लिए पटना भेजा गया।
- पन्द्रह वर्ष की आयु तक राजा राममोहन राय ने बांग्ला, फारसी, अरबी और संस्कृत सीख ली थी।
- राजा राम मोहन राय मूर्ति पूजा और रूढ़िवादी हिंदू रीति-रिवाजों के खिलाफ थे।
- इससे राजा राम मोहन राय और उनके पिता के बीच मतभेद पैदा हो गए।
- मतभेदों के बाद उन्होंने घर छोड़ दिया। वे हिमालय से होते हुए और तिब्बत चले गए।
- लौटने के बाद, राजा राम मोहन राय वाराणसी गए और वेदों, उपनिषदों और हिंदू दर्शन का गहन अध्ययन किया।
- 1803 से 1814 तक, उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए व्यक्तिगत दीवान के रूप में काम किया, पहले वुडफोर्ड और फिर डिग्बी के।
- 1814 में राजा राम मोहन राय ने आत्मीय सभा का गठन किया।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

♦ आत्मीय सभा ने समाज में सामाजिक और धार्मिक सुधारों को शुरू करने का प्रयास किया।

- राजा राम मोहन राय ने महिलाओं के अधिकारों के लिए अभियान चलाया, जिसमें विधवाओं के पुनर्विवाह का अधिकार और महिलाओं के लिए संपत्ति रखने का अधिकार शामिल था।
  - ♦ उन्होंने सती प्रथा और बहुविवाह की प्रथा का सक्रिय रूप से विरोध किया।
- उन्होंने शिक्षा, विशेषकर महिलाओं की शिक्षा का भी समर्थन किया।
- 1822 में उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पर आधारित एक स्कूल की स्थापना की।
- 1828 में, राजा राम मोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की।
- राजा राम मोहन राय के प्रयासों का फल तब मिला जब 1829 में सती प्रथा को समाप्त कर दिया गया।
- राम मोहन राय को दिल्ली के नाममात्र के मुगल सम्राट अकबर द्वितीय द्वारा 'राजा' की उपाधि दी गई थी।
  - ♦ यह 1831 की बात है जब उन्होंने अपनी पेंशन और भत्तों की याचना करने के लिए मुगल सम्राट के राजदूत के रूप में यूनाइटेड किंगडम की यात्रा की थी।
- 'भारत में आधुनिक युग के जनक' शीर्षक से अपने संबोधन में, टैगोर ने राम मोहन को 'भारतीय इतिहास के क्षेत्र में एक चमकदार सितारा' के रूप में संदर्भित किया।

YOUR SUCCESS IS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

2 राजव्यवस्था एवं शासन

जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति में संशोधन -2018

प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति -2018 में संशोधन को मंजूरी दे दी है।

- "जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति - 2018" को 2018 में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति के अधिक्रमण में अधिसूचित किया गया था, जिसे 2009 में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के माध्यम से प्रख्यापित किया गया था।

प्रमुख बिंदु

जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति में स्वीकृत मुख्य संशोधन निम्नलिखित हैं:

- जैव ईंधन के उत्पादन के लिए अधिक फीडस्टॉक की अनुमति देना,
- पेट्रोल में इथेनॉल के 20% मिश्रण के इथेनॉल मिश्रण लक्ष्य को 2030 से ESY 2025-26 तक आगे बढ़ाने के लिए,
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड)/निर्यात उन्मुख इकाइयों (ईओयू) में स्थित इकाइयों द्वारा मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत देश में जैव ईंधन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए,
- राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समिति (एनबीसीसी) में नए सदस्यों को जोड़ने के लिए,
- विशिष्ट मामलों में जैव ईंधन के निर्यात की अनुमति देना, और
- राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समिति की बैठकों के दौरान लिए गए निर्णयों के अनुरूप नीति में कुछ वाक्यांशों को हटाना/संशोधित करना।

जैव ईंधन 2018 पर राष्ट्रीय नीति के बारे में

जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति 2018 में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा अधिसूचित की गई थी।

- नीति जैव ईंधन को "मूल जैव ईंधन" के रूप में वर्गीकृत करती है।
  - पहली पीढ़ी (1G) बायोएथेनॉल और बायोडीजल,
  - दूसरी पीढ़ी (2G) इथेनॉल, म्यूनिसिपल सॉलिड वेस्ट (MSW) टू ड्रॉप-इन फ्यूल,
  - तीसरी पीढ़ी (3G) जैव ईंधन,जैव-सीएनजी आदि प्रत्येक श्रेणी के तहत उपयुक्त वित्तीय और वित्तीय प्रोत्साहन के विस्तार को सक्षम करने के लिए।
- नीति निम्नलिखित के उपयोग की अनुमति देकर इथेनॉल उत्पादन के लिए कच्चे माल के दायरे का विस्तार करती है:
  - गन्ने का रस, चीनी युक्त सामग्री जैसे चुकंदर,
  - मीठा चारा,
  - स्टार्च युक्त सामग्री जैसे मकई, कसावा, और
  - गेहूं, टूटे चावल, सड़े हुए आलू जैसे क्षतिग्रस्त अनाज, इथेनॉल उत्पादन के लिए मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त।
- नीति राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समिति के अनुमोदन से पेट्रोल के साथ सम्मिश्रण के लिए इथेनॉल के उत्पादन के लिए अधिशेष खाद्यान्न के उपयोग की अनुमति देती है।

RAO'S ACADEMY

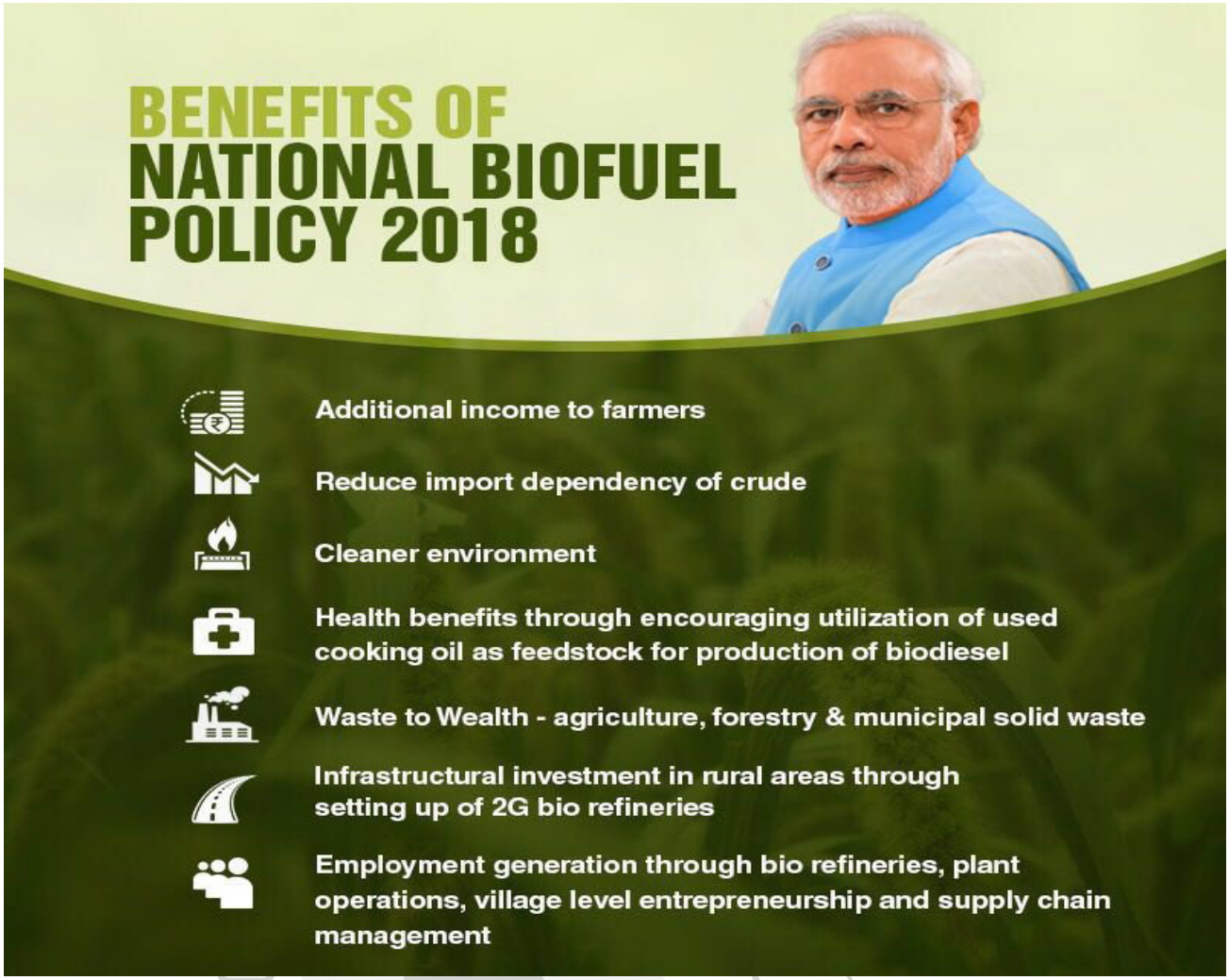

- उन्नत जैव ईंधन पर जोर देने के साथ, नीति अतिरिक्त कर प्रोत्साहनों के अलावा 6 वर्षों में 2जी इथेनॉल बायो रिफाइनरियों के लिए 5000 करोड़ रुपये की व्यवहार्यता अंतर निधि योजना का संकेत देती है।
- नीति अखाद्य तिलहनों, प्रयुक्त कुकिंग ऑयल, अल्पकालीन फसलों से बायोडीजल उत्पादन के लिए आपूर्ति श्रृंखला तंत्र की स्थापना को प्रोत्साहित करती है।

क्या लाभ हैं?

- **आयात पर निर्भरता कम करें:** ई10 का एक करोड़ लीटर मौजूदा दरों पर 28 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा बचाता है।
  - ♦ 2017-18 में, लगभग 150 करोड़ लीटर इथेनॉल की आपूर्ति के परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा की 4000 करोड़ रुपये से अधिक की बचत हुई।
- **स्वच्छ पर्यावरण:** एक करोड़ लीटर ई-10 से लगभग 20,000 टन CO_2 उत्सर्जन की बचत होती है।
  - ♦ 2017-18 में, CO_2 का उत्सर्जन 30 लाख टन तक कम था।
- **स्वास्थ्य लाभ:** खाना बनाने के लिए खाना पकाने के तेल का लंबे समय तक पुन: उपयोग, विशेष रूप से डीप-फ्राइंग में एक संभावित स्वास्थ्य खतरा है और इससे कई बीमारियां हो सकती हैं।
  - ♦ प्रयुक्त खाना पकाने का तेल बायोडीजल के लिए एक संभावित फीडस्टॉक है और बायोडीजल बनाने के लिए इसके उपयोग से खाद्य उद्योग में इस्तेमाल किए गए खाना पकाने के तेल का उपयोग रोका जा सकेगा।

RAO'S ACADEMY

- **MSW प्रबंधन:** यह अनुमान है कि भारत में सालाना 62 MMT नगर ठोस अपशिष्ट (MSW) उत्पन्न होता है।
  - ♦ ऐसी प्रौद्योगिकियां उपलब्ध हैं जो अपशिष्ट/प्लास्टिक, एमएसडब्ल्यू को ईंधन में गिराने में परिवर्तित कर सकती हैं।
  - ♦ इस तरह के कचरे के एक टन में ईंधन में लगभग 20% गिरावट प्रदान करने की क्षमता होती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में ढांचागत निवेश
- रोजगार सृजन
- किसानों को अतिरिक्त आय

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) विरासत उप-कानून बना रहा है

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (एनएमए) ने कोविड अवधि (2019 से आगे) के दौरान 101 विरासत उपनियमों की रिकॉर्ड संख्या बनाई है।

- इस अवधि के दौरान, प्राधिकरण ने कुल 126 केंद्रीय संरक्षित स्मारकों को कवर किया है।

प्रमुख बिंदु

- एएमएएसआर अधिनियम और एनएमए को दिए गए अधिदेश के अनुसार, एचबीएल का काम 2012 तक पूरा होना था।
  - ♦ तब यह कार्य पूरे भारत में 3600 से अधिक केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों के पूरे सरगम को कवर करता।
- लेकिन उप-नियमों का गठन धीमा था और पिछले दस वर्षों में केवल पांच विरासत उप-कानूनों (एचबीएल) को अंतिम रूप दिया गया था, जो 31 केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों को कवर करते थे।

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) के बारे में

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) की स्थापना प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष । MASR (संशोधन और मान्यता) अधिनियम, 2010 के प्रावधानों के अनुसार की गई है।

- यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है। भारत की।
- स्मारकों के संरक्षण और संरक्षण के लिए NMA को कई कार्य सौंपे गए हैं।
- एनएमए की इन जिम्मेदारियों में से एक निषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में निर्माण संबंधी गतिविधि के लिए आवेदकों को अनुमति देने पर विचार करना भी है।
- एचबीएल की आवश्यकता शहरीकरण की बढ़ती दर, विकास और केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों के आसपास की भूमि पर बढ़ते दबाव से प्रेरित थी।
  - ♦ यह अक्सर बाधित होता था और स्मारक के 300 मीटर के परिधीय क्षेत्राधिकार के आड़े आता था।
- इसने स्मारकों के आसपास संपत्ति और व्यक्तिगत विकास को विनियमित करने के लिए इसे अनिवार्य बना दिया।
- ऐसी स्थितियों ने NMA द्वारा विरासत उप-कानूनों (HBLs) के निर्माण का नेतृत्व किया ताकि स्मारकों के आसपास के विकास कार्यों को विनियमित किया जा सके।

राष्ट्रीय महिला विधायक सम्मेलन-2022

भारत के राष्ट्रपति ने तिरुवनंतपुरम में राष्ट्रीय महिला विधायक सम्मेलन-2022 का उद्घाटन किया।

- 'आजादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में सम्मेलन केरल विधानसभा द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

प्रमुख बिंदु

- सम्मेलन में देश भर के विभिन्न राज्यों के 120 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- विधायी निकायों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण को वास्तविकता बनाने के लिए एक प्रस्ताव पेश किया गया।
- सम्मेलन में स्वीकार किए गए एक अन्य प्रस्ताव में महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों पर अंकुश लगाने के लिए एक कानून बनाने का आह्वान किया गया।

संसदीय कार्य मंत्रालय

संसदीय कार्य मंत्रालय (MPA) हाल ही में आजादी का अमृत महोत्सव का प्रतिष्ठित सप्ताह मना रहा था।

संसदीय कार्य मंत्रालय के बारे में

- संसदीय कार्य मंत्रालय, हालांकि आकार में छोटा है, केंद्र सरकार के प्रमुख मंत्रालयों में से एक है।
- इसकी अध्यक्षता संसदीय मामलों के केंद्रीय कैबिनेट मंत्री करते हैं।
- संसद में सरकार की ओर से विविध और विशाल संसदीय कार्यों को कुशलतापूर्वक संभालने का कार्य संसदीय कार्य मंत्रालय को सौंपा गया है।
- इस प्रकार, MPA संसद में सरकारी कामकाज के संबंध में संसद के दोनों सदनों और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।
- मई, 1949 में एक विभाग के रूप में बनाया गया, यह जल्द ही अधिक जिम्मेदारियों और कार्यों के आवंटन के साथ एक पूर्ण मंत्रालय बन गया।
- मंत्रालय संसदीय मामलों की कैबिनेट समिति को सचिवीय सहायता प्रदान करता है।
- एमपीए का मिशन और उद्देश्य

संसद के साथ सरकार की बातचीत में लगातार सुधार करने के लिए एक कुशल सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करना:

- संसद में सरकार के कामकाज की योजना, समन्वय और निगरानी।
- मंत्रालयों/विभागों को उनके संसदीय कार्य को प्रभावी ढंग से करने में सहायता करना।
- निदेशों, संकल्पों आदि के संबंध में सरकार की ओर से सक्रिय रूप से और प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देना।
- मंत्रालयों के लिए संसद सदस्यों की परामर्शदात्री समितियों की बैठकों का गठन और व्यवस्था करना।
- संसदीय प्रणाली के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सम्मेलनों, कार्यक्रमों आदि के आयोजन के माध्यम से पहल करना।
- संसद सदस्यों के वेतन, सुविधाओं और कल्याण संबंधी मामलों से संबंधित नीतियों का प्रशासन करना।
- संसद के दोनों सदनों में मंत्रियों द्वारा दिए गए आश्वासनों के कार्यान्वयन के लिए मंत्रालयों/विभागों का समन्वय।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 77 (3) के तहत राष्ट्रपति द्वारा बनाए गए भारत सरकार (कार्य आवंटन) नियम, 1961 के तहत मंत्रालय को सौंपे गए कार्य:-

- संसद के दोनों सदनों को बुलाने और सत्रावसान की तिथियां, लोकसभा का विघटन और संसद में राष्ट्रपति का अभिभाषण।
- दोनों सदनों में विधायी और अन्य आधिकारिक कार्यों की योजना और समन्वय।
- सदस्यों द्वारा दी गई सूचना के प्रस्तावों पर चर्चा के लिए संसद में सरकारी समय का आवंटन।
- सरकार द्वारा गठित समितियों और अन्य निकायों में संसद सदस्यों की नियुक्ति।
- सरकारें गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों और संकल्पों पर टिकी हैं।
- प्रक्रियात्मक और अन्य संसदीय मामलों पर मंत्रालयों को सलाह।
- संसद सदस्यों की शक्तियों, विशेषाधिकारों और उन्मुक्तियों से संबंधित मामले।
- देश भर के स्कूलों/कॉलेजों में युवा संसद प्रतियोगिताओं का आयोजन।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- मंत्रालय निम्नलिखित का प्रशासन भी करता है:
  - ♦ संसद के अधिकारियों के वेतन और भत्ते अधिनियम, 1953,
  - ♦ संसद सदस्यों के वेतन, भत्ते और पेंशन अधिनियम, 1954,
  - ♦ संसद अधिनियम 1977 में विपक्ष के नेताओं के वेतन और भत्ते और
  - ♦ संसद में मान्यता प्राप्त दलों और समूहों के नेता और मुख्य सचेतक (सुविधाएँ) अधिनियम, 1998।

पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन स्कीम

बच्चों के लिए भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा बच्चों के लिए PM CARES योजना शुरू की गई थी।

- पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन योजना का उद्देश्य उन बच्चों की सहायता करना है जिन्होंने महामारी के दौरान कोरोनावायरस के कारण अपने माता-पिता को खो दिया है।

योजना के बारे में

इस योजना का उद्देश्य उन बच्चों का समर्थन करना है जिन्होंने 11 मार्च 2020 से शुरू होने वाली अवधि के दौरान माता-पिता या कानूनी अभिभावक या दत्तक माता-पिता या जीवित माता-पिता दोनों को COVID-19 महामारी से खो दिया है।

- योजना का उद्देश्य बच्चों की व्यापक देखभाल और सुरक्षा को सतत रूप से सुनिश्चित करना है।
- महिला और बाल कल्याण मंत्रालय भारत में बच्चों के कल्याण की देखभाल के लिए नोडल मंत्रालय है।
- मंत्रालय को अन्य हितधारकों के सहयोग से पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन योजना के संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

- इस योजना का वित्त पोषण पीएम केयर्स फंड द्वारा किया जाएगा।
- यह 18 वर्ष की आयु से प्रत्येक बच्चे को मासिक वजीफा और रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान करेगा। 23 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर 10 लाख।
- लाभों में स्कूली छात्रों के लिए 20,000 रुपये की वार्षिक छात्रवृत्ति और दैनिक जरूरतों के लिए 4,000 रुपये की मासिक वित्तीय सहायता भी शामिल है।
- आयुष्मान कार्ड के माध्यम से स्वास्थ्य बीमा दिया जाएगा, और मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक मदद के लिए संवाद हेल्पलाइन के माध्यम से परामर्श दिया जाएगा।

- अलग-अलग आयु वर्ग के बच्चों की देखभाल के लिए अलग-अलग दिशा-निर्देशों का उल्लेख किया गया है।
- छह साल की उम्र तक, बच्चों को पूरक पोषण, स्कूल पूर्व शिक्षा के लिए आंगनवाड़ी सेवाओं से सहायता प्राप्त होगी।
- 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए किसी भी नजदीकी स्कूल में प्रवेश दिया जाएगा -
  - ♦ सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल/केन्द्रीय विद्यालय (केवी)/निजी स्कूल - एक दिवसीय विद्वान के रूप में।
  - ♦ निजी स्कूलों में ट्यूशन फीस में छूट दी जाएगी।
- इसके अतिरिक्त, यह योजना अनाथ बच्चों को या तो रिश्तेदारों और परिवार की देखरेख में रखने में मदद करेगी,
  - ♦ चाइल्ड केयर संस्थानों (CCI) के साथ, या सैनिक स्कूल, नवोदय विद्यालय, या अन्य आवासीय विद्यालयों में।
- योजना के तहत नामांकन के लिए आवेदन ऑनलाइन पोर्टल - pmcaresforchildren-in - के माध्यम से जमा किए जाने थे
- बाल कल्याण समितियों को प्रत्येक मामले के बारे में तथ्यों को इकट्ठा करने और जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) को लाभार्थी के रूप में बच्चे की सिफारिश करने का काम सौंपा गया है।
- डीएम तब आवेदन को स्वीकार या अस्वीकार करेंगे और यदि स्वीकार किया जाता है, तो संबंधित बैंक खाते खोले जाएंगे।

राष्ट्रीय वायु खेल नीति

नागरिक उड्डयन मंत्री ने राष्ट्रीय वायु खेल नीति 2022 (NASP 2022) का शुभारंभ किया।

- NASP 2022 भारत को 2030 तक शीर्ष खेल राष्ट्रों में से एक बनाने की दृष्टि रखता है।

प्रमुख बिंदु

- हवाई खेल, जैसा कि नाम से पता चलता है, हवा के माध्यम से जुड़े विभिन्न खेल गतिविधियों को शामिल करता है।
- इनमें एयर-रेसिंग, एरोबेटिक्स, एयरो मॉडलिंग, हैंग ग्लाइडिंग, पैराग्लाइडिंग, पैरा मोटरिंग और स्काईडाइविंग आदि जैसे खेल शामिल हैं।
- साहसिक खेलों और विमानन के लिए इसकी संस्कृति बढ़ती जा रही है।
- NASP 2022, इस दिशा में एक कदम है।
- यह नीति भारत में निम्नलिखित हवाई खेलों को कवर करेगी:
  - ♦ एरोबेटिक्स
  - ♦ एयरो मॉडलिंग और मॉडल रॉकेट्री
  - ♦ शौकिया निर्मित और प्रायोगिक विमान
  - ♦ बैलूनिंग
  - ♦ ड्रोन
  - ♦ ग्लाइडिंग और पावर्ड ग्लाइडिंग
  - ♦ हैंग ग्लाइडिंग और पावर्ड हैंग ग्लाइडिंग
  - ♦ पैराशूटिंग (स्काईडाइविंग, बेस जंपिंग और विंग सूट आदि सहित)
  - ♦ पैराग्लाइडिंग और पैरा मोटरिंग (पावर्ड पैराशूट ट्राइक आदि सहित)
  - ♦ संचालित विमान (अल्ट्रा-लाइट, माइक्रो लाइट और लाइट स्पोर्ट्स एयरक्राफ्ट आदि सहित)
  - ♦ रोटरक्राफ्ट (ऑटोगाइरो सहित)

YOUR RIGHTS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- नई नीति के तहत, भारत में हवाई खेलों के लिए चार स्तरीय शासन संरचना होगी, अर्थात:
  - एयर स्पोर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (ASFI) सर्वोच्च शासी निकाय के रूप में।
  - व्यक्तिगत हवाई खेलों के लिए राष्ट्रीय संघ या हवाई खेलों का एक सेट, जैसा उपयुक्त हो
  - क्षेत्रीय (जैसे पश्चिम/दक्षिण/पूर्वोत्तर आदि) या राष्ट्रीय हवाई खेल संघों की राज्य और केंद्र शासित प्रदेश स्तर की इकाइयाँ, जैसा उपयुक्त हो; तथा
  - 0 जिला स्तरीय हवाई खेल संघ, जैसा उपयुक्त हो।
- नीति का उद्देश्य दुनिया भर से हवाई खेल के प्रति उत्साही लोगों को आकर्षित करना है, विशेष रूप से वे जो उन क्षेत्रों में रहते हैं जहां कठोर सर्दियां उन्हें भाग लेने से रोकती हैं।

भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय के लिए चुनाव

भारत के राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद का कार्यकाल 24 जुलाई, 2022 को समाप्त हो रहा है।

- भारत के संविधान के अनुच्छेद 62 के अनुसार, कार्यकाल की समाप्ति से पहले निवर्तमान राष्ट्रपति के पद की रिक्ति को भरने के लिए चुनाव पूरा किया जाना आवश्यक है।

भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय के बारे में

- संघ की कार्यकारिणी में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, मंत्रिपरिषद और भारत के महान्यायवादी होते हैं।
- राष्ट्रपति भारतीय राज्य का मुखिया होता है।
- वह भारत का पहला नागरिक है और राष्ट्र की एकता, अखंडता और एकजुटता के प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

राष्ट्रपति का चुनाव (अनुच्छेद 54)

- राष्ट्रपति का चुनाव सीधे तौर पर लोगों द्वारा नहीं बल्कि निर्वाचक मंडल के सदस्यों द्वारा किया जाता है, जिनमें शामिल हैं:
  - संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य;
  - राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य; तथा
  - केंद्र शासित प्रदेशों दिल्ली और पुडुचेरी की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य।
- इस प्रकार, मनोनीत सदस्य संसद और राज्य विधानसभाएं, राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं लेते हैं।
- जहां विधानसभा भंग हो जाती है, वहां सदस्य राष्ट्रपति चुनाव में मतदान करने के योग्य नहीं रह जाते हैं।
- राष्ट्रपति का चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत (अनुच्छेद 55) के माध्यम से होता है।
- मतदान गुप्त मतदान द्वारा होता है।
- राष्ट्रपति के चुनाव के संबंध में सभी शंकाओं और विवादों की जांच और निर्णय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा किया जाता है जिसका निर्णय अंतिम होता है।
- राष्ट्रपति के रूप में किसी व्यक्ति के चुनाव को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती कि इलेक्टोरल कॉलेज अधूरा था।
- यदि राष्ट्रपति के रूप में किसी व्यक्ति का चुनाव सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शून्य घोषित कर दिया जाता है,
  - उच्चतम न्यायालय की ऐसी घोषणा की तारीख से पहले उसके द्वारा किए गए कार्य अमान्य नहीं हैं और प्रभावी बने रहेंगे।

राष्ट्रपति के रूप में चुनाव के लिए योग्यता

राष्ट्रपति के रूप में चुनाव के लिए पात्र होने के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित योग्यताएं पूरी करनी

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO's ACADEMY

चाहिए:

- वह भारत का नागरिक होना चाहिए।
- उसे 35 वर्ष की आयु पूरी करनी चाहिए थी।
- उसे लोकसभा के सदस्य के रूप में चुनाव के लिए योग्य होना चाहिए।
- उसे केंद्र सरकार या किसी राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकरण या किसी अन्य सार्वजनिक प्राधिकरण के अधीन लाभ का कोई पद धारण नहीं करना चाहिए।

नोट: संघ के वर्तमान अध्यक्ष या उपाध्यक्ष, किसी भी राज्य के राज्यपाल और संघ या किसी राज्य के मंत्री को लाभ का कोई पद धारण करने वाला नहीं माना जाता है और इसलिए वे राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में योग्य हैं।

राष्ट्रपति कार्यालय का कार्यकाल

- राष्ट्रपति अपने पद ग्रहण करने की तारीख से पांच वर्ष की अवधि के लिए पद धारण करता है।
- हालांकि, वह किसी भी समय उपराष्ट्रपति को त्याग पत्र संबोधित करके अपने पद से इस्तीफा दे सकते हैं।
- इसके अलावा, उसे महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा अपना कार्यकाल पूरा होने से पहले पद से हटाया भी जा सकता है।
- राष्ट्रपति अपने उत्तराधिकारी के पदभार ग्रहण करने तक पांच वर्ष की अवधि के बाद भी पद धारण कर सकता है।
- वह उस पद के लिए पुन: निर्वाचन के लिए भी पात्र है।

नोट: संविधान का अनुच्छेद 324 भारत के चुनाव आयोग में भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय के चुनाव के संचालन का अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण निहित करता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

3 पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

संरचनाओं के भूकंप प्रतिरोध में सुधार

शोधकर्ताओं ने कम लागत वाले बकलिंग-प्रतिबंधित ब्रेसिज विकसित किए हैं जो भूकंप से बचने के लिए सुरक्षित निर्माण को बेहतर सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

- इन ब्रेसिज के कई लाभ हैं, जैसे कि सभी स्टील के घटक, ऑनसाइट निर्माण और संयोजन प्रक्रिया, भूकंप के बाद निरीक्षण और आसान प्रतिस्थापन।

प्रमुख बिंदु

- भूकंपीय बल-प्रतिरोध प्रणालियों या कंपन नियंत्रण उपकरणों का उपयोग करके नागरिक संरचनाओं के भूकंप प्रतिरोध में अक्सर सुधार किया जाता है।
- बकलिंग-प्रतिबंधित ब्रेसिज विशेष संरचनात्मक तत्व हैं जो दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करता है।
- IIT दिल्ली के शोधकर्ताओं ने उच्च शक्ति, उत्कृष्ट लचीलापन और बेहतर ऊर्जा अपव्यय क्षमता वाले उपन्यास हाइब्रिड बकलिंग-रेस्ट्रेस ब्रेसिज (HBRBs) का निर्माण किया है।
- भारत के विभिन्न भूकंपीय क्षेत्रों में स्थित इमारतों या पुलों पर अपेक्षित भूकंपीय मांग के आधार पर इन ब्रेसिज को अनुकूलित किया जा सकता है।
- प्रस्तावित प्रौद्योगिकी नए निर्माण कार्यों में प्रभावी है।
- इसमें भूकंपीय रूप से कमी वाले प्रबलित कंक्रीट (आरसी) और स्टील के बने ढांचे के उन्नयन और रेट्रोफिटिंग की भी काफी संभावनाएं हैं।
- इन ब्रेसिज को स्टील और कंक्रीट के पुलों में भी आसानी से अपनाया जा सकता है ताकि भूकंप प्रतिरोध को बढ़ाया जा सके।
- मौजूदा संरचनाओं में इस तकनीक के कार्यान्वयन से समग्र रेट्रोफिटिंग लागत कम हो जाती है और हस्तक्षेप और डाउनटाइम कम हो जाता है।

इमेज में: फुल-स्केल हाइब्रिड बकलिंग-रेस्ट्रेंड ब्रेस।

विश्व मधुमक्खी दिवस

विश्व मधुमक्खी दिवस समारोह पर, केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि सरकार देश में "मीठी क्रांति" लाने के लिए प्रयासरत है।

विश्व मधुमक्खी दिवस के बारे में

- स्लोवेनिया ने प्रस्तावित किया कि संयुक्त राष्ट्र (यूएन) 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस के रूप में घोषित किया जाय।
- 20 दिसंबर 2017 को, संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने

स्लोवेनिया के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी और 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस घोषित किया गया।

नोट: मधुमक्खियां सबसे महत्वपूर्ण परागणकों में से कुछ हैं, जो खाद्य और खाद्य सुरक्षा, टिकाऊ कृषि और जैव विविधता सुनिश्चित करती हैं।

हमें परागणकों की आवश्यकता क्यों है?

- परागकण कई खाद्य फसलों सहित कई पौधों को पुनरुत्पादन की अनुमति देते हैं।
- वास्तव में, हम जो भोजन खाते हैं, जैसे फल और सब्जियां, वह सीधे परागणकों पर निर्भर करता है।
- परागकण न केवल फलों, मेवा और बीजों की प्रचुरता सुनिश्चित करने में मदद करते हैं, बल्कि उनकी विविधता और गुणवत्ता भी सुनिश्चित करते हैं, जो मानव पोषण के लिए महत्वपूर्ण है।
- फूलों वाली पौधों की प्रजातियां केवल तभी बीज पैदा करता है जब पशु परागणकर्ता परागकोषों से अपने फूलों के वर्तिकाग्र तक पराग को स्थानांतरित करते हैं।
- इस सेवा के बिना, पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर काम करने वाली कई प्रजातियां और प्रक्रियाएं खत्म हो जाएंगी।
- परागण इसलिए मानव प्रबंधित और प्राकृतिक स्थलीय पारि. स्थितिक तंत्र दोनों में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
- लगभग 90% जंगली पौधे और 75% प्रमुख वैश्विक फसलें पशु परागण पर निर्भर करती हैं।
- हमारे हर तीन माउथफुल भोजन में से एक मधुमक्खियों जैसे परागणकों पर निर्भर करता है।
- परागण पर निर्भर फसलें उन फसलों की तुलना में पांच गुना अधिक मूल्यवान होती हैं जो परागण पर निर्भर करती हैं।
- परागणकों की विविधता का फसल की पैदावार पर सीधा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- मधुमक्खियां और अन्य परागण करने वाले कीड़े, वास्तव में, दुनिया भर में 2 अरब छोटे किसानों के खाद्य उत्पादन में सुधार करते हैं।

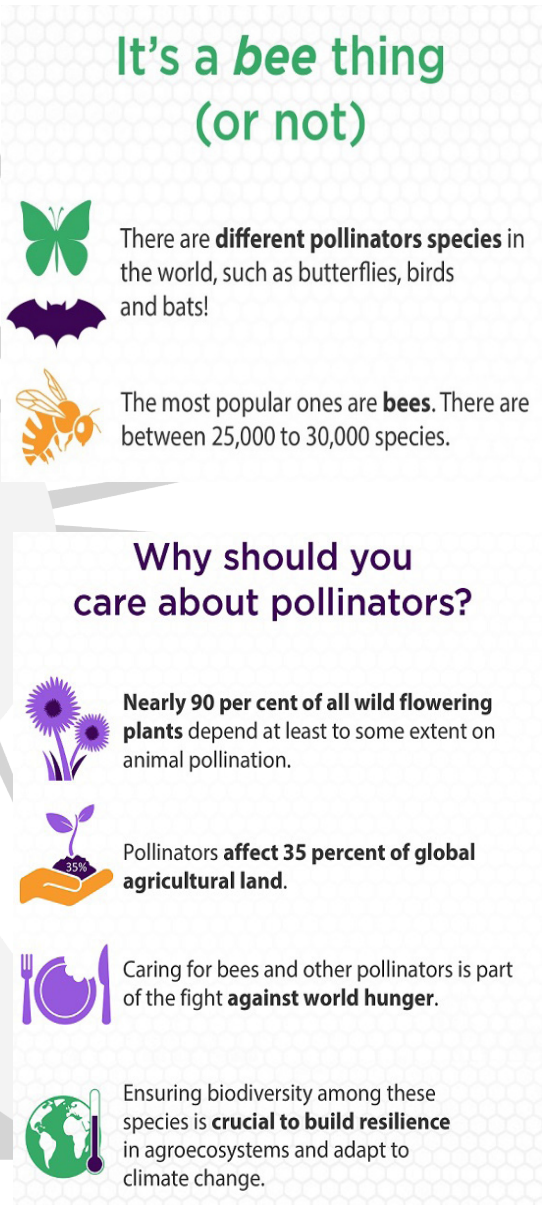

मधुमखियों के बारे में

- सभी कीड़ों की तरह, मधुमक्खी के शरीर को तीन भागों में विभाजित किया जाता है: एक सिर जिसमें दो एंटीना होते हैं, छह पैरों वाला एक वक्ष और एक पेट होता है।
- मधुमक्खी सहित दुनिया भर में 20,000-25000 से अधिक मधुमक्खी प्रजातियां हैं।
- अंटार्कटिका को छोड़कर हर महाद्वीप पर जंगली मधुमक्खी प्रजातियां रहती हैं।
- मधुमक्खियां विशेष रूप से फूलों के पौधों से शर्करायुक्त अमृत और प्रोटीन युक्त पराग पर भोजन करती हैं, जबकि मांसाहारी ततैया जिनसे वे विकसित हुई थीं।
- सामाजिक मधुमक्खियां, जैसे मधुमक्खियां और भौंरा, अक्सर छत्तों में, जमीन के ऊपर या नीचे रहती हैं, जबकि अधिकांश एकान्त मधुमक्खियां जमीन में छत्ता बनाती हैं।
- मधुमक्खियां कई स्थानों पर पाई जा सकती हैं जिनमें वृक्ष,दलदल, शिंगल, रेत के टीले, नरम चट्टानें आदि शामिल हैं।

YOUR STUDIES OUR PRIDE
RAO'S ACADEMY

UN-ESCAP का 78वां आयोग सत्र

एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग (ESCAP) का सत्तर-आठवां सत्र बैंकॉक में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन केंद्र और ऑनलाइन में आयोजित किया गया था।

- यह "एशिया और प्रशांत क्षेत्र में सतत विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक आम एजेंडा" विषय द्वारा निर्देशित है।

प्रमुख बिंदु

- 78वें आयोग के सत्र के लिए विषयगत अध्ययन में महामारी के बाद अधिक समावेशी और स्थायी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के तरीकों का वर्णन किया गया है।
- यह निम्नलिखित पर केन्द्रित वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए एक सामान्य कार्यसूची के लिए तत्वों की पहचान करता है:
  - ♦ लोगों और ग्रह की रक्षा करना,
  - ♦ डिजिटल अवसरों का लाभ उठाना,
  - ♦ व्यापार करना और एक साथ अधिक निवेश करना,
  - ♦ वित्तीय संसाधन जुटाना और
  - ♦ ऋण प्रबंधन।
- ESCAP 2022 में अपनी स्थापना की 75वीं वर्षगांठ भी मनाएगा।

UN-ESCAP के बारे में: पृष्ठभूमि

जब दुनिया द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही से उबरने लगी, तो एशिया और प्रशांत के कई उत्तर-औपनिवेशिक देशों ने विकास की अपनी प्रक्रिया शुरू की।

- क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक मंच के रूप में, एशिया और सुदूर पूर्व के लिए आर्थिक आयोग (ECAFE) शंघाई में स्थापित किया गया था।
- प्राथमिक उद्देश्य एशिया और सुदूर पूर्व में आर्थिक विकास और युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना था।
- जैसे-जैसे समय बीतता गया, ईसीएएफई ने अपनी सदस्यता का विस्तार किया और इस क्षेत्र के निरंतर विकास के लिए महत्वपूर्ण संस्थाओं का गठन किया जैसे:
  - ♦ एशियाई विकास बैंक, एशियाई राजमार्ग नेटवर्क और मेकांग समिति।
- 1976 तक, ECAFE ने अपनी सदस्यता की विविधता और कार्य के बढ़े हुए दायरे को दर्शाने के लिए अपना नाम बदलकर एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग (ESCAP) कर लिया था।
- ESCAP एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सबसे समावेशी अंतरसरकारी मंच है।
- आयोग अपने 53 सदस्य राज्यों और 9 सहयोगी सदस्यों के बीच सतत विकास चुनौतियों के समाधान की खोज में सहयोग को बढ़ावा देता है।
- ईएससीएपी संयुक्त राष्ट्र के पांच क्षेत्रीय आयोगों में से एक है।

RAO'S ACADEMY
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

स्मार्ट सामग्री जो प्रकाश उत्तेजना का जवाब देती है

वैज्ञानिकों ने एक स्मार्ट सामग्री विकसित की है जो प्रकाश को तापीय ऊर्जा में परिवर्तित करके आसानी से प्रकाश उत्तेजना का जवाब देती है।

- यह सॉफ्ट रोबोटिक्स और माइक्रो-इलेक्ट्रोमैकेनिकल सिस्टम (एमईएमएस) उपकरणों में अनुप्रयोगों के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करने में सहायक हो सकता है।

प्रमुख बिंदु

- कई स्मार्ट सामग्रियों ने प्रकृति में बहुतायत में देखे जाने वाले उत्तेजना-प्रतिक्रियात्मक व्यवहार को सफलतापूर्वक दोहराया है जैसे कि वीनस फ्लाईट्रैप, पाइन कोन, आदि।
- लिक्विड क्रिस्टल पॉलीमर नेटवर्क (एलसीएन) ऐसी ही स्मार्ट सामग्री में से एक है।
- उष्मा लगाने पर, एक समान रूप से संरेखित एलसीएन फिल्म एक उत्क्रमणीय 2- या 3-आयामी आकार परिवर्तन से गुजरती है।
- रॉड के आकार के एलसी अणुओं के औसत अभिविन्यास में हेरफेर करके, झुकने, कर्लिंग आदि जैसे विभिन्न आकार विकृतियां प्राप्त की जा सकती हैं।
- हालांकि, पहले से ज्ञात उपकरणों को द्वि-दिशात्मक क्रिया-कलाप-बाह्य ऊर्जा को गति में परिवर्तित करने के लिए फोटो-प्रतिक्रिया फिल्म में अतिरिक्त परतों की आवश्यकता होती है।
- इस समस्या के समाधान के रूप में, सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के शोध कर्ताओं ने स्थानिक रूप से स्प्ले-विकृत (फैला हुआ) एलसीएन फिल्मों का निर्माण किया है।
- यह मोनो-कार्यात्मक और द्वि-कार्यात्मक लिक्विड क्रिस्टल मेसोजेन (एक रासायनिक यौगिक) के मिश्रण को क्रॉसलिंक करके किया गया है।
- इस नए विकास ने द्वि-दिशात्मक क्रियान्वयन को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त परतों की आवश्यकता को हटा दिया है।

ग्रेटर पन्ना लैंडस्केप का विमोचन

ग्रेटर पन्ना लैंडस्केप के लिए एकीकृत लैंडस्केप प्रबंधन योजना की अंतिम रिपोर्ट जारी की गई।

- भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) द्वारा केन-बेतवा लिंक परियोजना के संबंध में यह एकीकृत परिदृश्य प्रबंधन योजना तैयार की गई है।

प्रमुख बिंदु

- एकीकृत भू-दृश्य प्रबंधन योजना बाघों, गिद्धों और घड़ियाल जैसी प्रमुख प्रजातियों के बेहतर आवास संरक्षण और प्रबंधन का प्रावधान करती है।
- यह जैव विविधता संरक्षण और मानव कल्याण, विशेष रूप से वन आश्रित समुदायों के लिए परिदृश्य को समग्र रूप से समेकित करने में मदद करेगा।
- इससे परिदृश्य में बाघों को वहन करने की क्षमता में वृद्धि होने की उम्मीद है।
    - ♦ मप्र में नौरादेही वन्यजीव अभयारण्य और दुर्गावती वन्यजीव अभयारण्य और यूपी में रानीपुर वन्यजीव अभयारण्य के साथ संपर्क को मजबूत करके।

पन्ना टाइगर रिजर्व के बारे में

मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में विंध्य पर्वत श्रृंखला में स्थित पन्ना टाइगर रिजर्व पन्ना और छतरपुर जिलों में फैला हुआ है।

- पन्ना भारत का 22वां टाइगर रिजर्व और मध्य प्रदेश

में पांचवां टाइगर रिजर्व है।

- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान 1981 में बनाया गया था।
- इसे 1994 में भारत सरकार द्वारा एक प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था।
- इस अभ्यारण्य में उत्तरी मध्य प्रदेश का अंतिम शेष बाघ निवास स्थान है।
- केन नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।
- रिजर्व भी दो हजार साल पुराने शैल चित्रों से युक्त है।

पर्यावरण के लिए जीवन शैली- जीवन आंदोलन

भारत के प्रधान मंत्री ने हाल ही में 'पर्यावरण के लिए जीवन शैली - जीवन आंदोलन' नामक एक वैश्विक पहल शुरू की।

- इसका उद्देश्य मानव-केंद्रित, सामूहिक प्रयासों और मजबूत कार्रवाई का उपयोग करके हमारे ग्रह के सामने आने वाली चुनौती को हल करना है जो आगे सतत विकास करता है।

जीवन आंदोलन के बारे में

- यह लॉन्च शिक्षाविदों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों आदि से विचारों और सुझावों को आमंत्रित करते हुए 'पेपर्स के लिए लाइफ ग्लोबल कॉल' शुरू करेगा।
  - ♦ उद्देश्य: दुनिया भर में व्यक्तियों, समुदायों और संगठनों को पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली अपनाने के लिए प्रभावित करना और उन्हें राजी करना।
- यह वैश्विक पहल पिछले साल CoP-26 में भारत के प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित की गई थी।
- LiFE का दृष्टिकोण एक ऐसी जीवन शैली जीना है जो हमारे ग्रह के अनुरूप हो और इसे नुकसान न पहुंचाए।
  - ♦ एक अवधारणा के रूप में रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल आंदोलन का एक अभिन्न अंग होगा।
  - ♦ सर्कुलर इकोनॉमी का विचार और इसका कार्यान्वयन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- लाइफ मूवमेंट का उद्देश्य सामूहिक कार्रवाई की शक्ति का उपयोग करना और दुनिया भर में व्यक्तियों को उनके दैनिक जीवन में सरल जलवायु-अनुकूल कार्य करने के लिए प्रेरित करना है।
- मिशन की योजना व्यक्तियों का एक वैश्विक नेटवर्क बनाने और उसका पोषण करने की है, जिसका नाम 'प्रो-प्लैनेट पीपल' (P3) है।
  - ♦ पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को अपनाने और बढ़ावा देने के लिए उनकी साझा प्रतिबद्धता होगी।
- P3 समुदाय के माध्यम से, मिशन एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना चाहता है जो पर्यावरण के अनुकूल व्यवहारों को सुदृढ़ और सक्षम बनाएगा ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें।

'मिट्टी बचाओ' कार्यक्रम

मिट्टी बचाओ सद्गुरु और ईशा फाउंडेशन द्वारा शुरू किया गया एक वैश्विक आंदोलन है, जो मृदा स्वास्थ्य के लिए खड़े होने के लिए दुनिया भर के लोगों को एक साथ लाकर मिट्टी के संकट को दूर करने के लिए है।

- विश्व पर्यावरण दिवस पर, प्रधान मंत्री ने 'मिट्टी बचाओ आंदोलन' पर एक कार्यक्रम में भी भाग लिया।

मिट्टी बचाओ क्या है?

- मिट्टी बचाओ - सभी में मिट्टी और ग्रह के प्रति जागरूक दृष्टिकोण का आह्वान करने के लिए एक वैश्विक आंदोलन।
- आंदोलन का एक मुख्य उद्देश्य दुनिया भर की सरकारों को यह दिखाना है कि उनके नागरिक ऐसी नीतियां चाहते हैं जो पारिस्थितिकी और मिट्टी को पुनर्जीवित करें।
- लक्ष्य: सभी राष्ट्रों के नेताओं को खेती योग्य मिट्टी में जैविक सामग्री को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय नीतियों और कार्यों को स्थापित करने के लिए कहना।

RAO'S ACADEMY

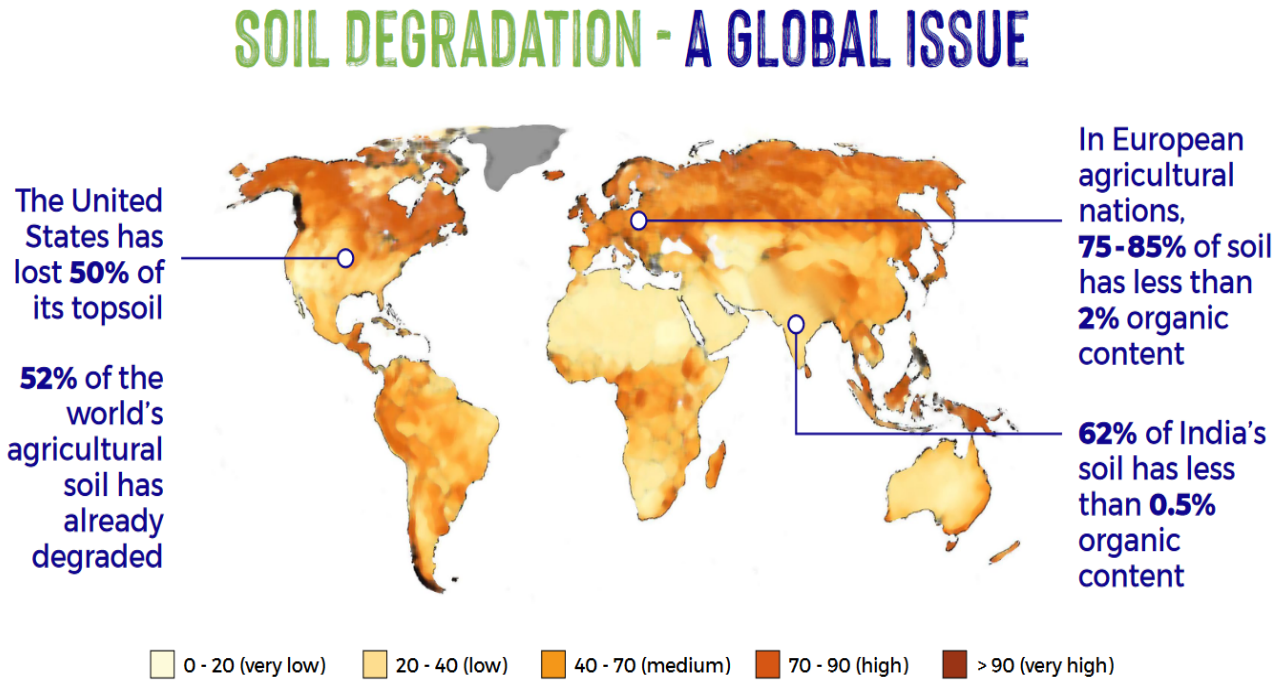

मिट्टी क्यों बचाएं- संकट क्या है?

- कृषि, वनों की कटाई, और अन्य कारकों ने खतरनाक दरों पर ऊपरी मिट्टी को खराब कर दिया है और नष्ट कर दिया है।
- विश्व स्तर पर, 52% कृषि भूमि पहले ही खराब हो चुकी है।
- खाद्य संकट:
  - ♦ 20 वर्षों में 9.3 अरब लोगों के लिए 40% कम भोजन का उत्पादन होने की उम्मीद है।
  - ♦ खराब मिट्टी खराब पोषण मूल्य की ओर ले जाती है।
  - ♦ आज के फलों और सब्जियों में पहले से ही 90% कम पोषक तत्व होते हैं।
  - ♦ 2 अरब लोग पोषक तत्वों की कमी से पीड़ित हैं, जिससे कई तरह की बीमारियां हो रही हैं।
- पानी की कमी:
  - ♦ नष्ट हुई मिट्टी जल प्रवाह को अवशोषित और नियंत्रित नहीं कर सकती है।
  - ♦ जल प्रतिधारण की कमी से पानी की कमी, सूखा और बाढ़ आती है।
  - ♦ कार्बनिक पदार्थ अपने वजन का 90% तक पानी में धारण कर सकते हैं और समय के साथ इसे धीरे-धीरे छोड़ सकते हैं।
  - ♦ सूखाग्रस्त क्षेत्रों में यह एक बड़ी मदद है।
- जैव विविधता के नुकसान:
  - ♦ वैज्ञानिकों का कहना है कि निवास स्थान के नुकसान के कारण हर साल जीवों की लगभग 27,000 प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं।
  - ♦ संकट उस बिंदु पर पहुंच गया है जहां 80% कीट बायोमास चला गया है।
  - ♦ जैव विविधता का नुकसान मिट्टी के आवास को और बाधित करता है और मिट्टी के पुनर्जनन को रोकता है।

YOUR SUCCESS OUR RAO'S ACADEMY

- जलवायु परिवर्तन:
  - ♦ मिट्टी में संग्रहित कार्बन जीवित पौधों की तुलना में 3x और वातावरण में 2x होता है, जिसका अर्थ है कि कार्बन पृथक्करण के लिए मिट्टी महत्वपूर्ण है।
  - ♦ यदि विश्व की मिट्टी को पुनर्जीवित नहीं किया जाता है, तो वे जलवायु परिवर्तन में योगदान देने वाले वातावरण में 850 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ सकते हैं।
  - ♦ यह पिछले 30 वर्षों में संयुक्त रूप से मानवता के सभी उत्सर्जन से अधिक है।
- आजीविका का नुकसान:
  - ♦ हजारों किसान मिट्टी में कमी के कारण आत्महत्या कर रहे हैं।
  - ♦ वैश्विक स्तर पर भूमि क्षरण से 74 प्रतिशत गरीब सीधे तौर पर प्रभावित हैं।
  - ♦ यह अनुमान लगाया गया है कि मिट्टी के विलुप्त होने से दुनिया को हर साल 10.6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान हो रहा है।
- संघर्ष और प्रवासन:
  - ♦ जनसंख्या वृद्धि, और भोजन और पानी की कमी के कारण 2050 तक 1 बिलियन से अधिक अन्य क्षेत्रों और देशों में पलायन कर सकते हैं।
  - ♦ 1990 के बाद से अफ्रीका में 90% से अधिक प्रमुख युद्धों और संघर्षों में भूमि के मुद्दों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- विश्व स्तर पर हर साल लगभग 24 अरब टन उपजाऊ मिट्टी और 27,000 जैव-प्रजातियां नष्ट हो जाती हैं।

क्या है हल?

- मिट्टी में कम से कम 3-6% जैविक सामग्री वापस लाएं।
- मिट्टी में जैविक सामग्री को बढ़ाने के तरीके:
  - ♦ कृषि भूमि को वनस्पति और छाया के नीचे लाएं
  - ♦ पौधों के कूड़े और जानवरों के कचरे के माध्यम से मिट्टी को समृद्ध करें
- अगर मिट्टी में कार्बन सिर्फ 0.4% बढ़ा दिया जाए तो खाद्यान्न उत्पादन में हर साल 1.3% की वृद्धि हो सकती है।

नोट: संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के 17 कुल में से 12 एसडीजी को सेव सॉयल एड्रेस।

मिट्टी के बारे में

- मिट्टी अब तक पृथ्वी का सबसे जैविक रूप से विविध हिस्सा है।
- मिट्टी खनिजों, मृत और जीवित जीवों (जैविक सामग्री), हवा और पानी का मिश्रण है।
- एक चम्मच मिट्टी में पृथ्वी पर जितने मनुष्य रहते हैं, उससे अधिक जीव हो सकते हैं।
- जीव एक दूसरे के साथ और पौधों और छोटे जानवरों के साथ बातचीत करते हैं जो जैविक गतिविधि का एक जाल बनाते हैं जो पोषक चक्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस 2022

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय दिवस है।

- इसका नेतृत्व संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा किया जाता है और 1973 से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

प्रमुख बिंदु

- विश्व पर्यावरण दिवस सकारात्मक बदलाव को प्रेरित करने के लिए एक वैश्विक मंच है।
- प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी एक अलग देश द्वारा की जाती है जहां आधिकारिक समारोह होते हैं।
  - ♦ 2022 के लिए मेजबान देश स्वीडन है।
- थीम: "ओनली वन अर्थ" है, जिसमें "प्रकृति के साथ सद्भाव में रहना" पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- 2022 वैश्विक पर्यावरण समुदाय के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है।
  - ♦ यह मानव पर्यावरण पर 1972 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCHE) के 50 साल पूरे हो गए हैं।
  - ♦ 1972 के सम्मेलन को पर्यावरण पर पहली अंतर्राष्ट्रीय बैठक के रूप में देखा जाता है।

1972 स्टॉकहोम सम्मेलन के बारे में

स्टॉकहोम में पर्यावरण पर 1972 का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन पर्यावरण को एक प्रमुख मुद्दा बनाने वाला पहला विश्व सम्मेलन था।

- स्टॉकहोम सम्मेलन के प्रमुख परिणामों में से एक संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) का निर्माण था।
- प्रतिभागियों ने पर्यावरण के सुदृढ़ प्रबंधन के लिए सिद्धांतों की एक श्रृंखला को अपनाया।

जलवायु परिवर्तन प्रबंधन कार्यक्रम में अग्रणी

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स (NIUA) और वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट (WRI) इंडिया ने संयुक्त रूप से 'लीडर इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट' (LCCM) की घोषणा की, जो एक अभ्यास-आधारित शिक्षण कार्यक्रम है।

- इसका उद्देश्य भारत में सभी क्षेत्रों और भौगोलिक क्षेत्रों में जलवायु कार्रवाई का नेतृत्व करने के लिए शहरी पेशेवरों के बीच क्षमता निर्माण करना है।

प्रमुख बिंदु

- एलसीसीएम में मध्यम से कनिष्ठ स्तर के सरकारी अधिकारियों और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं सहित 5,000 पेशेवरों की क्षमता है।
- ये पेशेवर भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने के लिए एक समन्वित प्रयास की दिशा में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन समाधानों को चौंपियन बनाने के लिए तैयार होंगे।
- एलसीसीएम शहरी अभ्यासकर्ताओं के लिए एक मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम है जो प्रभावी जलवायु कार्रवाई देने के लिए कौशल बढ़ाने और खुद को तैयार करने की तलाश में है।
- कार्यक्रम के चार चरण हैं:

पहला चरण - एक ऑनलाइन शिक्षण मॉड्यूल है जिसे आठ सप्ताह में पूरा किया जा सकता है;
द्वितीय चरण - इसमें चार से छह दिनों तक चलने वाले आमने-सामने के सत्र शामिल हैं;
तृतीय चरण - तीसरे चरण में प्रतिभागियों को छह से आठ महीने में एक परियोजना को पूरा करने और एक्सपोजर यात्राओं में भाग लेने के लिए अनिवार्य किया गया है; तथा
चतुर्थ चरण - अंतिम चरण में नेटवर्किंग और अभ्यास का एक समुदाय स्थापित करना शामिल है।

- ऑनलाइन सीखने की मेजबानी एनआईयूए की क्षमता निर्माण शाखा, नेशनल अर्बन लर्निंग प्लेटफॉर्म (एनयूएलपी) पर की जाएगी।

NIUA के बारे में

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स (एनआईयूए) शहरी नियोजन और विकास पर भारत का प्रमुख राष्ट्रीय थिंक टैंक है।

- एनआईयूए तेजी से शहरीकरण करने वाले भारत की चुनौतियों का समाधान करने के लिए अभिनव समाधान प्रदान करना चाहता है।
- इसका उद्देश्य भविष्य के अधिक समावेशी और टिकाऊ शहरों के लिए मार्ग प्रशस्त करना भी है।
- एनआईयूए को 1976 में शहरी विकास योजनाओं में भारत सरकार का समर्थन और मार्गदर्शन करने के लिए एक शीर्ष निकाय के रूप में नियुक्त किया गया था।
- एनआईयूए का कार्य 6 प्रमुख विषयगत सरोकारों को संबोधित करता है:
  - ♦ शहरीकरण और आर्थिक विकास
  - ♦ शहरी शासन (डिजिटल) और नगरपालिका वित्त
  - ♦ शहरी अवसंरचना और निर्मित पर्यावरण
  - ♦ पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और लचीलापन
  - ♦ सामाजिक विकास (समावेशी और टिकाऊ शहर)

यंकी कुटी घाटी में हिमनदों की प्रगति

उत्तराखंड से सबसे पुराना ज्ञात हिमनदों का विकास मध्य हिमालय की यांक्ति कुटी घाटी में देखा गया था।

- ग्लेशियर राज्य के चरम पूर्वी भाग में स्थित है।

प्रमुख बिंदु

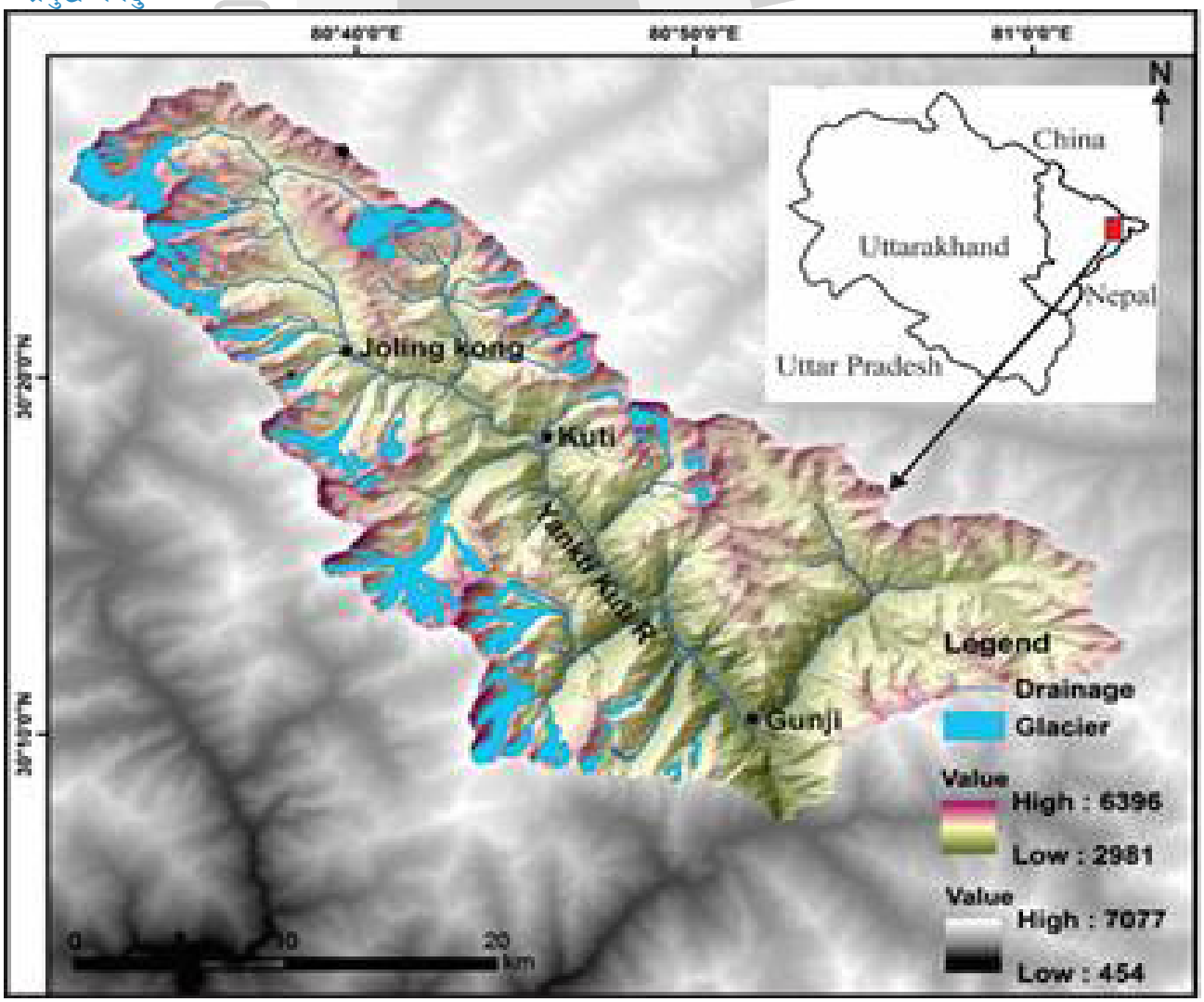

- भू-आकृति विज्ञान मानचित्रण के माध्यम से, वैज्ञानिक पिछले 52,000 वर्षों (एमआईएस 3) के दौरान हुई हिमनदी की चार घटनाओं की पहचान करने में सक्षम थे।
- ये घटनाएं जो हजारों वर्षों में हिमनदों की प्रगति दर्शाती हैं, जलवायु परिवर्तनशीलता के साथ तालमेल बिठाती हैं।
- वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ जियोलॉजिकल साइंसेज के वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि हिमालय में नमी से वंचित घाटियां वर्षा के प्रति संवेदनशील रूप से प्रतिक्रिया करती हैं।
- अध्ययन ने एमआईएस 3 अवधि के दौरान हुई घटनाओं की एक मजबूत समयरेखा प्रदान की।
- इससे पहले, कई शोधकर्ताओं ने विभिन्न आधुनिक डेटिंग विधियों को नियोजित करके मध्य हिमालय में हिमनदी की प्रकृति के बारे में जानकारी प्रदान की है।
- हालांकि, मध्य हिमालय में हिमनदों की भू-आकृतियों के लिए कालानुक्रमिक डेटा अभी भी इन क्षेत्रों की दुर्गमता के कारण सीमित है।
- इस प्रकार भारतीय ग्रीष्म मानसून और ग्लेशियर के आगे बढ़ने और इस क्षेत्र में पछुआ हवाओं के बीच संबंध स्पष्ट नहीं है।
- इस अध्ययन के निष्कर्ष हिमालय में जलवायु और ग्लेशियर की गतिशीलता के बीच संबंधों की समझ को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।
- इससे मौसम विज्ञानियों को यह पता लगाने में भी मदद मिलेगी कि भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून और पछुआ हवाएं मध्य हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियरों के विकास को कैसे प्रभावित कर सकती हैं।

ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस

हमारे महत्वाकांक्षी अक्षय ऊर्जा कार्यक्रमों में और तेजी लाने के लिए, ग्रीन ओपन एक्सेस नियम, 2022 अधिसूचित किए गए हैं।

- इन नियमों को अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्रों से ऊर्जा सहित हरित ऊर्जा के उत्पादन, खरीद और खपत को बढ़ावा देने के लिए अधिसूचित किया गया है।

प्रमुख बिंदु

- अधिसूचित नियम हरित ऊर्जा की खुली पहुंच के लिए सरलीकृत प्रक्रिया को सक्षम करते हैं।
- यह ग्रीन ओए, यूनिफॉर्म बैंकिंग, वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं द्वारा आरई बिजली की स्वैच्छिक खरीद, ओए शुल्कों की प्रयोज्यता आदि के तेजी से अनुमोदन को सक्षम करेगा।
- वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं को स्वेच्छा से हरित ऊर्जा खरीदने की अनुमति है।
- कैप्टिव उपभोक्ता बिना किसी न्यूनतम सीमा के ग्रीन ओपन एक्सेस के तहत बिजली ले सकते हैं।
- डिस्कॉम उपभोक्ता उन्हें हरित बिजली की आपूर्ति की मांग कर सकते हैं।

नियमों की मुख्य विशेषताएं

- किसी भी उपभोक्ता को ग्रीन ओपन एक्सेस की अनुमति है।
- हरित ऊर्जा के लिए ओपन एक्सेस लेनदेन की सीमा 1 मेगावाट से घटाकर 100 किलोवाट कर दी गई है।
- यह छोटे उपभोक्ताओं को भी ओपन एक्सेस के माध्यम से अक्षय ऊर्जा खरीदने में सक्षम बनाएगा।
- ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस उपभोक्ताओं पर लगाए जाने वाले ओपन एक्सेस शुल्क पर निश्चितता प्रदान करें।
    - ♦ क्रॉस-सब्सिडी सरचार्ज बढ़ाने के साथ-साथ अतिरिक्त सरचार्ज को हटाने पर कैप।

यह न केवल उपभोक्ताओं को हरित होने के लिए प्रोत्साहित करेगा बल्कि उन मुद्दों को भी संबोधित करेगा जिन्होंने भारत में खुली पहुंच के विकास में बाधा उत्पन्न की है।

- ओपन एक्सेस आवेदन की अनुमोदन प्रक्रिया में पारदर्शिता।
    - ♦ 15 दिनों में स्वीकृति प्रदान की जानी चाहिए अन्यथा इसे तकनीकी आवश्यकताओं की पूर्ति के अधीन अनुमोदित माना जाएगा।
    - ♦ यह एक राष्ट्रीय पोर्टल के माध्यम से होगा।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- **हरित टैरिफ का निर्धारण:** हरित ऊर्जा के लिए टैरिफ उपयुक्त आयोग द्वारा अलग से निर्धारित किया जाएगा।
- नियम समय पर अनुमोदन सहित ओपन एक्सेस प्रदान करने के लिए समग्र अनुमोदन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने में मदद करेंगे।
- वितरण लाइसेंसधारी के साथ अधिशेष हरित ऊर्जा की बैंकिंग अनिवार्य।
- हरित ऊर्जा का उपभोग करने वाले उपभोक्ताओं को ग्रीन सर्टिफिकेट दिया जाएगा।
- यदि हरित ऊर्जा का उपयोग हरित हाइड्रोजन और हरित अमोनिया के उत्पादन के लिए किया जाता है तो क्रॉस सब्सिडी अधिभार और अतिरिक्त अधिभार लागू नहीं होगा।

हरित ऊर्जा क्या है?

- हरित ऊर्जा किसी भी प्रकार की ऊर्जा है जो प्राकृतिक संसाधनों, जैसे सूर्य के प्रकाश, हवा या पानी से उत्पन्न होती है।
- यह अक्सर अक्षय ऊर्जा स्रोतों से आता है, हालांकि अक्षय और हरित ऊर्जा के बीच कुछ अंतर हैं।
- इन ऊर्जा संसाधनों की कुंजी यह है कि वे वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ने जैसे कारकों के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।
- जबकि अधिकांश हरित ऊर्जा स्रोत भी नवीकरणीय हैं, सभी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को पूरी तरह से हरा नहीं माना जाता है।
- उदाहरण के लिए, जलविद्युत को लें।
- जबकि जलविद्युत – तेजी से बहने वाले पानी से उत्पन्न ऊर्जा – नवीकरणीय है।
  - ♦ कुछ लोगों का तर्क है कि पानी से भारी मात्रा में बिजली पैदा करने की प्रक्रिया वास्तव में हरी नहीं होती है।
  - ♦ यह बड़े जल-बांधों के निर्माण की प्रक्रिया में शामिल औद्योगीकरण और वनों की कटाई के कारण है।

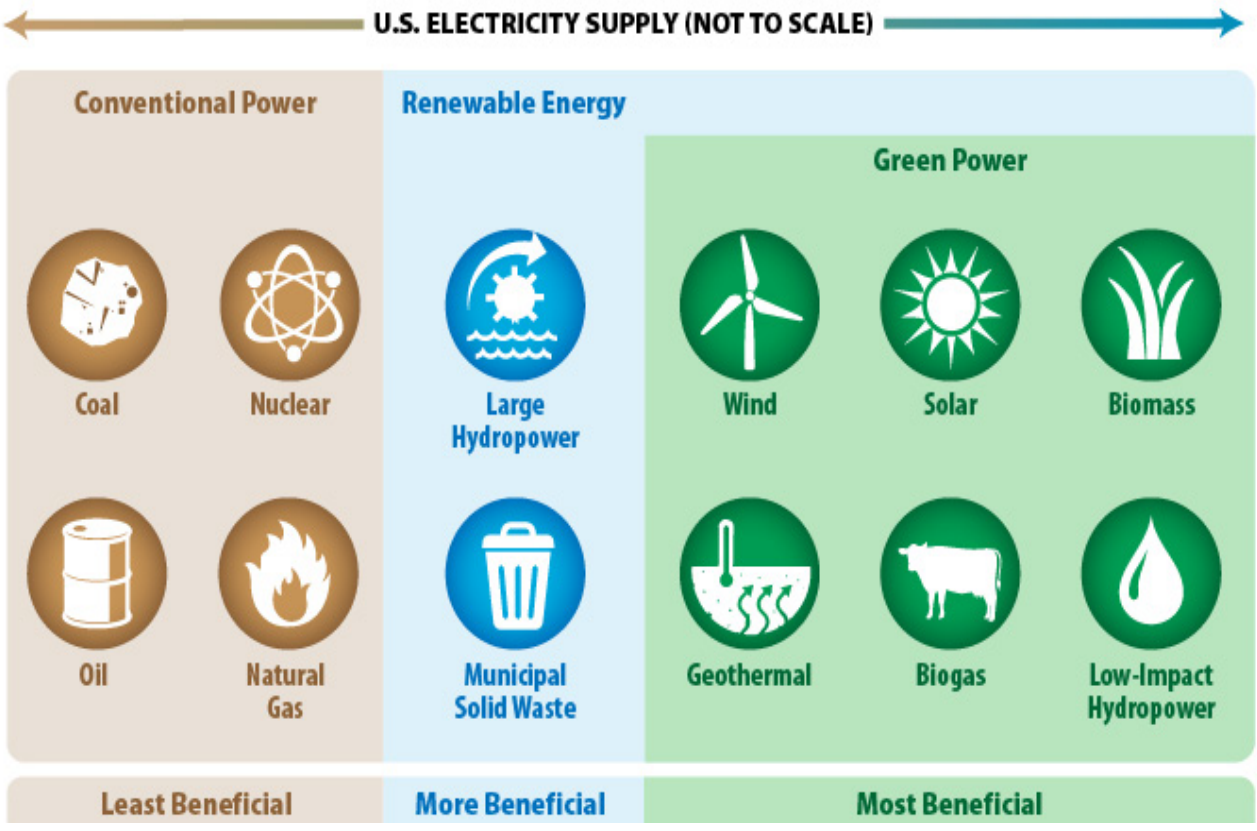

4 अर्थव्यवस्था

राष्ट्रीय स्टार्टअप सलाहकार परिषद (एनएसएसी) की चौथी बैठक

वाणिज्य और उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण और कपड़ा मंत्री ने राष्ट्रीय स्टार्टअप सलाहकार परिषद (एनएसएसी) की चौथी बैठक की अध्यक्षता की।

- मंत्री ने एनएसएसी से वीसी फंडिंग, क्षमता निर्माण और स्टार्टअप को बढ़ावा देने वाली सरकारी योजनाओं पर जागरूकता पैदा करने के लिए टियर-2 और टियर-3 शहरों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया।

राष्ट्रीय स्टार्टअप सलाहकार परिषद (NSAC) के बारे में

- उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) ने राष्ट्रीय स्टार्टअप सलाहकार परिषद का गठन किया था।
- इसका उद्देश्य सरकार को देश में नवाचार और स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए आवश्यक उपायों पर सलाह देना है।
- **लक्ष्य:** सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना।
- **अध्यक्ष:** वाणिज्य और उद्योग मंत्री।
- **परिषद के संयोजक:** संयुक्त सचिव, उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग।
- यह अपनी तरह का एक अनूठा समूह है जिसमें नीति निर्माण प्रक्रिया स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के सभी प्रमुख हितधारकों के बीच सहयोग के हिस्से के रूप में संचालित होती है।
- पदेन सदस्यों के अलावा, परिषद में गैर-सरकारी सदस्य होते हैं, जो विभिन्न हितधारकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे:
  - ♦ सफल स्टार्टअप के संस्थापक,
  - ♦ दिग्गज जिन्होंने भारत में कंपनियों को विकसित और बढ़ाया है,
  - ♦ निवेशकों के हितों का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम व्यक्ति,
  - ♦ स्टार्टअप्स में इनक्यूबेटर और एक्सेलेरेटर,
  - ♦ स्टार्टअप्स के हितधारकों के संघों के प्रतिनिधि और उद्योग संघों के प्रतिनिधि।

GeM, CSC और इंडिया पोस्ट ने MoU पर हस्ताक्षर किए

सरकारी ई-मार्केटप्लेस [GeM], सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड [CSC-SPV] और डाक विभाग ने समझौता ज्ञापन [MoU] पर हस्ताक्षर किए।

- MoU सार्वजनिक खरीद में अंतिम मील के सरकारी खरीदारों, विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं की हिमायत, आउटरीच, लामबंदी और क्षमता निर्माण के लिए है।

प्रमुख बिंदु

- मई 2022 में GeM और इंडिया पोस्ट के सफल एकीकरण के बाद समझौता ज्ञापन की कल्पना की गई थी।
- इस एकीकरण के साथ, अब सभी अंतिम छोर तक के सरकारी खरीदारों, विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं के लिए भारत के सुदूर हिस्सों में स्थित इंडिया पोस्ट सुविधाओं के माध्यम से GeM पर रसद सेवाओं और सुविधाओं का लाभ उठाना संभव हो गया है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- लगभग 4.5 लाख से अधिक सामान्य सेवा केंद्र [CSC] और लगभग पूरे भारत में 1.5 लाख से अधिक भारतीय डाकघरों को प्रशिक्षित किया जाएगा।
- वे GeM पोर्टल पर अंतिम छोर तक के सरकारी खरीदारों, विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं के लिए सहायता प्रदान करेंगे।

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) क्या है?

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) विभिन्न सरकारी विभागों/संगठनों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा आवश्यक सामान्य उपयोग की वस्तुओं और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद की सुविधा के लिए वन स्टॉप पोर्टल है।

- GeM का उद्देश्य सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता, दक्षता और गति को बढ़ाना है।
- पोर्टल 9 अगस्त 2016 को वाणिज्य और उद्योग मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था।
- यह सरकारी उपयोगकर्ताओं को उनके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करने के लिए ई-बोली, रिवर्स ई-नीलामी और मांग एकत्रीकरण के उपकरण प्रदान करता है।
- सरकारी उपयोगकर्ताओं द्वारा GeM के माध्यम से खरीदारी को वित्त मंत्रालय द्वारा अधिकृत और अनिवार्य बना दिया गया है।
- GeM पूरी तरह से पेपरलेस, कैशलेस और सिस्टम संचालित ई-मार्केट प्लेस है जो न्यूनतम मानव इंटरफेस के साथ सामान्य उपयोग की वस्तुओं और सेवाओं की खरीद को सक्षम बनाता है।

भारी उद्योग मंत्रालय ने NRDC के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारी उद्योग मंत्रालय (MoHI) ने राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम (NRDC) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

- यह भारतीय पूंजीगत सामान क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए योजना के सुचारू कार्यान्वयन के लिए विभिन्न गतिविधियों को शुरू करने के लिए है।

प्रमुख बिंदु

- समझौता ज्ञापन के अनुसार, NRDC निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन करेगा:
  - ♦ योजना का मूल्यांकन और समीक्षा,
  - ♦ बौद्धिक संपदा अधिकारों का प्रबंधन और
  - ♦ एमएचआई की ओर से पूंजीगत सामान योजना चरण- I और II, आदि के तहत विकसित उत्पादों के लिए व्यावसायीकरण समर्थन।

पूंजीगत सामान योजना के बारे में

- भारी उद्योग मंत्रालय (MoHI) ने भारतीय पूंजीगत सामान क्षेत्र- चरण- II में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने की योजना को अधिसूचित किया था।
- यह सामान्य प्रौद्योगिकी विकास और सेवाओं के बुनियादी ढांचे को सहायता प्रदान करने के लिए था।
- इस योजना का वित्तीय परिव्यय 975 करोड़ रुपये के बजटीय समर्थन और 232 करोड़ रुपये के उद्योग योगदान के साथ 1207 करोड़ है।
- योजना के चरण-II का उद्देश्य चरण-I पायलट योजना द्वारा सृजित प्रभाव का विस्तार और विस्तार करना है।
  - ♦ एक मजबूत और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी पूंजीगत सामान क्षेत्र बनाने के उद्देश्य से जो विनिर्माण क्षेत्र में कम से कम 25% का योगदान देता है।
- कैपिटल गुड्स सेक्टर चरण-II के संवर्धन के लिए योजना के तहत छह घटक हैं, अर्थात:
  - ♦ प्रौद्योगिकी नवाचार पोर्टल के माध्यम से प्रौद्योगिकियों की पहचान;
  - ♦ उत्कृष्टता के चार नए उन्नत केंद्रों की स्थापना और मौजूदा उत्कृष्टता केंद्रों का संवर्धन;

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- ♦ पूंजीगत सामान क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देना-कौशल स्तर 6 और उससे ऊपर के लिए योग्यता पैकेज बनाना;
- ♦ चार सामान्य इंजीनियरिंग सुविधा केंद्रों (सीईएफसी) की स्थापना और मौजूदा सीईएफसी का संवर्धन;
- ♦ मौजूदा परीक्षण और प्रमाणन केंद्रों का विस्तार;
- ♦ प्रौद्योगिकी विकास के लिए दस उद्योग त्वरक की स्थापना।

चीनी का निर्यात और इथेनॉल उत्पादन

चीनी सीजन 2017-18 में निर्यात की तुलना में चालू चीनी सीजन 2021-22 में चीनी का निर्यात निर्यात का 15 गुना है।

- प्रमुख आयातक देश इंडोनेशिया, अफगानिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात, मलेशिया और अफ्रीकी देश हैं।

प्रमुख बिंदु

- चीनी मौसम 2017-18, 2018-19 और 2019-20 में लगभग 6.2 लाख मीट्रिक टन, 38 लाख मीट्रिक टन और 59.60 लाख मीट्रिक टन चीनी का निर्यात किया गया था।
- चीनी सीजन 2020-21 में 60 लाख मीट्रिक टन के लक्ष्य के मुकाबले लगभग 70 लाख मीट्रिक टन का निर्यात किया गया है।
- साथ ही, अतिरिक्त चीनी की समस्या के समाधान के लिए एक स्थायी समाधान खोजने के लिए, सरकार चीनी मिलों को अतिरिक्त गन्ने को इथेनॉल में बदलने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।
- सरकार ने 2022 तक पेट्रोल के साथ ईंधन ग्रेड इथेनॉल के 10% मिश्रण और 2025 तक 20% मिश्रण का लक्ष्य निर्धारित किया है।
- वर्ष 2014 तक, शीरा आधारित भट्टियों की इथेनॉल आसवन क्षमता केवल 215 करोड़ लीटर थी।
- हालांकि, पिछले 8 वर्षों में नीतिगत परिवर्तनों के कारण, शीरा-आधारित भट्टियों की क्षमता को बढ़ाकर 569 करोड़ लीटर कर दिया गया है।
- अनाज आधारित भट्टियों की क्षमता जो 2014 में 206 करोड़ लीटर थी, वह बढ़कर 298 करोड़ लीटर हो गई है।
- इस प्रकार, कुल इथेनॉल उत्पादन क्षमता 8 वर्षों में 421 करोड़ लीटर से बढ़कर 867 करोड़ लीटर हो गई है।
- तेल विपणन कंपनियों (तेल विपणन कंपनियों) को इथेनॉल की आपूर्ति केवल 38 करोड़ लीटर थी, जिसमें इथेनॉल आपूर्ति वर्ष (ईएसवाई) 2013-14 में केवल 1.53% का सम्मिश्रण स्तर था।
- ईंधन ग्रेड इथेनॉल का उत्पादन और तेल विपणन कंपनियों को इसकी आपूर्ति 2013-14 से 2020-21 तक 8 गुना बढ़ गई है।
- एथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2020-21 (दिसंबर-नवंबर) में तेल विपणन कंपनियों को लगभग 302.30 करोड़ लीटर एथेनॉल की आपूर्ति की गई है।
- इससे 8.1% सम्मिश्रण स्तर प्राप्त हुआ है, जो ऐतिहासिक रूप से उच्चतम है।
- वर्तमान मैल्-2021-22 में, 08.05.2022 तक पेट्रोल के साथ लगभग 186 करोड़ लीटर इथेनॉल मिश्रित किया गया है, जिससे 9.90% मिश्रण प्राप्त हुआ है।
- चीनी क्षेत्र को समर्थन देने की दृष्टि से, सरकार ने बी-हैवी शीरा, गन्ने का रस, चीनी की चाशनी और चीनी से इथेनॉल के उत्पादन की भी अनुमति दी है।
- सरकार अतिरिक्त गन्ने को इथेनॉल की ओर मोड़ने के लिए मिलों को प्रोत्साहित करने के लिए इथेनॉल सीजन के लिए सी-हैवी और बी-हैवी शीरा और गन्ने के रस/चीनी/चीनी सिरप से प्राप्त इथेनॉल का लाभकारी एक्स-मिल मूल्य तय कर रही है।
- चीनी सीजन 2021-22 में, लगभग 35 एलएमटी अतिरिक्त चीनी को इथेनॉल में बदलने की संभावना है।

RAO'S ACADEMY

- 2025 तक, 60 एलएमटी से अधिक अतिरिक्त चीनी को इथेनॉल में बदलने का लक्ष्य रखा गया है।
  - ♦ इससे चीनी के उच्च भंडार की समस्या का समाधान होगा, मिलों की तरलता में सुधार होगा जिससे किसानों के गन्ना बकाया का समय पर भुगतान करने में मदद मिलेगी।
- ईंधन ग्रेड इथेनॉल का उत्पादन बढ़ाने के लिए, सरकार FCI के पास उपलब्ध मक्का और चावल से इथेनॉल का उत्पादन करने के लिए डिस्टिलरीज को भी प्रोत्साहित कर रहा है।
- सरकार ने मक्का और एफसीआई चावल से इथेनॉल का लाभकारी मूल्य तय किया है।
- सामान्य चीनी मौसम (अक्टूबर-सितंबर) में, चीनी का उत्पादन लगभग 340-350 लाख मीट्रिक टन (LMT) है, जबकि घरेलू खपत 270-280 LMT है।
  - ♦ इसके परिणामस्वरूप मिलों के पास चीनी का भारी कैरी ओवर स्टॉक होता है।
  - ♦ देश में चीनी की अधिक उपलब्धता के कारण, चीनी की एक्स-मिल कीमतें कम बनी हुई हैं और यहां तक कि लगभग रु. 24-26 / किग्रा।
  - ♦ यह चीनी के उत्पादन की लागत से भी कम था जिसके परिणामस्वरूप चीनी मिलों को नकद हानि हुई।
  - ♦ 70 लाख मीट्रिक टन का यह अतिरिक्त स्टॉक भी धन की रुकावट का कारण बनता है और चीनी मिलों की तरलता को प्रभावित करता है जिसके परिणामस्वरूप गन्ना मूल्य बकाया जमा होता है।

चीनी की कम कीमतों के कारण चीनी मिलों को होने वाले नकद नुकसान को रोकने के लिए, सरकार ने जून, 2018 में चीनी के न्यूनतम बिक्री मूल्य (MSP) की अवधारणा पेश की थी।

20% इथेनॉल सम्मिश्रण से देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- इससे मक्का और धान के किसानों को लाभ होगा, अतिरिक्त अनाज की समस्या का समाधान होगा; लगभग 165 लाख टन अनाज का उपयोग किया जाएगा।
- 60 लाख टन अतिरिक्त चीनी के उपयोग से अतिरिक्त चीनी की समस्या का समाधान होगा।
  - ♦ इससे चीनी की कम बिक्री पर रोक लगेगी, चीनी मिलों की तरलता में सुधार होगा और किसानों के गन्ना बकाया का समय पर भुगतान सुनिश्चित होगा।
- यह लगभग रुपये के रूप में नए निवेश के अवसर लाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में नई भट्टियां स्थापित करने के लिए 41,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा और इसके परिणामस्वरूप गांवों में रोजगार सृजन होगा।
- हवा की गुणवत्ता में सुधार करेगा, कार्बन मोनोऑक्साइड उत्सर्जन को 30-50% और हाइड्रोकार्बन को 20% तक कम करेगा।
- रुपये से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। कच्चे तेल के आयात बिल के कारण 40,000 करोड़ की अदायगी करनी पड़ती है।
- यह आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को भी कम करेगा जिससे पेट्रोलियम क्षेत्र में आत्मानिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

गन्ना के बारे में

गन्ना (Saccharum officinarum) परिवार Gramineae (Poaceae) भारत में व्यापक रूप से उगाई जाने वाली फसल है।

- यह राष्ट्रीय खजाने में महत्वपूर्ण योगदान देने के अलावा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दस लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है।
- विश्व के गन्ना उत्पादक देश भूमध्य रेखा के 36.7° उत्तर और 31.0° दक्षिण अक्षांश के बीच उष्णकटिबंधीय से उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों तक फैले हुए हैं।
- मोटे तौर पर भारत में गन्ने की खेती के दो अलग-अलग कृषि-जलवायु क्षेत्र हैं, जैसे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय।
- देश के कुल गन्ना क्षेत्र और उत्पादन में उष्णकटिबंधीय क्षेत्र का हिस्सा क्रमशः 45% और 55% है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में गन्ने के कुल क्षेत्रफल और उत्पादन का क्रमशः लगभग 55% और 45% हिस्सा है।
- उष्णकटिबंधीय गन्ना क्षेत्र में निम्न शामिल हैं:
  - ♦ महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, गोवा, पांडिचेरी और केरल।
- उपोष्णकटिबंधीय गन्नृ क्षेत्र:
  - ♦ यू.पी., बिहार, हरियाणा और पंजाब इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
- आवश्यक जलवायु :
  - ♦ विभिन्न महत्वपूर्ण चरण अंकुरण, जुताई, प्रारंभिक वृद्धि, सक्रिय वृद्धि और लम्बाई हैं।
  - ♦ तना कलमों के अंकुरण (अंकुरण) के लिए इष्टतम तापमान 32° से 38°c है।
  - ♦ यह 25° से नीचे धीमा होकर 30°-34° के बीच पठार पर पहुंच जाता है।
  - ♦ 38° से ऊपर का तापमान प्रकाश संश्लेषण की दर को कम करता है और श्वसन को बढ़ाता है।
  - ♦ हालांकि, पकने के लिए 12° से 14° के बीच अपेक्षाकृत कम तापमान वांछनीय है।
- गन्ना उत्पादकता और रस की गुणवत्ता विभिन्न फसल-विकास उप-अवधि के दौरान प्रचलित मौसम की स्थिति से गहराई से प्रभावित होती है।
- चीनी की रिकवरी सबसे अधिक तब होती है जब:-
  - ♦ कम नमी के साथ मौसम शुष्क है;
  - ♦ तेज धूप घंटे,
  - ♦ व्यापक दैनिक विविधताओं के साथ ठंडी रातें और पकने की अवधि के दौरान बहुत कम वर्षा।
  - ♦ ये स्थितियां उच्च शर्करा संचय के पक्ष में हैं।
- बहुत अधिक तापमान या बहुत कम तापमान जैसी जलवायु परिस्थितियाँ रस की गुणवत्ता को खराब करती हैं और इस प्रकार चीनी की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं।
- अनुकूल जलवायु जैसे गर्म और आर्द्र जलवायु कीटों और रोगों के पक्ष में है, जो इसके रस की गुणवत्ता और उपज और अंत में सुक्रोज सामग्री को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं।

फोटो में: प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्य

भारत में एफडीआई प्रवाह

भारत ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में 83.57 बिलियन अमरीकी डालर का अब तक का सबसे अधिक वार्षिक एफडीआई प्रवाह दर्ज किया है।

- 2014-2015 में, भारत में FDI का प्रवाह 45.15 USD बिलियन था।

प्रमुख बिंदु

- विनिर्माण क्षेत्र में विदेशी निवेश के लिए भारत तेजी से एक पसंदीदा देश के रूप में उभर रहा है।
- पिछले वित्त वर्ष 2020-21 (12.09 बिलियन अमरीकी डालर) की तुलना में वित्त वर्ष 2021-22 (यूएसडी 21.34 बिलियन) में विनिर्माण क्षेत्रों में एफडीआई इक्विटी प्रवाह में 76% की वृद्धि हुई है।
- यह ध्यान दिया जा सकता है कि कोविड के बाद एफडीआई प्रवाह में 23% की वृद्धि हुई है (मार्च, 2020 से मार्च 2022: यूएसडी 171.84 बिलियन)।
  - ♦ भारत में पूर्व-कोविड (फरवरी, 2018 से फरवरी, 2020: 141.10 बिलियन अमरीकी डालर) की रिपोर्ट की गई एफडीआई अंतर्वाह की तुलना में।
- एफडीआई इक्विटी प्रवाह के शीर्ष निवेशक देशों के मामले में, 'सिंगापुर' 27% के साथ शीर्ष पर है, इसके बाद यू.एस.ए. (18%) और मॉरीशस (16%) है।
- 'कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर' लगभग 25% हिस्सेदारी के साथ एफडीआई इक्विटी के शीर्ष प्राप्तकर्ता क्षेत्र के रूप में उभरा है।
  - ♦ इसके बाद क्रमशः सेवा क्षेत्र (12%) और ऑटोमोबाइल उद्योग (12%) का स्थान है।
- कुल एफडीआई इक्विटी में 38% हिस्सेदारी के साथ कर्नाटक शीर्ष प्राप्तकर्ता राज्य है, इसके बाद महाराष्ट्र (26%) और दिल्ली (14%) का स्थान है।

S. No.	Financial Year	Amount of FDI inflows (in USD billion)
1.	2018-19	62.00
2.	2019-20	74.39
3.	2020-21	81.97
4.	2021-22	83.57

भारतीय गैस एक्सचेंज पर ओएनजीसी

ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (ONGC) भारतीय गैस एक्सचेंज पर घरेलू गैस का व्यापार करने वाली भारत की पहली एक्सप्लोरेशन एंड प्रोडक्शन (E-P) कंपनी बन गई है।

- गैस का कारोबार ओएनजीसी कृष्णा गोदावरी 98/2 ब्लॉक से होता है।

प्रमुख बिंदु

- 2000-21 में गैस मूल्य निर्धारण पारिस्थितिकी तंत्र में विनियंत्रण के बाद, ओएनजीसी ने लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार किया है।
- ओएनजीसी द्वारा गैस एक्सचेंज के माध्यम से बेची जाने वाली मात्रा को धीरे-धीरे बढ़ाया जाएगा।

RAO'S ACADEMY

इंडियन गैस एक्सचेंज लिमिटेड के बारे में

- इंडियन गैस एक्सचेंज लिमिटेड (आईजीएक्स) भारत का पहला स्वचालित राष्ट्रीय स्तर का गैस एक्सचेंज है।
- इसका उद्देश्य एक कुशल और मजबूत गैस बाजार को बढ़ावा देना और बनाए रखना और देश में गैस व्यापार को बढ़ावा देना है।
- एक्सचेंज में निर्दिष्ट भौतिक केंद्रों पर स्पॉट और फॉरवर्ड अनुबंधों में व्यापार करने के लिए कई खरीदारों और विक्रेताओं की सुविधा है।
- IGX एक तटस्थ और पारदर्शी बाजार स्थान है जहां खरीदार और विक्रेता दोनों गैस को अंतर्निहित वस्तु के रूप में व्यापार करते हैं।
- IGX ने 15 जून 2020 को गैस ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के रूप में परिचालन शुरू किया और 10 दिसंबर 2020 से गैस एक्सचेंज के रूप में काम कर रहा है।
- एक्सचेंज पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) के नियामक ढांचे के तहत काम करता है।

विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (FIF) ने पूरे किए 5 साल

विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफआईपीबी) को समाप्त करने के बाद से विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (एफआईएफपी) के माध्यम से 853 एफडीआई प्रस्तावों का निपटारा किया गया है।

- एफआईपीबी को समाप्त करने के प्रस्ताव को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 24 मई, 2017 को अपनी बैठक में मंजूरी दी थी।

प्रमुख बिंदु

- FIFP के गठन के बाद से, न केवल थ्रूप में वृद्धि हुई है, बल्कि भारत में थ्रूप लाने वाले देशों की संख्या भी बढ़ी है।
- वित्त वर्ष 2014-15 में, भारत में एफडीआई अंतर्वाह मात्र 45.15 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जो कि कोविड-19 महामारी के बावजूद वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान बढ़कर 83.57 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया है।
- वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान 101 देशों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सूचना मिली है।

FIFP के बारे में

- विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (एफआईएफपी) निवेशकों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सुविधा के लिए भारत सरकार का नया ऑनलाइन एकल बिंदु इंटरफेस है।
- यह पोर्टल उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रशासित किया जा रहा है।
- यह पोर्टल अनुमोदन मार्ग के माध्यम से आवेदनों की एकल खिड़की निकासी की सुविधा प्रदान करना जारी रखेगा।
- एफआईएफ पोर्टल पर दाखिल प्रस्तावों को संबंधित प्रशासनिक मंत्रालय को अग्रेषित किया जाता है।
- एफडीआई आवेदन प्राप्त होने पर, संबंधित प्रशासनिक मंत्रालय/विभाग मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अनुसार आवेदन पर कार्रवाई करेगा।
- उन्हें टिप्पणियों के लिए विदेश मंत्रालय (MEA) और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को एक साथ चिह्नित भी किया जाता है।
    - ♦ गृह मंत्रालय (एमएचए) को भी आवश्यक सुरक्षा मंजूरी के लिए, जहां कहीं भी एफडीआई नीति/एफईएम विनियमों के अनुसार आवश्यक हो।

अनिवार्य पंजीकरण के तहत लाया गया कागज का आयात

प्रमुख कागज उत्पादों की आयात नीति को संशोधित कर 'मुफ्त' से 'कागज आयात निगरानी प्रणाली के तहत अनिवार्य पंजीकरण के अधीन मुफ्त' कर दिया गया है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
KAO'S ACADEMY

- इस आशय की एक अधिसूचना विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा जारी की गई है।

प्रमुख बिंदु

- यह आदेश कागज के उत्पादों की एक श्रृंखला पर लागू होगा, जैसे न्यूजप्रिंट, हस्तनिर्मित कागज, वॉलपेपर बेस, टिशू पेपर, लिफाफा, टॉयलेट पेपर, आदि।
- कागज उत्पादों जैसे करेंसी पेपर, बैंक बांड और चेक पेपर, सिक्योरिटी प्रिंटिंग पेपर आदि को इस नीति परिवर्तन से बाहर रखा गया है।
- घरेलू कागज उद्योग घरेलू बाजार में कागज उत्पादों की डंपिंग के मुद्दों को उठाता रहा है।
  - ♦ यह डंपिंग अंडर-इनवॉइसिंग, गलत डिक्लेरेशन द्वारा निषिद्ध माल के प्रवेश, अन्य देशों के माध्यम से माल को फिर से रूट करने आदि के माध्यम से किया गया है।
- इस श्रेणी में मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर को बढ़ावा देने में भी यह कदम एक लंबा सफर तय करेगा।

सूक्ष्म और लघु उद्यम क्लस्टर विकास कार्यक्रम के नए दिशानिर्देश

सरकार ने सूक्ष्म और लघु उद्यम क्लस्टर विकास कार्यक्रम (एमएसई-सीडीपी) के नए दिशानिर्देशों को मंजूरी दी है।

- नए दिशानिर्देशों को 15वें वित्त आयोग चक्र (2021-22 से 2025-26) के दौरान लागू किया जाएगा।

प्रमुख बिंदु

इस योजना का उद्देश्य निम्नलिखित हस्तक्षेप करके सूक्ष्म और लघु उद्यमों की प्रतिस्पर्धात्मकता और उत्पादकता को बढ़ाना है:
सामान्य सुविधा केंद्र (CFC)

- केंद्र सरकार का अनुदान परियोजना की लागत के 70% तक 5.00 करोड़ रुपये से 10.00 करोड़ रुपये तक सीमित रहेगा।
  - ♦ परियोजना की लागत का 60% रु. 10.00 करोड़ से रु. 30.00 करोड़ रु. है।
- पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों, द्वीप क्षेत्रों, आकांक्षी जिलों के मामले में, सरकारी अनुदान परियोजना की लागत का 80% 5.00 करोड़ रुपये से रु. 10.00 करोड़।
  - ♦ परियोजना की लागत का 70% रु. 10 करोड़ से रु. 30 करोड़ तक।
- 30 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजना लागत वाली सीएफसी की परियोजना पर भी विचार किया जाएगा।
  - ♦ लेकिन सरकारी सहायता की गणना अधिकतम पात्र परियोजना लागत 30 करोड़ रुपये को ध्यान में रखकर की जाएगी।

बुनियादी ढांचे का विकास

- नई औद्योगिक संपदा की स्थापना के लिए केंद्र सरकार का अनुदान 5 करोड़ रुपये से 15 करोड़ रुपये तक परियोजना की लागत के 60% तक सीमित रहेगा।
- मौजूदा औद्योगिक संपदा के उन्नयन के लिए अनुदान 5 करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये तक परियोजना की लागत का 50% होगा।
- पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों, द्वीप क्षेत्रों, आकांक्षी जिलों के मामले में, नए औद्योगिक एस्टेट की स्थापना के लिए 5 करोड़ रुपये से 15 करोड़ रुपये तक परियोजना की लागत का 70% अनुदान दिया जाएगा।
  - ♦ और मौजूदा औद्योगिक संपदा के उन्नयन के लिए परियोजना लागत का 60% 5 करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये तक।
- 10 करोड़/15 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजना लागत वाली आईडी के लिए परियोजना पर भी विचार किया जा सकता है।
  - ♦ लेकिन सरकारी सहायता की गणना अधिकतम पात्र परियोजना लागत 10 करोड़/15 करोड़ रुपये को ध्यान में रखकर की जाएगी।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

NMDC का अब तक का सर्वश्रेष्ठ वार्षिक वित्तीय प्रदर्शन

इस्पात मंत्रालय के तहत भारत के खनन प्रमुख राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (छडक्ब) ने अपने इतिहास में अब तक की सबसे मजबूत वृद्धि दर्ज की है।

- ऐसा करते हुए, कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष के 34.15 मिलियन टन के उत्पादन की तुलना में 24% की वृद्धि दर्ज की।

प्रमुख बिंदु

- छडक्ब ने वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान 42.19 मिलियन टन का उत्पादन किया और 40.56 मिलियन टन लौह अयस्क की बिक्री की।
- यह कंपनी के इतिहास में अब तक की सबसे मजबूत वृद्धि थी।
- 42 मिलियन टन के मील के पत्थर को पार करते हुए, देश के सबसे बड़े लौह अयस्क उत्पादक ने भी अब तक के सर्वश्रेष्ठ वार्षिक वित्तीय परिणाम दिए।
- वित्त वर्ष 2022 में, इसने पिछले वर्ष के 15,370 करोड़ रुपये के मुकाबले 25,882 करोड़ रुपये का कारोबार दर्ज किया, जो 68% अधिक है।

	Q4		Annual	
	2020-21	2021-22	2020-21	2021-22
Iron Ore Production (MnT)	12.31	13.86	34.15	42.19
Iron Ore Sales (MnT)	11.09	12.29	33.25	40.56
Turnover (Rs. In Crore)	6,848	6,702	15,370	25,882
Profit Before Tax (Rs. In Crore)	4,269	2,880	8,902	12,981
Profit After Tax (Rs. In Crore)	2,838	1,815	6,253	9,398
Dividend (Rs.)	-		7.76	14.74

वित्त वर्ष 2021-22 में भारत का कपड़ा निर्यात अब तक का सबसे अधिक

भारत ने वित्त वर्ष 2021-22 में हस्तशिल्प सहित कपड़ा और परिधान (टी एंड ए) में यूएस + 44.4 बिलियन का अब तक का सबसे अधिक निर्यात किया।

- यह वित्त वर्ष 2020-21 और वित्त वर्ष 2019-20 में संबंधित आंकड़ों की तुलना में क्रमशः 41% और 26% की पर्याप्त वृद्धि थी।

प्रमुख बिंदु

- संयुक्त राज्य अमेरिका 27% हिस्सेदारी के लिए शीर्ष निर्यात गंतव्य था, इसके बाद यूरोपीय संघ (18%), बांग्लादेश (12%) और संयुक्त अरब अमीरात (6%) का स्थान है।
- उत्पाद श्रेणियों के संदर्भ में, सूती वस्त्रों का निर्यात 39% हिस्सेदारी के साथ 17.2 अरब अमेरिकी डॉलर था।
- रेडी-मेड गारमेंट्स का निर्यात 16 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जिसमें 36% की हिस्सेदारी 31% की वृद्धि दर्शाती है।
- मानव निर्मित वस्त्र निर्यात 14% हिस्सेदारी के साथ 6.3 अरब अमेरिकी डॉलर था जो 51% की वृद्धि दर्शाता है।
- हस्तशिल्प का निर्यात 2.1 अरब अमेरिकी डॉलर था जिसमें 5% हिस्सेदारी 22% की वृद्धि दर्ज की गई थी।

नोटः सभी विकास प्रतिशत की तुलना पिछले वर्ष यानी 2020-21 से की गई है।

स्रोतः pib.gov.in

RAO'S ACADEMY

गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस के जनादेश का विस्तार

प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने GeM पर खरीदारों के रूप में सहकारी समितियों द्वारा खरीद की अनुमति देने के लिए GeM के जनादेश के विस्तार को मंजूरी दे दी है।

- जीईएम ने अब तक एमएसएमई और अन्य उद्यमों से सरकारी विभागों, मंत्रालयों और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों (पीएसयू) द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खरीद की अनुमति दी है।

प्रमुख बिंदु

- इससे सहकारी समितियों में पारदर्शिता आएगी, उन्हें GeM बाजार से लाभ उठाने में मदद मिलेगी।
- वर्तमान में, प्लेटफॉर्म सभी सरकारी खरीदारों द्वारा खरीद के लिए खुला है, अर्थात,
  - ♦ केंद्रीय और राज्य के मंत्रालय, विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम, स्वायत्त संस्थान, स्थानीय निकाय आदि।
- मौजूदा शासनादेश के अनुसार, जीईएम निजी क्षेत्र के खरीदारों द्वारा उपयोग के लिए उपलब्ध नहीं है।
- आपूर्तिकर्ता (विक्रेता) सभी वर्गों से हो सकते हैं: सरकारी या निजी।
- इस पहल से 8.54 लाख से अधिक पंजीकृत सहकारी समितियां और उनके 27 करोड़ सदस्य लाभान्वित होंगे।
- सहकारी समितियों को जेम पर खरीदारों के रूप में पंजीकरण करने की अनुमति देने से सहकारी समितियों को एक खुली और पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से प्रतिस्पर्धी मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
- सहकारिता मंत्रालय जीईएम प्लेटफॉर्म का उपयोग करने के लिए सहकारी समितियों को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक सलाह जारी करेगा।
- रोल-आउट की समग्र गति और तंत्र का निर्णय सहकारिता मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।
- मील के पत्थर और लक्ष्य तिथियों को सहकारिता मंत्रालय और GeM (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय) के बीच परस्पर सरेखित किया जाएगा।
- इससे सहकारी समितियों के लिए समग्र रूप से "व्यवसाय करने में आसानी" में वृद्धि होने की भी उम्मीद है।

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस के बारे में

GeM
Government
e Marketplace
Procurement Reimagined

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) विभिन्न सरकारी विभागों/संगठनों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा आवश्यक सामान्य उपयोग की वस्तुओं और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद की सुविधा के लिए वन स्टॉप पोर्टल है।

- GeM का उद्देश्य सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता, दक्षता और गति को बढ़ाना है।
- गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस की उत्पत्ति जनवरी 2016 में प्रधान मंत्री को की गई सचिवों के दो समूहों की सिफारिशों के कारण हुई है।
- राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग (इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय) के तकनीकी सहयोग से डीजीएसएंडडी ने जीईएम पोर्टल विकसित किया है।
- पोर्टल 9 अगस्त 2016 को वाणिज्य और उद्योग मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था।

नोट: डीजीएसएंडडी आपूर्ति और निपटान महानिदेशालय है।

मर्चेंट चौंबर ऑफ उत्तर प्रदेश का 90वां वर्ष समारोह

भारत के राष्ट्रपति ने कानपुर में मर्चेंट चौंबर ऑफ उत्तर प्रदेश के 90वें वर्ष समारोह में भाग लिया।

- यह संगठन व्यापार और उद्योग और नीति निर्माताओं के बीच आपसी समन्वय के लिए एक मंच प्रदान करता रहा है।

RAO'S ACADEMY

मर्चेंट चौंबर ऑफ उत्तर प्रदेश के बारे में

Welcome to Merchants Chamber of Uttar Pradesh

A Long Saga in Service of Trade & Industries

उत्तर प्रदेश का मर्चेंट चौंबर भारत के सबसे पुराने उद्योग और वाणिज्य संगठनों में से एक है और उत्तरी भारत में पहला है।

- तत्कालीन संयुक्त प्रांत आगरा और अवध के भारतीय औद्योगिक और व्यापारिक समुदाय के प्रमुख लाला कमलापत सिंघानिया ने नवंबर 1932 में इसकी स्थापना की थी।
- इसके पीछे का उद्देश्य ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में उद्योगों और वाणिज्य में स्वदेशी आंदोलन के संदेश को फैलाना और व्यवहार में लाना था।
- चौंबर उद्योग, व्यापार और उद्यमिता को बढ़ावा देने में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

सहकारी बैंक ऋण प्रवाह

भारतीय रिजर्व बैंक ने सहकारी क्षेत्र के लिए तीन बेहद महत्वपूर्ण नीतिगत फैसलों की घोषणा की है।

- इन उपायों से सहकारी बैंकों के माध्यम से ऋण प्रवाह को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

प्रमुख बिंदु

- सबसे पहले, शहरी सहकारी बैंकों के लिए व्यक्तिगत आवास ऋण सीमा को दोगुना कर दिया गया है।
- इस निर्णय के साथ, टियर 1 शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए व्यक्तिगत आवास ऋण की सीमा अब 30 लाख से बढ़ाकर 60 लाख कर दी गई है,
  - ♦ टियर 2 यूसीबी के लिए 70 लाख से 1.40 करोड़ और
  - ♦ ग्रामीण सहकारी बैंकों (RCB) के लिए यह सीमा क्रमशः 20 लाख और 30 लाख से बढ़ाकर 50 लाख और 75 लाख कर दी गई है।
- एक अन्य बड़े फैसले में, ग्रामीण सहकारी बैंकों (आरसीबी) को वाणिज्यिक रियल एस्टेट आवासीय आवास क्षेत्र को उधार देने की अनुमति दी गई है,

इससे हमारे ग्रामीण सहकारी बैंकों का दायरा बढ़ेगा और लोगों को किफायती घर उपलब्ध कराने के संकल्प को भी गति मिलेगी।

- तीसरे बड़े फैसले में अब शहरी सहकारी बैंकों को अपने ग्राहकों को कमर्शियल बैंकों की तरह डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा मुहैया कराने की इजाजत दी गई है.
  - ♦ इस निर्णय से सहकारी बैंकों को अब प्रतिस्पर्धी बैंकिंग क्षेत्र में समान अवसर मिलेगा।

भारत में शहरी सहकारी बैंकों का संक्षिप्त इतिहास

- शहरी सहकारी बैंक (यूसीबी) शब्द, हालांकि औपचारिक रूप से परिभाषित नहीं है, शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक सहकारी बैंकों को संदर्भित करता है।
- 1996 तक इन बैंकों को केवल गैर-कृषि प्रयोजनों के लिए धन उधार देने की अनुमति थी। यह भेद आज नहीं है।
- ये बैंक परंपरागत रूप से समुदायों, इलाकों के कार्यस्थल समूहों के आसपास केंद्रित थे।
- वे अनिवार्य रूप से छोटे कर्जदारों और व्यवसायों को उधार देते थे।

RAO'S ACADEMY

- आज, उनके संचालन का दायरा काफी व्यापक हो गया है।
- भारत में पहली ज्ञात पारस्परिक सहायता समिति संभवतः 1889 में पूर्ववर्ती रियासत बड़ौदा में आयोजित "अन्योन्या सहकारी मंडली" थी।
- सहकारी साख समिति अधिनियम, 1904 के अधिनियमन ने तथापि, आंदोलन को वास्तविक गति प्रदान की।
- पहली शहरी सहकारी ऋण समिति का पंजीकरण तत्कालीन मद्रास प्रांत के कांजीवरम (कांजीवरम) में अक्टूबर, 1904 में किया गया था।
- गैर-ऋण समितियों के संगठन को सक्षम करने के लिए इसे व्यापक आधार देने के उद्देश्य से सहकारी ऋण समिति अधिनियम, 1904 को 1912 में संशोधित किया गया था।
- उनके प्रदर्शन की समीक्षा करने और उन्हें मजबूत करने के उपाय सुझाने के लिए 1915 की मैकलागन समिति को नियुक्त किया गया था।
- समिति की सिफारिशों ने शहरी सहकारी ऋण आंदोलन को अपने आप में स्थापित करने में काफी मदद की।
- 1919 में भारत सरकार अधिनियम ने भारत सरकार से "सहयोग" के विषय को प्रांतीय सरकारों को स्थानांतरित कर दिया।
- शहरी सहकारी बैंकों का पहला अध्ययन आरबीआई द्वारा वर्ष 1958-59 में किया गया था।
- 1961 में प्रकाशित रिपोर्ट ने शहरी सहकारी बैंकों के व्यापक और वित्तीय रूप से सुदृढ़ ढांचे को स्वीकार किया।
- 1963 में, वर्दे समिति ने सिफारिश की कि ऐसे बैंकों को 1 लाख या उससे अधिक की आबादी वाले सभी शहरी केंद्रों में आयोजित किया जाना चाहिए।

नियंत्रण का द्वैत

हालांकि, शहरी सहकारी बैंकों की व्यावसायिकता के बारे में चिंताओं ने इस विचार को जन्म दिया कि उन्हें बेहतर विनियमित किया जाना चाहिए।

- चुकता शेयर पूंजी और 1 लाख रुपये के भंडार वाले बड़े सहकारी बैंकों को बैंकिंग विनियमन अधिनियम 1949 के दायरे में लाया गया।
- यह 1 मार्च, 1966 से और रिजर्व बैंक की निगरानी के दायरे में आया था।
- इसने इन बैंकों पर नियंत्रण के द्वैत के युग की शुरुआत को चिह्नित किया।
- बैंकिंग संबंधी कार्य (अर्थात लाइसेंसिंग, संचालन का क्षेत्र, ब्याज दरें आदि) आरबीआई द्वारा शासित किए जाने थे और
  - ♦ संबंधित राज्य अधिनियमों के प्रावधानों के अनुसार राज्य सरकारों द्वारा शासित पंजीकरण, प्रबंधन, लेखा परीक्षा और परिसमापन आदि।
- 1968 में, यूसीबीएस को जमा बीमा के लाभ दिए गए।
- पिछले कुछ वर्षों में, प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों ने संभाले जाने वाले कारोबार की संख्या, आकार और मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है।

सहकारी बैंकों से संबंधित अन्य डेटा

- 31 मई, 2021 की स्थिति के अनुसार, 1,531 शहरी सहकारी बैंक (यूसीबी) और 97,006 ग्रामीण सहकारी बैंक हैं।
  - ♦ बाद में सभी सहकारी समितियों की कुल संपत्ति के आकार का 65% एक साथ मिला।
- अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की तुलना में सहकारी क्षेत्र की संपत्ति का आकार केवल 10% के आसपास था।
- कुल कृषि ऋण में ग्रामीण सहकारी ऋण का हिस्सा पिछले कुछ वर्षों में काफी कम हो गया है, जो 1992-93 में 64 प्रतिशत से बढ़कर 2019-20 में 11.3% हो गया है।

OUR SUCCESS YOUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) डैशबोर्ड

भारत सरकार के डिजिटल इंडिया फ्लैगशिप कार्यक्रम के अनुरूप, PMMSY MIS (प्रबंधन सूचना प्रणाली) डैशबोर्ड को हाल ही में लॉन्च किया गया था।

प्रमुख बिंदु

- विभिन्न स्थानों और घटकों के साथ पीएमएमएसवाई योजना के व्यापक दायरे को ध्यान में रखते हुए, एक मंच पर सूचना एकत्र करने के लिए एक प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) स्थापित करना अनिवार्य है।
- PMMSY MIS डैशबोर्ड का लक्ष्य है:
  i. सभी भाग लेने वाले राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में PMMSY योजना की गतिविधियों और उनकी प्रगति की प्रभावी निगरानी
  ii. सूचित निर्णय लेने के लिए सूचना का रणनीतिक उपयोग करना।

पीएमएमएसवाई के बारे में

देश में मछली किसानों और मछुआरों की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से सितंबर 2020 में प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) शुरू की गई थी।

- इसे प्रबंधन और आधुनिकीकरण के साथ-साथ मछली उत्पादन और उत्पादकता में महत्वपूर्ण अंतराल को दूर करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा को कुल अनुमानित निवेश रु. 20,050 करोड़ रुपये का केंद्रीय हिस्सा शामिल है। 9407 करोड़।
  - ♦ राज्य का हिस्सा 4880 करोड़ रुपये का है और लाभार्थियों का योगदान रुपये का है। 5763 करोड़।
- PMMSY को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2024-25 तक 5 (पांच) वर्षों की अवधि के लिए लागू किया जाएगा।
- योजना के कार्यान्वयन के साथ, सरकार का लक्ष्य निम्नलिखित हासिल करना है:
  - ♦ फसल के बाद के नुकसान को 20-25% से 10% तक कम करने में मदद करें,
  - ♦ मछुआरों और मछली किसानों की आय को दोगुना करना और
  - ♦ अतिरिक्त 55 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करना।
- प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं:
  - ♦ मछली उत्पादन को 2018-19 में 13.75 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़ाकर 2024-25 तक 22 मिलियन मीट्रिक टन करना।
  - ♦ जलीय कृषि उत्पादकता को 3 टन प्रति हेक्टेयर से बढ़ाकर 5 टन प्रति हेक्टेयर करना।
  - ♦ घरेलू मछली की खपत को 5 किलो से बढ़ाकर 12 किलो प्रति व्यक्ति करना।
  - ♦ कृषि जीवीए में मत्स्य पालन क्षेत्र का योगदान 2018-19 में 7.28% से बढ़कर 2024-25 तक लगभग 9% हो गया।
  - ♦ 2018-19 में निर्यात राजस्व 46,589 करोड़ रुपये (6.37 बिलियन अमेरिकी डॉलर) से दोगुना होकर 2024-25 तक 100,000 करोड़ रुपये (13.68 बिलियन अमेरिकी डॉलर) हो गया।
  - ♦ फसल के बाद के नुकसान को लगभग 10% तक कम करना।
  - ♦ मूल्य श्रृंखला में 55 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करना।

YOUR SUCCESS OUR PRIDE
RAO'S ACADEMY

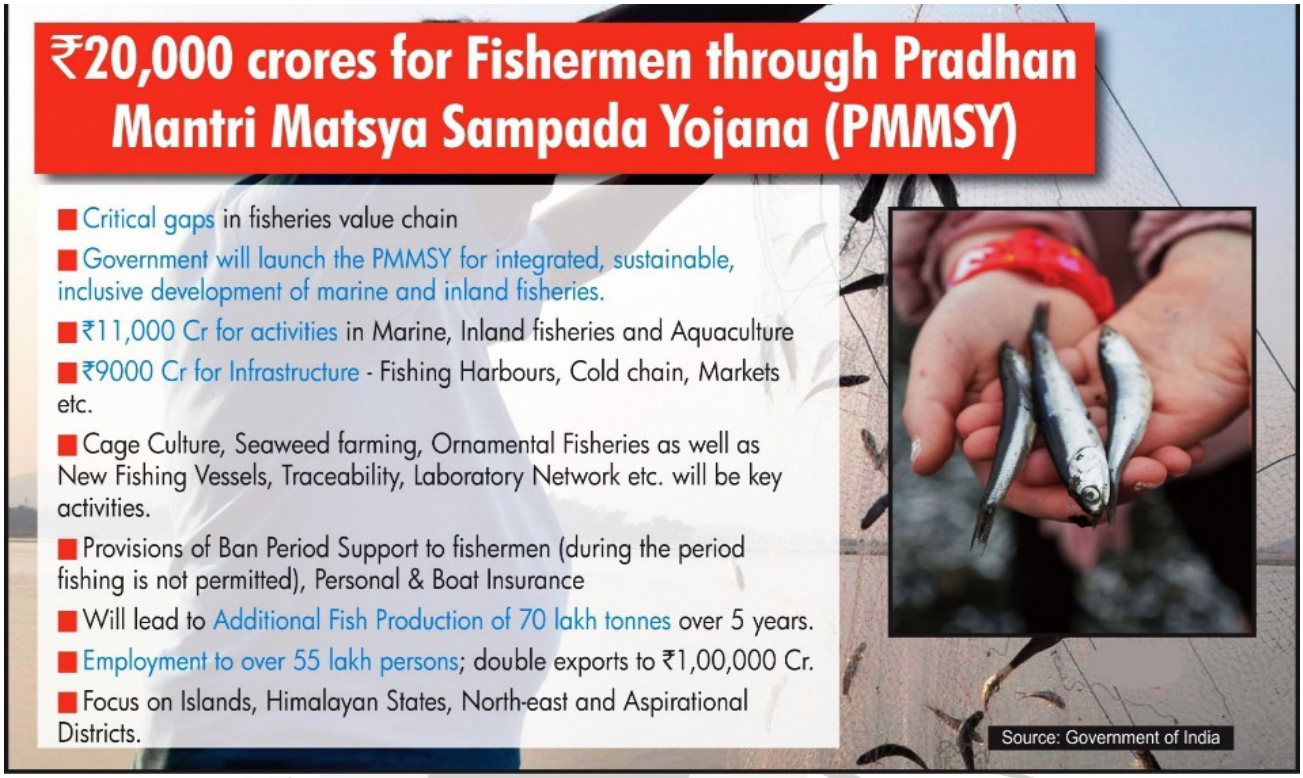

YOUR SUCCESS OUR
RAO'S ACADEMY

5 विज्ञान और तकनीक

विश्व मेट्रोलॉजी दिवस 2022

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली ने मेट्रोलॉजी सोसाइटी ऑफ इंडिया (एमएसआई) के सहयोग से विश्व मेट्रोलॉजी दिवस का आयोजन किया।

- यह 20 मई 1875 को मीटर कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने की वर्षगांठ मनाने के लिए 20 मई 2022 को मनाया जाता है।

प्रमुख बिंदु

- विश्व मेट्रोलॉजी दिवस 2022 का विषय 'डिजिटल युग में मेट्रोलॉजी' है।
- इस विषय को इसलिए चुना गया क्योंकि डिजिटल तकनीक हर समुदाय में क्रांति ला रही है, और आज समाज में सबसे रोमांचक प्रवृत्तियों में से एक है।

नोटः सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला संसद के एक अधिनियम के माध्यम से राष्ट्रीय माप मानकों का संरक्षक है और भारत में एसआई इकाइयों को पता लगाने की क्षमता प्रदान करता है।

बीज श्रृंखला विकास

केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री ने "बीज श्रृंखला विकास" पर एक राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता की।

- केंद्र द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के अथक प्रयासों के बीच, 'बीज श्रृंखला विकास' अधिक महत्व प्राप्त कर रहा है।

प्रमुख बिंदु

- टिकाऊ कृषि के लिए बीज बुनियादी और सबसे महत्वपूर्ण इनपुट है।
- अन्य सभी आदानों की प्रतिक्रिया काफी हद तक बीजों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।
- यह अनुमान लगाया गया है कि फसल के आधार पर कुल उत्पादन में अकेले गुणवत्ता वाले बीज का प्रत्यक्ष योगदान लगभग 15-20% है।
  - ♦ इसे अन्य इनपुट के कुशल प्रबंधन के साथ 45% तक बढ़ाया जा सकता है।
- खेती के लिए अच्छे बीजों की उपलब्धता से उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों की आय अधिक होती है।
- इस दिशा में 'बीज श्रृंखला विकास' से किसानों को कालाबाजारी और नकली बीजों की बिक्री पर सख्ती से रोक लगाकर अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों की समय पर आपूर्ति प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
- मंत्रालय का लक्ष्य पूरी बीज श्रृंखला को ठीक से व्यवस्थित करना है ताकि किसानों को कोई समस्या न हो।

नोटः कुछ शर्तों के अधीन बीज और रोपण सामग्री के विकास और उत्पादन में स्वचालित मार्ग के तहत 100% तक एफडीआई की अनुमति है।

- गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता के लिए, भारत सरकार ओईसीडी बीज योजना का सदस्य बन गई और पांच

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

किस्म प्रमाणन योजनाओं में भाग लेती है।

- वर्तमान में, सार्वजनिक क्षेत्र की 61 बीज किस्में, 19 फसलों को शामिल करते हुए, 2011 ओईसीडी में सूचीबद्ध हैं।

बीज के बारे में

- कृषि उत्पादन के लिए बीज सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण निवेश है।
- वास्तव में, यह कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने का सबसे अधिक लागत प्रभावी साधन है।
- बीज की गुणवत्ता उत्पादकता का पच्चीस प्रतिशत हिस्सा है।
- इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि देश के किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराए जाएं।
- भारतीय बीज कार्यक्रम तीन पीढ़ियों के बीजों को मान्यता देता है, नामतः ब्रीडर, फाउंडेशन और प्रमाणित बीज।

- कृषि और सहकारिता विभाग पूरे देश के लिए 2005-06 से 'गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन और वितरण के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास और सुदृढ़ीकरण' के रूप में एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना लागू कर रहा है।
- चालू योजना का उद्देश्य सभी फसलों के उच्च उपज वाले प्रमाणित/गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन और गुणन सुनिश्चित करना है।

भारत में सड़कों को चलाने के लिए सुरक्षित बनाने के लिए AI

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) संचालित समाधान जल्द ही भारत में सड़कों को चलाने के लिए एक सुरक्षित स्थान बना सकते हैं।

- नागपुर में 'प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग के माध्यम से सड़क सुरक्षा के लिए बुद्धिमान समाधान' (iRASTE) परियोजना कार्यान्वित की जा रही है।

प्रमुख बिंदु

- परियोजना वाहन चलाते समय संभावित दुर्घटना पैदा करने वाले परिदृश्यों की पहचान करेगी और एडवांस ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (एडीएएस) की मदद से ड्राइवरों को इसके बारे में सचेत करेगी।
- यह एक अद्वितीय एआई दृष्टिकोण है जो निम्नलिखित का उपयोग करता है:
  - ♦ सड़क पर जोखिमों की पहचान करने के लिए AI की भविष्य सोचने वाली शक्ति, और
  - ♦ ड्राइवरों को समय पर अलर्ट संप्रेषित करने के लिए एक टक्कर चेतावनी प्रणाली।
- यह सड़क सुरक्षा से संबंधित कई सुधार करने में मदद करेगा।
- इसे नागपुर शहर में लागू किया जा रहा है जिसका उद्देश्य दुर्घटनाओं में उल्लेखनीय कमी लाना है।
- परियोजना पूरे सड़क नेटवर्क पर गतिशील जोखिमों की निरंतर निगरानी करके डेटा विश्लेषण और गतिशीलता विश्लेषण द्वारा 'ग्रेस्पॉट्स' की पहचान भी करेगी।
- ग्रेस्पॉट सड़कों पर ऐसे स्थान हैं, जिन पर ध्यान न दिया गया हो, वे ब्लैकस्पॉट (घातक दुर्घटनाओं वाले स्थान) बन सकते हैं।
- सिस्टम सड़कों की निरंतर निगरानी भी करता है और निवारक रखरखाव और बेहतर सड़क बुनियादी ढांचे के लिए मौजूदा सड़क ब्लैकस्पॉट को ठीक करने के लिए इंजीनियरिंग सुधार करता है।
- आईआरएएसटीई परियोजना आई-हब फाउंडेशन, आईआईआईटी हैदराबाद द्वारा विकसित की जा रही है।
  - ♦ यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा स्थापित एक प्रौद्योगिकी नवाचार हब (TIH) है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

PARAM PORUL सुपरकंप्यूटर

PARAM PORUL, एनआईटी तिरुचिरापल्ली में एक अत्याधुनिक सुपरकंप्यूटर, राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) के तहत राष्ट्र को समर्पित किया गया था।

- यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) की एक संयुक्त पहल है।

प्रमुख बिंदु

- PARAM PORUL सुपरकंप्यूटिंग सुविधा एनएसएम के दूसरे चरण के तहत स्थापित की गई है।
- इस चरण में, इस प्रणाली को बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले अधिकांश घटक देश के भीतर निर्मित और असेंबल किए गए हैं।
  - ♦ मेक इन इंडिया पहल के अनुरूप सी-डैक द्वारा विकसित एक स्वदेशी सॉफ्टवेयर स्टैक के साथ निर्मित और असेंबल किया जाता है।
- एनएसएम के तहत इस 838 टेराफ्लॉप्स सुपरकंप्यूटिंग सुविधा को स्थापित करने के लिए एनआईटी तिरुचिरापल्ली और सी-डैक के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- परम पोरुल प्रणाली उच्च शक्ति उपयोग प्रभावशीलता प्राप्त करने और इस प्रकार परिचालन लागत को कम करने के लिए डायरेक्ट कॉन्टैक्ट लिक्विड कूलिंग तकनीक पर आधारित है।
- विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों से कई अनुप्रयोग जैसे:
  - ♦ मौसम और जलवायु,
  - ♦ जैव सूचना विज्ञान,
  - ♦ कम्प्यूटेशनल रसायन विज्ञान,
  - ♦ आणविक गतिशीलता,
  - ♦ सामग्री विज्ञान, कम्प्यूटेशनल द्रव गतिकी आदि।
  - ♦ शोधकर्ताओं के लाभ के लिए सिस्टम पर स्थापित किया गया है।
- एनआईटी, तिरुचिरापल्ली स्वास्थ्य, कृषि, मौसम और वित्तीय सेवाओं जैसे सामाजिक हित के क्षेत्रों में अनुसंधान कर रहा है।
  - ♦ एनएसएम के तहत स्थापित सुविधा इस शोध को मजबूत करेगी।

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) के बारे में

- भारत ने अपनी परम श्रृंखला के साथ कम लागत पर सुपर कंप्यूटर बनाने में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।
- अपनी क्षमता को और बढ़ाने और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, भारत सरकार ने 2015 में राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) शुरू किया।
- एनएसएम के तहत, देश में अनुसंधान एवं विकास संस्थानों और शैक्षणिक संस्थानों को जोड़ने की योजना थी।
  - ♦ 70 से अधिक उच्च निष्पादन कंप्यूटिंग सुविधाओं के साथ सुपरकंप्यूटिंग ग्रिड का उपयोग करके।
- सात वर्षों की अवधि में फैले इस मिशन की अनुमानित लागत रु. 4,500 करोड़ (US+ 593 मिलियन) है।

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीईआईटीवाई) संयुक्त रूप से मिशन का मार्गदर्शन करते हैं।
- सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक) को इस मिशन के तहत निर्मित कंप्यूटरों के समग्र

डिजाइन, विकास, परिनियोजन और कमीशनिंग का काम सौंपा गया है।

- फ्रांसीसी आधारित आईटी सेवा फर्म एटोस ने सी-डैक के लिए सुपर कंप्यूटरों के लिए पुर्जे बनाने का ठेका हासिल किया।

मिशन के विभिन्न चरण

- राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन की योजना तीन चरणों में बनाई गई थी।
- चरण 1-योजना भारत में 30% मूल्यवर्धन के साथ 6 सुपर कंप्यूटर स्थापित करने की थी।
- चरण 2- दूसरा चरण जो अप्रैल 2021 में शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य देश में स्वदेशी सॉफ्टवेयर स्टैक के साथ सुपर कंप्यूटर का निर्माण करना है।
- चरण 3- देश में डिजाइन और निर्माण पर फोकस है। चरण 3, 2021 में शुरू किया गया है और उम्मीद है कि कंप्यूटिंग गति 45 पीएफ तक ले जाएगी।
  - ♦ योजना के अनुसार राष्ट्रीय सुविधा में 3 पीएफ के साथ तीन सिस्टम और 20 पीएफ के साथ एक सिस्टम स्थापित किया जाएगा।

लाभ और आवेदन

एनएसएम योजना के तहत निर्मित सुपर कंप्यूटरों का उपयोग बड़े पैमाने पर निम्नलिखित अनुप्रयोगों में किया जाता है।

- जीनोमिक्स और ड्रग डिस्कवरी के लिए एनएसएम प्लेटफॉर्म।
- **शहरी मॉडलिंग:** शहरी पर्यावरण मुद्दों (मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, वायु गुणवत्ता) के समाधान के लिए विज्ञान आधारित निर्णय समर्थन ढांचा।
- भारत के नदी घाटियों के लिए बाढ़ पूर्व चेतावनी और भविष्यवाणी प्रणाली।
- तेल और गैस अन्वेषण में सहायता के लिए भूकंपीय इमेजिंग के लिए एचपीसी सॉफ्टवेयर सूट।
- **एमपीपीएलएबी:** टेलीकॉम नेटवर्क ऑप्टिमाइजेशन।

नव गतिविधि

- एनएसएम ने चरण 2 के अलावा 1.66 पेटाफ्लॉप्स की सुपरकंप्यूटिंग क्षमता के साथ आईआईटी रुड़की में एक सुपर कंप्यूटर "परम गंगा" को तैनात किया है।
- परम सिद्धि-एआई 5.26 पीएफ की क्षमता के साथ एनएसएम के तहत निर्मित भारत में सबसे तेज सुपर कंप्यूटर है।
- अब तक चरण 1 और चरण 2 के तहत 22 पेटाफ्लॉप्स (पीएफ) की कंप्यूटर शक्ति के साथ कुल 15 सिस्टम बनाए गए हैं।

Supercomputers Installed & Commissioned in India as a part of NSM

Name	Speed	Location
PARAM Shivay	833 TF	IIT BHU Varanasi
PARAM Shakti	1.66 PF	IIT Kharagpur
PARAM Brahma	797 TF	IISER Pune
PARAM Sanganak	1.66 PF	IIT Kanpur
PARAM Seva	833 TF	IIT-H
PARAM Yukti	833 TF	JNCASR
PARAM Smriti	833 TF	NABI Mohali
PARAM Utkarsh	833 TF	C-DAC B
PARAM Sidhi	5.26 PF	National AI Facility CDAC-Pune
PARAM Pravega	3.3 PF	IISC
PARAM Ganga	1.66 PF	IIT Roorkee
Total	**18.5 PF**	

सी-डैक के बारे में

उन्नत कंप्यूटिंग के विकास के लिए केंद्र (सी-डैक) इले. क्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) का प्रमुख आर एंड डी संगठन है।

- 1988 में सी-डैक की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा सुपर कंप्यूटरों के आयात से इनकार करने के संदर्भ में सुपर कंप्यूटर बनाने के लिए की गई थी।
- तब से सी-डैक 1988 में 1 जीएफ के साथ परम से शुरू होकर सुपरकंप्यूटर की कई पीढ़ियों के निर्माण का कार्य कर रहा है।
- लगभग उसी समय, सी-डैक ने जीआईएसटी समूह (ग्राफिक्स और इंटेलिजेंस आधारित स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी) की स्थापना के साथ भारतीय भाषा कंप्यूटिंग समाधानों का निर्माण शुरू किया।

2030 तक 100 मिलियन टन कोयला गैसीकरण

भारत सरकार ने 2030 तक 100 मिलियन टन कोयला गैसीकरण प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है।

- बिजली मंत्रालय ने लक्ष्य हासिल करने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन दस्तावेज तैयार किया है।

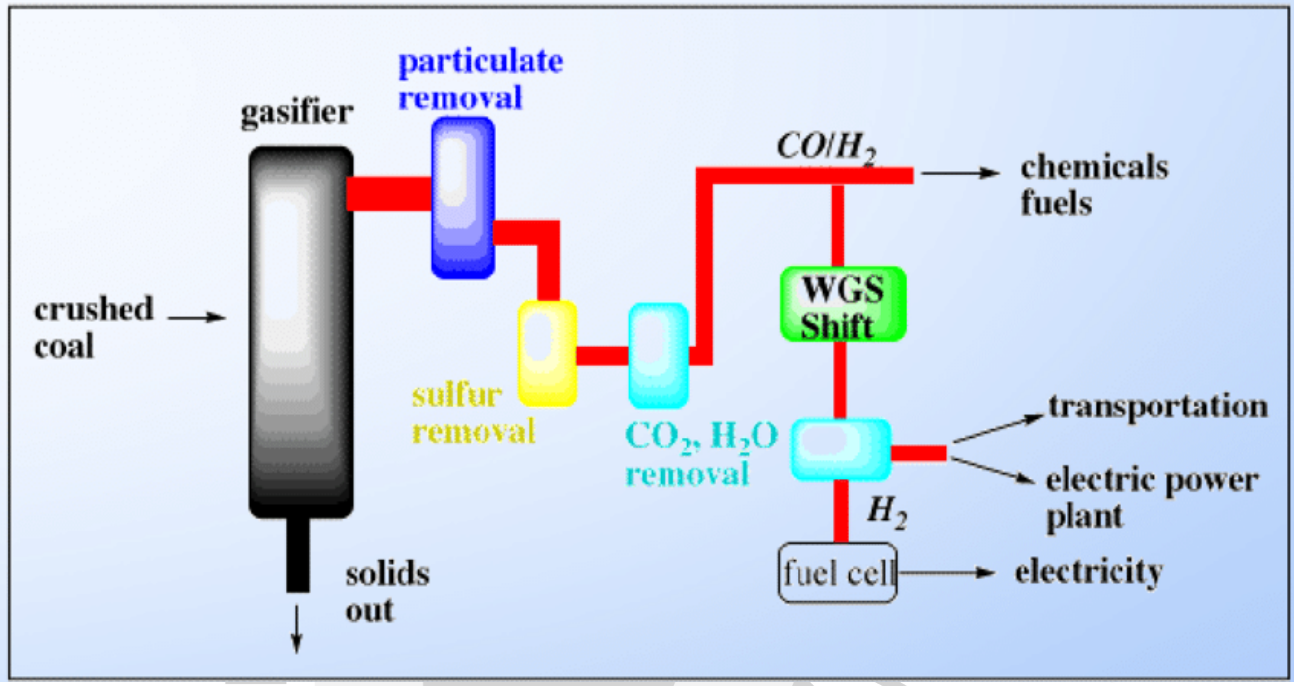

कोयला गैसीकरण क्या है?

- कोयला गैसीकरण कोयले को संश्लेषण गैस (जिसे सिनगैस भी कहा जाता है) में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है।
  - ♦ यह हाइड्रोजन (H2), कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) और कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) का मिश्रण है।
- सिनगैस का उपयोग विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों में किया जा सकता है जैसे कि बिजली का उत्पादन और रासायनिक उत्पाद, जैसे उर्वरक बनाना।
- कोयला गैसीकरण प्रक्रिया में भविष्य में अच्छी संभावनाएं हैं और इस प्रक्रिया में निम्न श्रेणी के कोयले का भी उपयोग किया जा सकता है।

राष्ट्रीय एआई पोर्टल

हाल ही में 'नेशनल एआई पोर्टल (https://indiaai.gov.in)' की दूसरी वर्षगाँठ मनाई गई।

- राष्ट्रीय एआई पोर्टल इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय (एमईआईटीवाई), राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन (एनईजीडी) और नैसकॉम की एक संयुक्त पहल है।

पोर्टल के बारे में

- INDIAAI भारत का राष्ट्रीय AI पोर्टल है - भारत और उसके बाहर हर चीज AI के लिए एक केंद्रीय बिंदु।
- वेबसाइट का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में वैश्विक प्रमुखता के लिए भारत की यात्रा की पृष्ठभूमि में विश्वसनीय सामग्री पावरहाउस बनना है।
- यह इच्छुक उद्यमियों, छात्रों, पेशेवरों, शिक्षाविदों और अन्य सभी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और

संबद्ध क्षेत्रों पर एकल केंद्रीय ज्ञान केंद्र है।

- पोर्टल भारत की एआई यात्रा में उत्कृष्टता और नेतृत्व के लिए एक एकीकृत एआई पारिस्थितिकी तंत्र बनाने और पोषित करने पर केंद्रित है।

असम भूकंप के बारे में अध्ययन

शोधकर्ताओं ने भारतीय प्लेट के उत्तर पूर्वी किनारे के जटिल विवर्तनिकी के लिए महान असम भूकंप का पता लगाया है।

प्रमुख बिंदु

- उत्तर पूर्वी सीमा पूर्वी हिमालय के साथ-साथ इंडो-बर्मा पर्वतमाला (आईबीआर) में स्थित है।
- इन दो क्षेत्रों के बीच परस्पर क्रिया से आईबीआर में गहरे भूकंप और पूर्वी हिमालय में क्रस्टल भूकंप उत्पन्न हो सकते हैं।
- पूर्वी हिमालय में भारतीय प्लेट का उत्तर-पूर्वी किनारा लगभग 40 किमी की गहराई तक भूकंपीय रूप से सक्रिय पाया गया है।
  - ♦ जबकि भारत-बर्मा पर्वतमाला (IBR) में भूकंपीयता लगभग 200 किमी की गहराई तक देखी जाती है।
- इससे पता चलता है कि यह भूकंपीय संरचना एक जटिल विवर्तनिकी बनाती है जिसने 1950 के महान असम भूकंप (एम 8.6) का उत्पादन किया।
  - ♦ शायद भविष्य में भूकंप के लिए तनाव पैदा करना।
- महान असम भूकंप अब तक दर्ज किया गया सबसे बड़ा अंतर-महाद्वीपीय भूकंप है।
  - ♦ यह अरुणाचल हिमालय की मिशमी पहाड़ियों के पास भारत-चीन सीमा पर स्थित था।
- अरुणाचल प्रदेश और असम के सीमावर्ती क्षेत्रों में पूर्वी हिमालयी सिंटैक्सिस (ईएचएस) को दुनिया में सबसे अधिक भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- ईएचएस में भारतीय प्लेट का उत्तर-पूर्व कोना भारत के राष्ट्रीय क्षेत्रीय मानचित्र के भूकंपीय क्षेत्र V के अंतर्गत आता है।
- 1950 के महान असम भूकंप के बाद, ऊपरी असम और मिश्मी ब्लॉक के बीच का क्षेत्र कोई बड़ा भूकंप पैदा नहीं कर रहा है।
- पिछले अध्ययन ने मिशमी थ्रस्ट (एमटी) क्षेत्र में एक बंद क्षेत्र का सुझाव दिया है, जो भविष्य में भूकंप के लिए तनाव के निर्माण का सुझाव दे सकता है।

देश के भूकंपीय क्षेत्र

- भारतीय मानक ब्यूरो ने ऐतिहा. सिक भूकंपीय गतिविधि के आध ार पर भारत में क्षेत्रों को चार भूकंपीय क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है।
- ये जोन II, III, IV और V हैं।
- इनमें से जोन V सबसे भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र है और जोन II सबसे कम सक्रिय है।

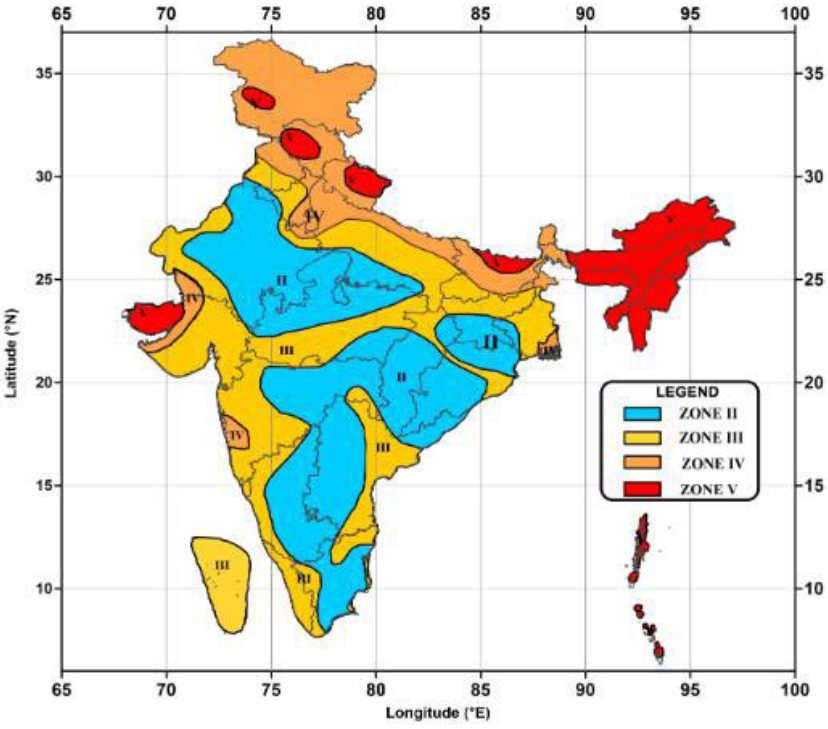

एक अनोखा लिक्विड-मिरर टेलीस्कोप

हिमालय पर्वत श्रृंखला में एक पहाड़ के ऊपर एक नई दूरबीन सुविधा अब ऊपरी आकाश पर नजर रखेगी।

- उद्देश्य क्षणिक या परिवर्तनशील वस्तुओं जैसे सुपरना. `वा, गुरुत्वाकर्षण लेंस, अंतरिक्ष मलबे और क्षुद्रग्रहों की पहचान करना है।

प्रमुख बिंदु

- टेलिस्कोप उत्तराखंड के एक पहाड़ी देवस्थल में स्थापित किया गया है।
- यह आकाश का सर्वेक्षण करने में मदद करेगा जिससे कई आकाशगंगाओं और अन्य खगोलीय स्रोतों का अवलोकन करना संभव हो सकेगा।
- यह देश का पहला लिक्विड मिरर टेलिस्कोप है और एशिया में सबसे बड़ा है।
- इसे भारत, बेल्जियम और कनाडा के खगोलविदों द्वारा बनाया गया था।
- नया उपकरण प्रकाश को इकट्ठा करने और फोकस करने के लिए तरल पारा की एक पतली फिल्म से बना एक 4-मीटर-व्यास घूर्णन दर्पण लगाता है।
- मायलर की एक पतली पारदर्शी फिल्म पारा को हवा से बचाती है।
- Photo में: मेष की देवस्थल वेधशाला एक पतली माइलर फिल्म द्वारा कवर किए गए तरल पारा दर्पण को दिखा रही है।

इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि-4

इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि -4 का एक सफल प्रशिक्षण प्रक्षेपण, एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप, ओडिशा से किया गया था।

- सफल परीक्षण सामरिक बल कमान के तत्वावधान में किए गए नियमित उपयोगकर्ता प्रशिक्षण लॉन्च का हिस्सा था।

अग्नि मिसाइल के बारे में

- अग्नि श्रेणी की मिसाइलें कम दूरी की मिसाइलों से लेकर मध्यम दूरी की मिसाइलों (700-5000 किलोमीटर) तक सड़क और रेल गतिशीलता के साथ ठोस चालित बैलिस्टिक मिसाइल हैं।
- अग्नि मिसाइल एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) का एक घटक है।
- यह कार्यक्रम भारत द्वारा 1983 में +260 मिलियन के बजट के साथ शुरू किया गया था।
- इसे रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला (DRDL) द्वारा प्रबंधित किया गया था।
- अग्नि श्रेणी की मिसाइलों को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित ठोस ईंधन वाले इंजनों का उपयोग करना था।
- 1989 में, भारत ने अग्नि श्रेणी की मिसाइल का परीक्षण किया जिसकी मारक क्षमता 1000-1500 किलोमीटर थी। यह अग्नि I श्रेणी की मिसाइल थी।
- सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV-3) के ठोस ईंधन वाले बूस्टर मोटर के पहले चरण का इस्तेमाल दो चरणों वाली अग्नि मिसाइल के पहले चरण के लिए किया गया था।
- 1999 में, भारत ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के तत्वावधान में अग्नि-द्वितीय मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया।
  - ♦ अग्नि-द्वितीय में 2000 किमी की सीमा के साथ एक बेहतर मार्गदर्शन प्रणाली है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- अग्नि-II ने दोनों चरणों में ठोस ईंधन का इस्तेमाल किया, जिससे मिसाइल लॉन्च करने के लिए तैयारी के समय में भारी कमी आई।
- 2011 भारत के परमाणु प्रतिरोध के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष था क्योंकि उसी वर्ष मध्यवर्ती श्रेणी अग्नि-III को भी भारतीय सेना में शामिल किया गया था।
- हालांकि, इस तथ्य के बावजूद कि भारत ने अग्नि-III को 3000 किलोमीटर की सीमा के साथ विकसित किया था, उन्हें अभी भी एक लंबी दूरी की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता थी।
- इससे अग्नि-IV मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का विकास हुआ।
  - ♦ मिसाइल की मारक क्षमता 4000kms थी।
- अग्नि-IV मिसाइल 4000 कि.मी. की सीमा के साथ परमाणु सक्षम है।
- अंतर-महाद्वीपीय सीमा क्षमता हासिल करने की भारत की इच्छा ने भारत को 5000 किमी की सीमा के साथ अग्नि-V मिसाइल विकसित करने के लिए प्रेरित किया।
- अग्नि मिसाइल के अन्य संस्करणों के विपरीत, अग्नि-V तीन चरणों वाली ठोस चालित बैलिस्टिक मिसाइल है।
- अग्नि-V मिसाइल को कई स्वतंत्र रूप से लक्षित पुनः प्रवेश वाहनों (MIRV) के साथ-साथ युद्धाभ्यास योग्य पुनः प्रवेश वाहन (MaRV) के साथ लगाया जा सकता है।
  - ♦ दोनों प्रौद्योगिकियां डीआरडीओ द्वारा विकसित की जा रही हैं।

बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो - 2022

प्रधान मंत्री ने हाल ही में प्रगति मैदान में बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो - 2022 का उद्घाटन किया।

- यह जैव प्रौद्योगिकी विभाग और जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

प्रमुख बिंदु

- यह बीआईआरएसी की स्थापना के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है।
- एक्सपो का विषय 'बायोटेक स्टार्टअप इनोवेशनः टुवर्ड्स आत्म निर्भर भारत' है।

BIRAC के बारे में

- जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) एक गैर-लाभकारी धारा 8, अनुसूची बी, सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है।
- यह उभरते बायोटेक उद्यम को मजबूत और सशक्त बनाने के लिए एक इंटरफेस एजेंसी के रूप में भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) द्वारा स्थापित किया गया था।

- उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक उत्पाद विकास आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए रणनीतिक अनुसंधान और नवाचार करना है।
- बीआईआरएसी एक उद्योग-अकादमिक इंटरफेस है और प्रभाव पहलों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से अपने अधिदेश को लागू करता है।
- बीआईआरएसी ने कई योजनाएं, नेटवर्क और प्लेटफॉर्म शुरू किए हैं जो उद्योग-अकादमिक नवाचार अनुसंधान में मौजूदा अंतराल को पाटने में मदद करते हैं।
- विजन: भारतीय बायोटेक उद्योग, विशेष रूप से स्टार्ट-अप और एसएमई की रणनीतिक अनुसंधान और नवाचार क्षमताओं को प्रोत्साहित करने, बढ़ावा देने और बढ़ाने के लिए;
  - ताकि समाज के सबसे बड़े वर्ग की जरूरतों को पूरा करने वाले किफायती उत्पाद तैयार किए जा सकें।

डीएसटी ने जियोस्पेशियल सेल्फ सर्टिफिकेशन पोर्टल लॉन्च किया

भारत में भू-स्थानिक उद्योग के उदारीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम कहा जा सकता है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने स्व प्रमाणन पोर्टल लॉन्च किया।

- पोर्टल व्यक्तियों, कंपनियों, संगठनों और सरकारी एजेंसियों द्वारा भू-स्थानिक दिशानिर्देशों के प्रावधानों का पालन करने के लिए है।

प्रमुख बिंदु

- दिशानिर्देशों के अनुसार, निम्नलिखित की कोई आवश्यकता नहीं होगी:
  - पूर्व स्वीकृति,
  - सुरक्षा मंजूरी,
  - संग्रह पर लाइसेंस या कोई अन्य प्रतिबंध,
  - उत्पादन, तैयारी, प्रसार, भंडारण, प्रकाशन, अद्यतनीकरण और/या
  - भारत के भू-स्थानिक डेटा और मानचित्रों का डिजिटलीकरण।
- व्यक्तियों, कंपनियों, संगठनों और सरकारी एजेंसियों को अर्जित भू-स्थानिक डेटा को संसाधित करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए।
  - वे ऐसे डेटा के संबंध में एप्लिकेशन भी बना सकते हैं और समाधान विकसित कर सकते हैं।
  - वे ऐसे डेटा उत्पादों, अनुप्रयोगों, समाधानों आदि का उपयोग बिक्री, वितरण, साझाकरण, प्रसार और प्रकाशन के माध्यम से भी कर सकते हैं।
- इन दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए स्व-प्रमाणन का उपयोग किया जाएगा।
- पोर्टल का उपयोग अनिवार्य रूप से मंजूरी और अनुमोदन प्राप्त करने में लगने वाले समय में भारी कटौती करेगा।
- पोर्टल को एनआईसी के सहयोग से विकसित किया गया है।

ग्राफीन में पाया गया तटस्थ इलेक्ट्रॉन प्रवाह

भौतिकविदों ने दो स्तरित ग्रेफीन में काउंटर प्रोपेगेटिंग चौनलों का पता लगाया है जिसके साथ कुछ तटस्थ क्वासिपार्टिकल पारंपरिक मानदंडों को तोड़ते हुए विपरीत दिशाओं में चलते हैं।

- पता लगाने में भविष्य की क्वांटम गणना को आकार देने की क्षमता है।

प्रमुख बिंदु

- जब एक 2डी सामग्री या गैस पर एक मजबूत चुंबकीय क्षेत्र लागू किया जाता है,
  - इंटरफेस पर इलेक्ट्रॉन - बल्क के भीतर के इलेक्ट्रॉनों के विपरीत - किनारों के साथ घूमने के लिए स्वतंत्र होते हैं जिन्हें एज मोड या चौनल कहा जाता है।

YOUR TRUST OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- ♦ इस घटना को क्वांटम हॉल प्रभाव कहते हैं।
- इस तरह के गुण क्वांटम कंप्यूटिंग के क्षेत्र में रोमांचक अनुप्रयोगों को जन्म दे सकते हैं।
- यह बढ़त आंदोलन, जो क्वांटम हॉल प्रभाव का सार है, सामग्री और शर्तों के आधार पर कई दिलचस्प गुणों को जन्म दे सकता है।
- पारंपरिक इलेक्ट्रॉनों के लिए, धारा केवल एक दिशा में प्रवाहित होती है जो चुंबकीय क्षेत्र ('डाउनस्ट्रीम') द्वारा निर्धारित होती है।
- हालांकि, भौतिकविदों ने पहले भविष्यवाणी की थी कि कुछ सामग्रियों में प्रति-प्रसार चौनल हो सकते हैं।
  - ♦ ऐसे मामलों में कुछ अर्ध-कण विपरीत ('उर्ध्वप्रवाह') दिशा में भी यात्रा कर सकते हैं।
- हालांकि, इन चौनलों को पहचानना बेहद मुश्किल हो गया है क्योंकि इनमें कोई विद्युत प्रवाह नहीं होता है।
- भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के शोधकर्ताओं ने "धूम्रपान करने वाली बंदूक" के साक्ष्य प्रदान किए हैं।
  - ♦ यह अपस्ट्रीम मोड की उपस्थिति को दर्शाता है जिसके साथ कुछ तटस्थ क्वासिपार्टिकल्स दो-स्तरित ग्राफीन में चलते हैं।
- इन मोड या चौनलों का पता लगाने के लिए, टीम ने विद्युत शोर को नियोजित करने वाली एक नई विधि का उपयोग किया - गर्मी अपव्यय के कारण आउटपुट सिग्नल में उतार-चढ़ाव।

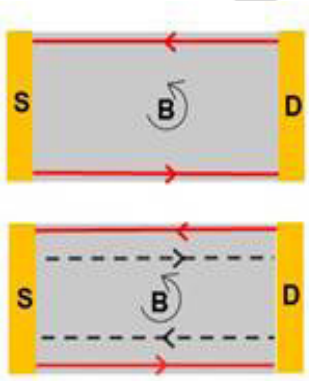

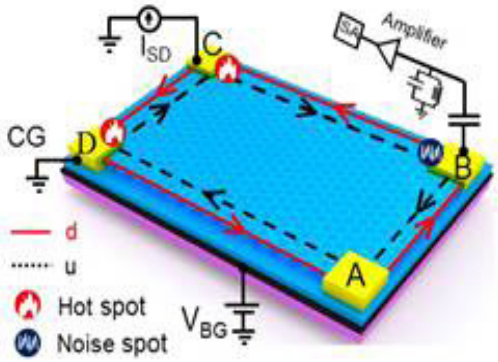

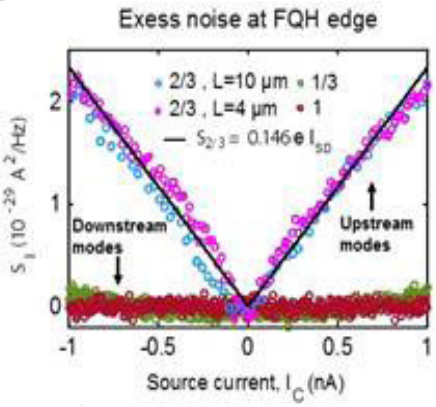

YOUR SU
RAO'S ACADEMY

6 सामाजिक मुद्दे

मालवीय मिशन

केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षक/संकाय के क्षमता निर्माण के लिए संस्थागत तंत्र पर रिपोर्ट की समीक्षा की।

- मंत्री प्रधान ने शिक्षक शिक्षा/संकाय विकास के लिए देश भर में सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए "मालवीय मिशन" के विचार के साथ पेश किया।

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन के बारे में

शिक्षक और शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन (PMMMNMTT) का उद्देश्य शिक्षाशास्त्र (शिक्षण) में नवाचार को बढ़ावा देना है जिससे बेहतर शिक्षण परिणाम प्राप्त हो सकें।

- PMMMNMTT सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षकों और संकाय दोनों के लिए व्यावसायिक विकास की जरूरतों को पूरा करने के लिए एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- मिशन का उद्देश्य स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रभावी नेतृत्व और प्रबंधन का निर्माण करना भी है।
- यह योजना 25 दिसंबर, 2014 को रुपये के परिव्यय के साथ शुरू की गई थी। बारहवीं योजना से अधिक 900 करोड़।

योजना अवधि समाप्त होने के बाद, व्यय वित्त समिति (ईएफसी) ने योजना की अवधि मार्च 2020 तक बढ़ा दी।

उच्च शिक्षा में शिक्षक और शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन के उद्देश्य

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में नव नियुक्त सहायक प्रोफेसर ठीक से उन्मुख हैं, शिक्षक और शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन फैकल्टी के लिए प्रेरण प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है।
- इसके अतिरिक्त, मिशन यह मानता है कि छात्रों के विविध कौशल के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया को और अधिक वैज्ञानिक बनाने की आवश्यकता है।

Scheme of
Pandit Madan Mohan Malaviya
National Mission on
Teachers and Teaching
(PMMMNMTT)

मिशन के लक्ष्यों को निम्नलिखित के संयोजन के माध्यम से प्राप्त करने की मांग की जाती है:

- प्रोग्रामेटिक और योजना आधारित हस्तक्षेप:
  - ♦ मौजूदा और नई संस्थागत संरचनाओं के माध्यम से सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण।
- परियोजना आधारित गतिविधियां:
  - ♦ आईसीटी आधारित प्रशिक्षण, गणित, विज्ञान, स्कूलों के लिए भाषा शिक्षकों का प्रशिक्षण, तकनीकी शिक्षा में कोर विज्ञान और इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम आदि।

मिशन में निम्नलिखित घटक शामिल हैं: -

- केंद्रीय, राज्य और डीम्ड विश्वविद्यालयों में शिक्षा के स्कूल
- पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र
- शिक्षक शिक्षा के लिए अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र
- शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केंद्र
- अकादमिक नेतृत्व और शिक्षा प्रबंधन केंद्र
- नवाचार, पुरस्कार और शिक्षण संसाधन अनुदान, जिसमें कार्यशालाएं और सेमिनार शामिल हैं
- पाठ्यचर्या नवीनीकरण और सुधारों के लिए विषय नेटवर्क
- उच्च शिक्षा संस्थानों में वरिष्ठ पदाधिकारियों के लिए नेतृत्व विकास
- नवनियुक्त शिक्षकों का प्रेरण प्रशिक्षण
- शैक्षणिक कार्यक्रम के लिए नेतृत्व (लीप)।

भारत में असमानता की स्थिति रिपोर्ट

भारत में असमानता की स्थिति रिपोर्ट आज प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के अध्यक्ष डॉ बिबेक देबरॉय द्वारा जारी की गई।

- रिपोर्ट प्रतिस्पर्धात्मकता संस्थान द्वारा लिखी गई है और भारत में असमानता की गहराई और प्रकृति का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

प्रमुख बिंदु

- रिपोर्ट स्वास्थ्य, शिक्षा, घरेलू विशेषताओं और श्रम बाजार के क्षेत्रों में असमानताओं पर जानकारी संकलित करती है।
- जैसा कि रिपोर्ट प्रस्तुत करती है, इन क्षेत्रों में असमानताएं जनसंख्या को अधिक संवेदनशील बनाती हैं और बहुआयामी गरीबी में उतरने को प्रेरित करती हैं।
- रिपोर्ट समावेश और बहिष्करण दोनों का जायजा लेती है और नीतिगत बहसों में योगदान करती है।
- रिपोर्ट में दो भाग होते हैं - आर्थिक पहलू और सामाजिक-आर्थिक घोषणापत्र।
  - ♦ यह पांच प्रमुख क्षेत्रों को देखता है जो असमानता की प्रकृति और अनुभव को प्रभावित करते हैं।
  - ♦ ये आय वितरण, श्रम बाजार की गतिशीलता, स्वास्थ्य, शिक्षा और घरेलू विशेषताएं हैं।
- यह आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस), राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) और यूडीआईएसई+ के विभिन्न दौरों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है।
- प्रत्येक अध्याय ढांचागत क्षमता के संदर्भ में वर्तमान स्थिति, चिंता के क्षेत्रों, सफलताओं और विफलताओं और अंत में असमानता पर प्रभाव की व्याख्या करने के लिए समर्पित है।
- यह एक ऐसा अध्ययन है जो वर्ग, लिंग और क्षेत्र के चौराहों को काटता है और इस बात पर प्रकाश डालता है कि असमानता समाज को कैसे प्रभावित करती है।
- रिपोर्ट धन अनुमानों से आगे बढ़ती है जो 2017-18, 2018-19 और 2019-20 की अवधि में आय वितरण के अनुमानों को उजागर करने के लिए केवल एक आंशिक तस्वीर दर्शाती है।

मुख्य निष्कर्ष

1. श्रम बाजार

- पीएलएफएस 2019-20 से आय के आंकड़ों के एक्सट्रपलेशन से पता चला है कि 25,000 रुपये का मासिक वेतन पहले से ही अर्जित कुल आय के शीर्ष 10% में से एक है।
  - ♦ यह स्पष्ट रूप से आय असमानता के कुछ स्तरों की ओर इशारा करता है।
- शीर्ष 1% का हिस्सा अर्जित कुल आय का 6-7% है।
  - ♦ जबकि शीर्ष 10% सभी अर्जित आय का एक तिहाई है।
- 2019-20 में, विभिन्न रोजगार श्रेणियों में, उच्चतम प्रतिशत निम्न में से था:

RAO'S ACADEMY

♦ स्व-नियोजित श्रमिक (45.78%),

इसके बाद नियमित वेतनभोगी कर्मचारी (33.5%) और

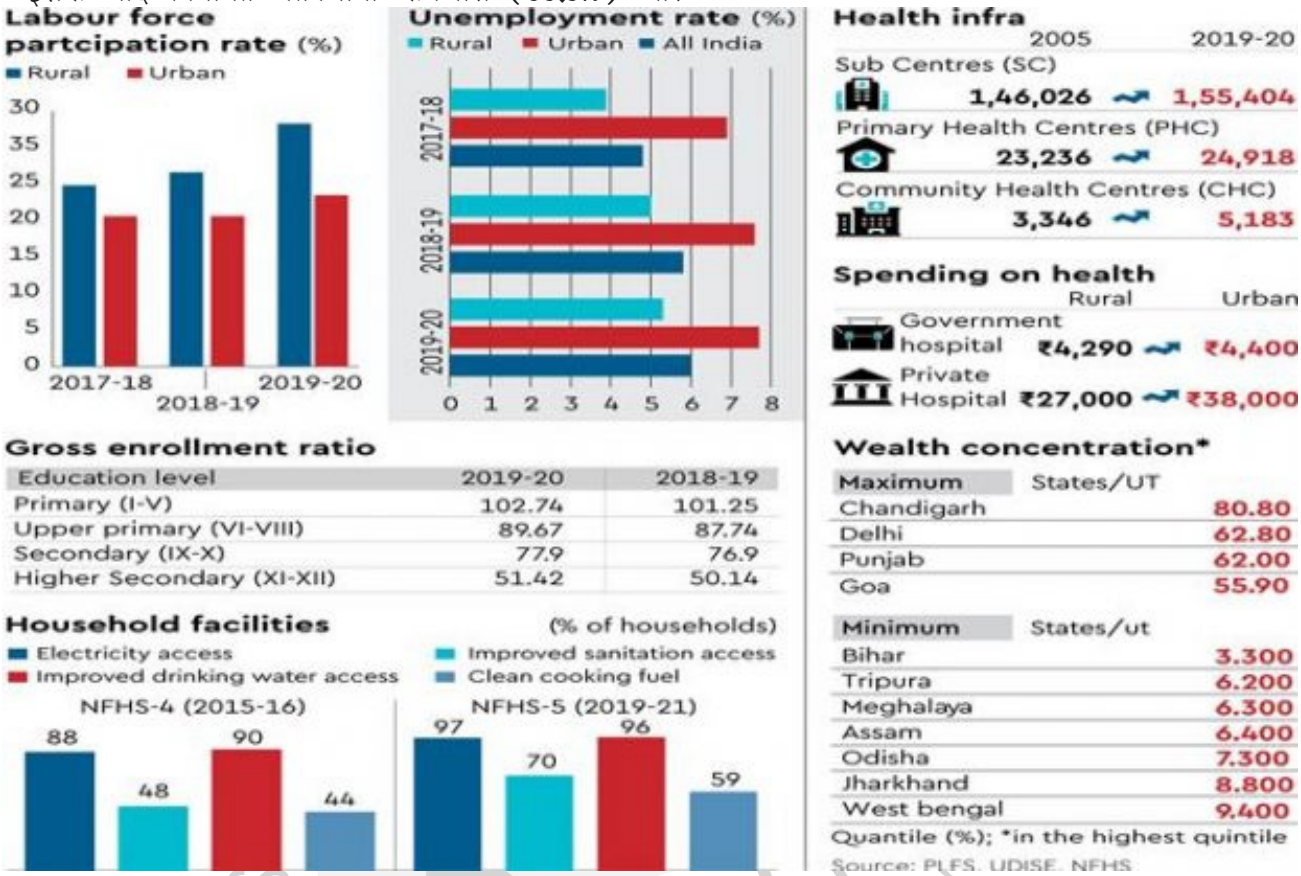

♦ कैजुअल वर्कर (20.71%)।

- स्व-नियोजित कामगारों का हिस्सा भी निम्नतम आय वर्ग में सबसे अधिक होता है।
- देश की बेरोजगारी दर 4.8% (2019-20) है, और श्रमिक जनसंख्या अनुपात 46.8% है।
- महिलाओं के लिए श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर), जो पीएलएफएस 2019-20 के अनुसार बहुत ही कम 30% है।

2. स्वास्थ्य

- स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में, ग्रामीण क्षेत्रों पर लक्षित फोकस के साथ ढांचागत क्षमता को बढ़ाने में काफी सुधार हुआ है।
- 2005 में भारत में कुल 1,72,608 स्वास्थ्य केंद्रों से, 2020 में कुल स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या 1,85,505 है।
- राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु और चंडीगढ़ जैसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में स्वास्थ्य केंद्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- एनएफएचएस-4 (2015-16) और एनएफएचएस-5 (2019-21) के परिणामों से पता चला है कि 2015-16 में पहली तिमाही में 58.6% महिलाओं ने प्रसवपूर्व जांच प्राप्त की।

♦ 2019-21 तक यह डेटा बढ़कर 70% हो गया।

- 78% महिलाओं को प्रसव के दो दिनों के भीतर डॉक्टर या सहायक नर्स से प्रसवोत्तर देखभाल प्राप्त हुई। 79.1% बच्चों को प्रसव के दो दिनों के भीतर प्रसवोत्तर देखभाल प्राप्त हुई।
- हालांकि, अधिक वजन, कम वजन और एनीमिया की व्यापकता के मामले में पोषण की कमी एक बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है।

बच्चों, किशोरियों और गर्भवती महिलाओं में स्थिति और भी चिंताजनक है।

RAO'S ACADEMY

- इसके अतिरिक्त, कम स्वास्थ्य कवरेज, जिसके कारण जेब से अधिक खर्च होता है, गरीबी की घटनाओं को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

3. शिक्षा

- कई सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से लक्षित प्रयासों के कारण शिक्षा और घरेलू स्थितियों में काफी सुधार हुआ है।
- इस बात पर जोर दिया जाता है कि शिक्षा और संज्ञानात्मक विकास मूलभूत वर्षों से असमानता के लिए एक दीर्घकालिक सुधारात्मक उपाय है।
- 2019-20 तक, 95% स्कूलों में स्कूल परिसर में कार्यात्मक शौचालय की सुविधा है (95.9% कार्यात्मक लड़कों के शौचालय और 96.9% कार्यात्मक लड़कियों के शौचालय)।
- 80.16% स्कूलों में कार्यात्मक बिजली कनेक्शन हैं।
- गोवा, तमिलनाडु, चंडीगढ़, दिल्ली, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव, लक्षद्वीप और पुडुचेरी जैसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कार्यात्मक बिजली कनेक्शन का सार्वभौमिक (100%) कवरेज हासिल कर लिया है।
- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 2018-19 और 2019-20 के बीच सकल नामांकन अनुपात में भी वृद्धि हुई है।
- एनएफएचएस-5 (2019-21) के अनुसार, 6 वर्ष और उससे अधिक आयु की 71.8% महिला आबादी कम से कम एक बार स्कूल गई है।
- साथ ही, कम से कम दस या अधिक वर्षों की स्कूली शिक्षा पूरी करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 41% (ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 33.7%) के साथ बेहद कम है।
- इसके विपरीत, अखिल भारतीय स्तर पर दस या अधिक वर्षों की स्कूली शिक्षा प्राप्त करने वाले पुरुषों की संख्या 50.2% दर्ज की गई है।
- ड्रॉपआउट दर के संदर्भ में, शिक्षा के विभिन्न स्तरों से बाहर होने वाले छात्रों के प्रतिशत में 2018-19 से काफी सुधार हुआ है।
  - ♦ प्राथमिक स्तर पर कुल मिलाकर 4.45% से घटकर केवल 1.4% रह गया।

Table 4.1 Gross Enrolment Ratio (GER) by Gender and Level of School (2019-20 & 2018-19)

EDUCATION LEVEL	2019-20			2018-19		
	GIRLS	BOYS	TOTAL	GIRLS	BOYS	TOTAL
PRIMARY (I-V)	103.69	101.87	102.74	101.78	100.76	101.25
UPPER PRIMARY (VI-VIII)	90.46	88.93	89.67	88.54	87	87.74
SECONDARY (IX-X)	77.83	77.97	77.9	76.93	76.87	76.9
HIGHER SECONDARY (XI-XII)	52.4	50.52	51.42	50.84	49.49	50.14

Source: UDISE+ Dashboard – 2019-20

नोट: 2019-20 में, अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा के सभी स्तरों पर GPI 1 से अधिक था।

- लगभग 26.6 करोड़ कुल नामांकन में से, लगभग 37.13% छात्र निजी गैर-सहायता प्राप्त (मान्यता प्राप्त) स्कूलों में नामांकित थे।
  - ♦ लगभग 49.5% छात्र सरकारी स्कूलों में नामांकित थे।

4. घरेलू

- घरेलू स्थितियों में सुधार के संदर्भ में, स्वच्छता और सुरक्षित पेयजल तक पहुंच प्रदान करने पर जोर देने का

अर्थ अधिकांश घरों के लिए एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत करना है।

- एनएफएचएस-5 (2019-21) के अनुसार:
  - ♦ 97% घरों में बिजली की पहुंच है,
  - ♦ 70% ने स्वच्छता तक पहुंच में सुधार किया है, और
  - ♦ 96% के पास सुरक्षित पेय जल है।

5. अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक संकेतक

- सामाजिक सेवाओं पर भारत का खर्च पिछले कुछ वर्षों में 2014-15 में 6.2% से बढ़कर 2021-22 में 26.6% हो गया है (बजट अनुमान के अनुसार)।
- स्वास्थ्य व्यय में लगातार 4.5% से 6.6% की वृद्धि हुई है।

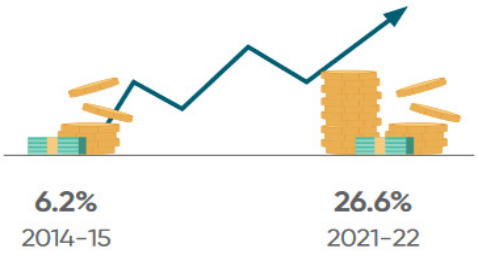

चित्र 1: सामाजिक क्षेत्र व्यय चित्र 2: स्वास्थ्य व्यय (2014-15 से 2021-22)

- शीर्ष 1%, निचले 10% की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक कमाते हैं।
- तीन समयावधियों (2017-18 से 2019-20) के दौरान नीचे के 50% ने लगभग 22% का आयोजन किया।
  - ♦ नीचे के 50% की विकास दर 2017-18 से 2019-20 तक 3.9% रही है, जबकि शीर्ष 10% में 8.1% की वृद्धि हुई है।
  - ♦ यह आय समूहों और इन स्तरों के बीच विकास की अनुपातहीन दर के बीच असमानता को उजागर करता है।
- पीएलएफएस की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार - 2017-18 से, श्रम बल की भागीदारी दरों में प्रतिशत अंकों में वृद्धि दर्ज की गई है।
  - ♦ 2017-18 में 49.8% से, यह 2019-20 में 53.5% है। 2018-19 में एलएफपीआर 50.2% था।
  - ♦ जबकि पिछले कुछ वर्षों में महिला भागीदारी दर में मामूली वृद्धि हुई है, यह अभी भी पुरुष भागीदारी दर की तुलना में बेहद कम है।
- 2017-18 में, श्रमिक जनसंख्या राशन (WPR) (15 वर्ष और उससे अधिक के लिए) 46.8% था, जो 2019-20 तक बढ़कर 50.9% हो गया।
  - ♦ जबकि मामूली वृद्धि सही दिशा में एक कदम है, यह अभी भी इंगित करता है कि जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरी तरह से दोहन करने के लिए, रोजगार सृजन के माध्यम से आर्थिक प्रगति को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- 2019-20 में देश की बेरोजगारी दर (यूआर) 4.8% है।
  - ♦ यह 2017-18 में 6% से गिर गया है।
  - ♦ नागालैंड ने 2018 में पर्याप्त गिरावट के बावजूद उच्चतम बेरोजगारी दर की सूचना दी है।
  - ♦ केंद्र शासित प्रदेशों में, लक्षद्वीप ने 2018-19 में सबसे अधिक बेरोजगारी दर 31% तक पहुंच गई है।
- भारत में, मासिक प्रति व्यक्ति व्यय (एमपीसीई) का 13% 2020 तक अपनी जेब से स्वास्थ्य व्यय के लिए निर्देशित किया गया है।
  - ♦ हालांकि यह 2019 में 54.78% से बहुत बड़ा सुधार है, फिर भी यह 7.8% के लक्षित लक्ष्य से कम है।
- जबकि राजस्थान (+2698), गुजरात (+1888) और छत्तीसगढ़ (+1387) जैसे राज्यों ने 2005 के बाद से बनाए गए हेल्थकेयर के उप केंद्रों (एससी) की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है।

RAO'S ACADEMY

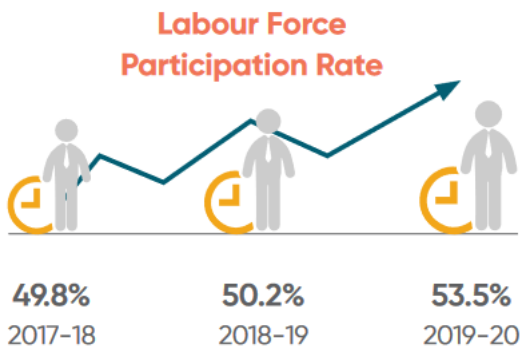

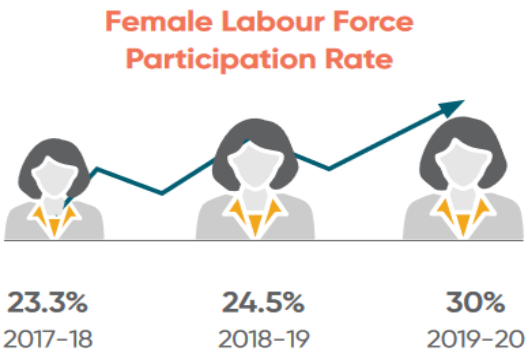

- ♦ बिहार में केवल 9112 उप केंद्रों के साथ 58% कमी है।
- ♦ इसी तरह, दिल्ली में, केवल 12 मौजूदा केंद्रों के साथ 59% की कमी है, जबकि जरूरत 29 केंद्रों की है।

- ग्रामीण इलाकों के 85.9% लोग किसी भी स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत नहीं आते हैं, और शहरी शहरों में 80% लोग शामिल हैं।
- बच्चे के जन्म को छोड़कर, ग्रामीण क्षेत्रों में एक सरकारी अस्पताल में औसतन लगभग 4,290 रुपये और निजी अस्पतालों में 27,000 रुपये से अधिक का खर्च आता है।
  - ♦ शहरी भागों में, सरकारी अस्पताल में लगभग 4400 रुपये और निजी अस्पतालों में लगभग 38,000 रुपये का खर्च आता है।
- 2015-16 (एनएफएचएस 4) की तुलना में बच्चों में पोषण प्रोफाइल में सुधार हुआ है, जैसे बच्चों में स्टंटिंग 38.4% से कम हो गया है और 21% से बर्बाद हो गया है।
  - ♦ एनएफएचएस 5 (2019-21) के अनुसार, पांच साल से कम उम्र के 35.5% बच्चे अविकसित हैं, पांच साल से कम उम्र के 19.3% बच्चे वेस्टेड हैं।

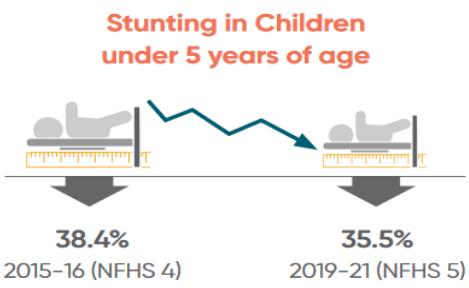

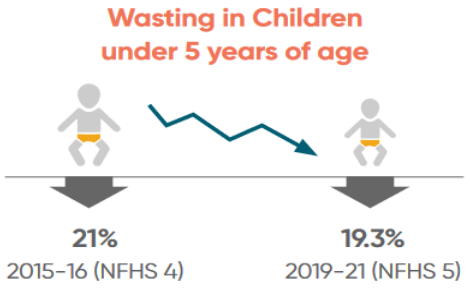

- झारखंड (26.2%) और बिहार (25.6) में निम्न बीएमआई वाली महिलाओं की दर सबसे अधिक है, जबकि बिहार (21.5) और गुजरात (20.9) में पुरुषों की दर सामान्य बीएमआई से कम है।
- पोषण की दृष्टि से कमजोर बच्चों की सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य बिहार बना हुआ है।
  - ♦ 5 वर्ष से कम आयु के कम से कम 41 प्रतिशत बच्चों का वजन कम है और 42.9 प्रतिशत बच्चों का विकास रूक गया है।
- भारत में, 5 साल (6-59 महीने) से कम उम्र के एनीमिया से पीड़ित बच्चों का प्रतिशत 2015-16 में 58.6% से बढ़कर 2019-21 में 67.1% हो गया है।
  - ♦ गुजरात में राष्ट्रीय आंकड़े से अधिक रिपोर्ट है, जिसमें 79.7% बच्चे एनीमिया से पीड़ित हैं।
- किशोर लड़कियों (54.1% से 59.1%) और प्रजनन आयु की महिलाओं (53.2% से 57.2%) में एनीमिया की बढ़ती व्यापकता दर भी देखी गई है।

महिलाओं की तुलना में, किशोर लड़कों (31.1%) और पुरुषों (25%) ने एनीमिया की कम दर की सूचना दी है।

कुछ अन्य प्रमुख निष्कर्ष हालांकि रेखांकन

RAO'S ACADEMY

2019-20

Categories	Number of workers (Regular salaried)	Number of workers (casual workers)	Number of workers (self-employed)
Less than 5,000	21.62%	1.80%	76.58%
5,000 - 10,000	14.33%	13.12%	72.55%
10,000 - 15,000	13.86%	14.86%	71.29%
15,000 - 20,000	15.03%	20.11%	64.85%
20,000 - 50,000	19.35%	31.40%	49.26%
50,000 - 1,00,000	26.40%	28.23%	45.37%
More than 1,00,000	41.59%	14.41%	43.99%

Table 2.1 The table above shows the percentage share of types of workers in different (annual) income categories. (Source: PLFS 2019-20 and author's calculations)

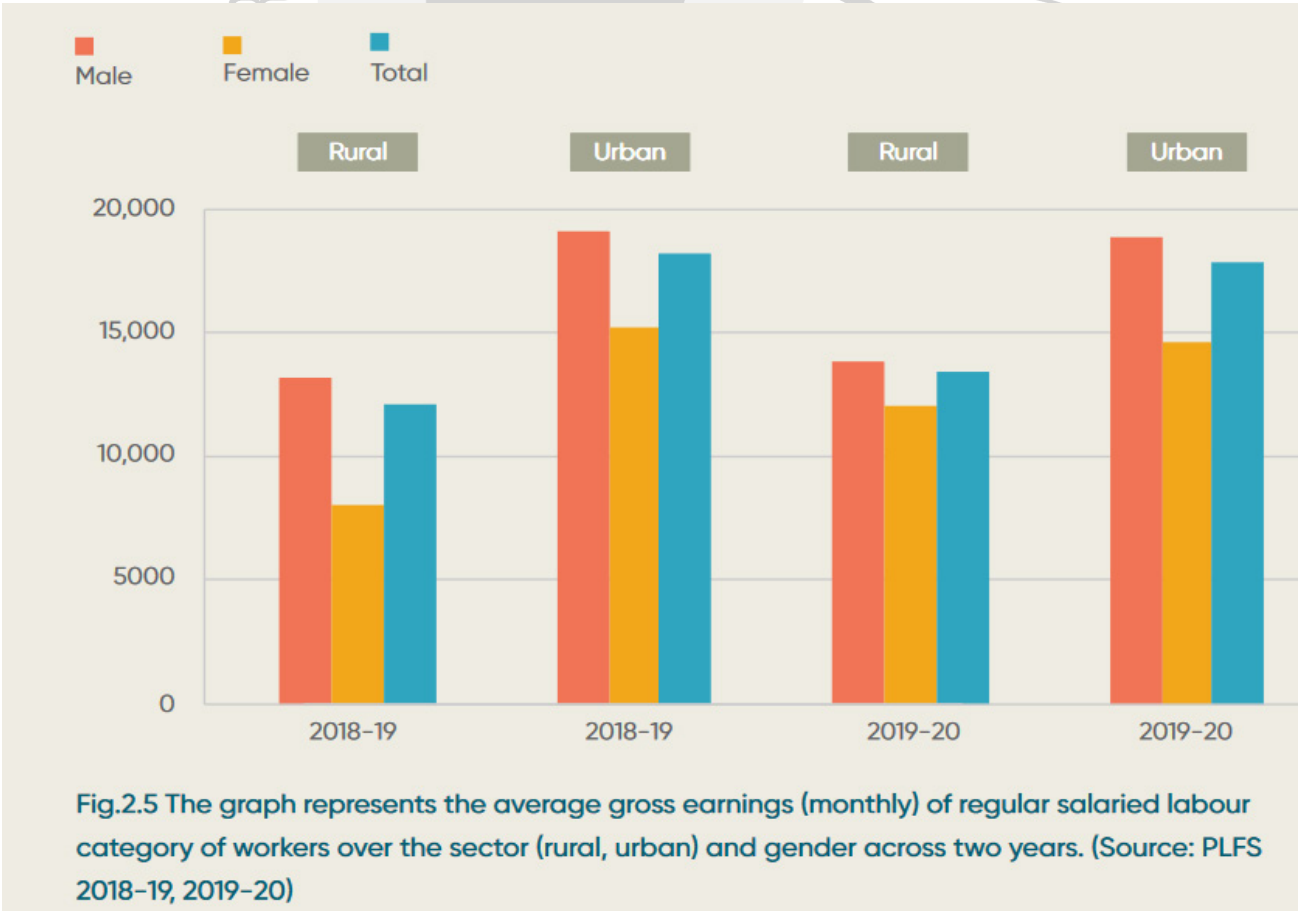

Fig.2.5 The graph represents the average gross earnings (monthly) of regular salaried labour category of workers over the sector (rural, urban) and gender across two years. (Source: PLFS 2018-19, 2019-20)

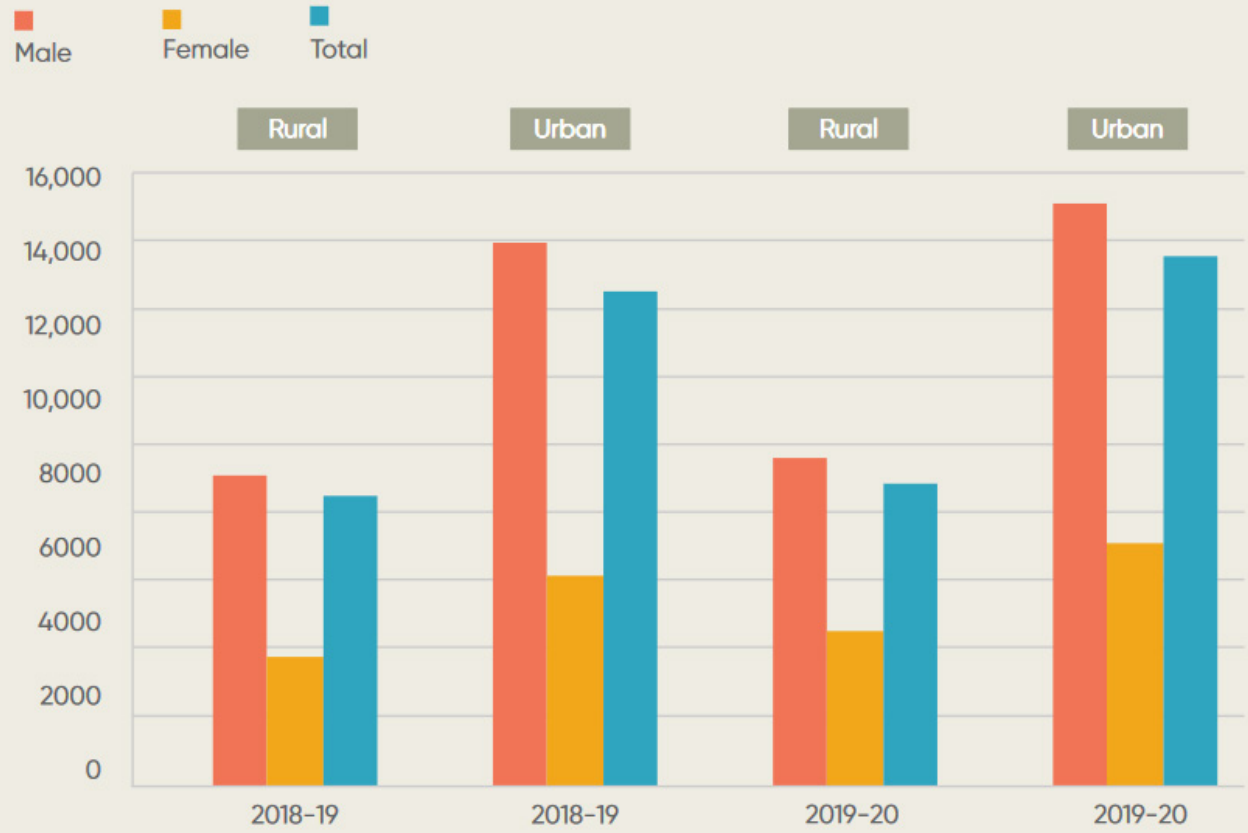

Fig. 2.6 The graph represents the average gross earnings (monthly) of self-employed labour category of workers over the sector (rural, urban) and gender across two years. (Source: PLFS 2018-19, 2019-20)

आयुष मंत्रालय ने सोवा रिग्पास पर कार्यशाला का आयोजन किया

आयुष मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, नामग्याल तिब्बत विज्ञान संस्थान (एनआईटी) के सहयोग से पूर्वोत्तर राज्यों के सोवा-रिग्पा चिकित्सकों के लिए सोवा-रिग्पा पर कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

- इस कार्यशाला में उत्तर पूर्वी राज्यों के साथ-साथ पूरे भारत से पारंपरिक सोवा-रिग्पा व्यवसायी भाग लेंगे।

सोवा रिग्पास के बारे में

- सोवा-रिग्पा जो सात आयुष प्रणालियों में से एक है, दुनिया में पारंपरिक चिकित्सा की सबसे पुरानी और अच्छी तरह से प्रलेखित प्रणालियों में से एक है।
- 'सोवा-रिग्पा' शब्द भोटी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है 'उपचार का ज्ञान'।
- यह तिब्बत, मैंगनोलिया, भूटान, चीन के कुछ हिस्सों, नेपाल, भारत के हिमालयी क्षेत्रों और पूर्व सोवियत संघ के कुछ हिस्सों आदि में लोकप्रिय रूप से प्रचलित है।
- इसे आमची के नाम से भी जाना जाता है और भारत में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और दार्जिलिंग के क्षेत्रों में लोकप्रिय है।
- प्रणाली को भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित कहा जाता है जो बाद में ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में विकसित हुआ।
- सोवा-रिग्पा का अधिकांश सिद्धांत और व्यवहार ष्आयुर्वेदष के समान है।
- सोवा-रिग्पा जंग-वा-नगा (संस्कृत: पंचमहाभूत) और नगेपा-सम (संकट: त्रिदोसा) के सिद्धांतों पर आधारित है।

RAO'S ACADEMY

- ♦ ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणियों और निर्जीव वस्तुओं के शरीर जंग-वा-नगा से बने हैं; अर्थात सा, चू, मैं, फेफड़े और नाम-खा (सं.: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)।

- सोवा-रिग्पा के अनुसार, स्वास्थ्य त्रिदोष और पांच ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं (पंचमहाबुत) के संतुलन का एक समीकरण है।
  - ♦ जिसका अर्थ है शरीर के भीतर संतुलन, पर्यावरण के साथ संतुलन, और ब्रह्मांड के साथ।
- सोवा-रिग्पा प्रथा को ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में सामंजस्यपूर्ण रूप से शामिल किया गया है।
  - ♦ इस क्षेत्र में, प्रत्येक गांव में जन स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एक आमची (सोवा-रिग्पा का व्यवसायी) परिवार है।
  - ♦ सोवा-रिग्पा विशेष रूप से आमची परिवारों में पीढ़ियों से चली आ रही है, और कुछ मामलों में गुरु से अपने शिष्य को स्थानांतरित कर दिया जाता है।
  - ♦ पिता अमची या गुरु अपने छात्र को प्रशिक्षित करते हैं और उनकी शिक्षा पूरी होने के बाद युवा अमची को एक सामुदायिक परीक्षा में शामिल होना पड़ता है।
  - ♦ परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, आमची सोवा-रिग्पा प्रथा का संरक्षक बन जाता है।

आशा - WHO के ग्लोबल हेल्थ लीडर्स अवार्ड-2022 से सम्मानित

भारत की दस लाख सभी महिला आशा कार्यकर्ताओं को 75वीं विश्व स्वास्थ्य सभा में डब्ल्यूएचओ महानिदेशक के ग्लोबल हेल्थ लीडर्स अवार्ड-2022 से सम्मानित किया गया।

- वैश्विक स्वास्थ्य को आगे बढ़ाने में उनके 'उत्कृष्ट' योगदान, क्षेत्रीय स्वास्थ्य मुद्दों के लिए नेतृत्व और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करने के लिए उन्हें डब्ल्यूएचओ द्वारा सम्मानित और सम्मानित किया गया।

प्रमुख बिंदु

- आशा कार्यकर्ताओं ने यह सुनिश्चित किया कि ग्रामीण गरीबी में रहने वाले लोग कोविड-19 महामारी के दौरान प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं तक पहुंच सकें।
- आशा ने विभिन्न स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने के लिए काम किया जैसे:
  - ♦ टीके-रोकथाम योग्य रोगों के खिलाफ बच्चों के लिए मातृ देखभाल और टीकाकरण;
  - ♦ सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल;
  - ♦ उच्च रक्तचाप और तपेदिक के लिए उपचार; तथा
  - ♦ पोषण, स्वच्छता और स्वस्थ जीवन के लिए स्वास्थ्य संवर्धन के मुख्य क्षेत्र।

मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशा) के बारे में

- आशा (जिसका हिंदी में अर्थ है आशा) भारत में 1 मिलियन से अधिक महिला स्वयंसेवक हैं।
- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के प्रमुख घटकों में से एक देश के प्रत्येक गांव को एक प्रशिक्षित महिला सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता आशा प्रदान करना है।
- गांव से ही चयनित और इसके प्रति जवाबदेह, आशा को समुदाय और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के बीच एक इंटरफेस के रूप में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

व्हाट्सएप पर डिजिलॉकर सेवाएं

सरकारी सेवाओं को सुलभ, समावेशी और सरल बनाने के लिए एक प्रमुख पहल में, MyGov ने घोषणा की कि नागरिक अब व्हाट्सएप पर MyGov हेल्पडेस्क का उपयोग करने में सक्षम होंगे।

- सरकार डिजिटल इंडिया के माध्यम से "ईज ऑफ लिविंग" के लिए काम कर रही है।

प्रमुख बिंदु

- व्हाट्सएप पर MyGov हेल्पडेस्क शासन और सरकारी सेवाओं को नागरिकों की पहुंच में सुनिश्चित करने के लिए एक बड़ा कदम है।
- MyGov हेल्पडेस्क, अब डिजिलॉकर सेवाओं से शुरू होकर एकीकृत नागरिक सहायता और कुशल शासन के लिए सेवाओं का एक सूट प्रदान करेगा।
- नई सेवा नागरिकों को अपने घरों की सुरक्षा से निम्नलिखित दस्तावेजों को आसानी और सुविधा के साथ एक्सेस करने में सक्षम बनाएगी:
  - ♦ पैन कार्ड
  - ♦ ड्राइविंग लाइसेंस
  - ♦ सीबीएसई दसवीं कक्षा उत्तीर्ण प्रमाणपत्र
  - ♦ वाहन पंजीकरण प्रमाणपत्र (आरसी)
  - ♦ बीमा पॉलिसी – दुपहिया वाहन
  - ♦ दसवीं कक्षा की मार्कशीट
  - ♦ बारहवीं कक्षा की मार्कशीट
  - ♦ बीमा पॉलिसी दस्तावेज (डिजीलॉकर पर उपलब्ध जीवन और गैर जीवन)

नोट: देश भर में व्हाट्सएप उपयोगकर्ता व्हाट्सएप नंबर +91 9013151515 पर 'नमस्ते या हाय या डिजिलॉकर' भेजकर चौटबॉट का उपयोग कर सकते हैं।

- MyGov हेल्पडेस्क को पहले MyGov कोरोना हेल्पडेस्क के नाम से जाना जाता था। इसे नागरिकों की मदद के लिए COVID के दौरान लॉन्च किया गया था।

MoHUA ने स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 लॉन्च किया

आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (MoHUA) ने स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0 के तहत स्वच्छ सर्वेक्षण (SS) – SS 2023 का आठवां संस्करण लॉन्च किया है।

- अपने ड्राइविंग दर्शन के रूप में 'अपशिष्ट से धन' की थीम के साथ डिजाइन किया गया, एसएस 2023 अपशिष्ट प्रबंधन में परिपत्र प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है।

प्रमुख बिंदु

- सर्वेक्षण में 3R के सिद्धांत को प्राथमिकता दी जाएगी – कम करें, रीसायकल करें और पुनः उपयोग करें।
- SS 2023 की थीम, जो 'वेस्ट टू वेल्थ' है।
- यह अपशिष्ट प्रबंधन में परिपत्र को बढ़ावा देने की SBMU 2.0 की प्रतिबद्धता के अनुरूप है, जो मिशन के तहत प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।
- एसएस 2023 में, निम्नलिखित को अतिरिक्त महत्व दिया गया है:
  - ♦ कचरे का स्रोत पृथक्करण,
  - ♦ अपशिष्ट उत्पादन से मेल खाने के लिए शहरों की अपशिष्ट प्रसंस्करण क्षमता में वृद्धि और
  - ♦ डम्पसाइटों में जाने वाले कचरे में कमी।
- प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से कम करने, प्लास्टिक कचरे के प्रसंस्करण, कचरे को वंडर पार्कों के लिए

प्रोत्साहित करने और शून्य अपशिष्ट घटनाओं पर जोर देने पर अतिरिक्त महत्व के साथ संकेतक पेश किए गए हैं।

- स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 के माध्यम से शहरों के भीतर वार्डों की रैंकिंग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।
- शहरों के मेयरों को रैंकिंग में भाग लेने और सबसे स्वच्छ वार्डों को सम्मानित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- उपरोक्त के अलावा, निम्नलिखित मुद्दों पर समर्पित संकेतकों पर शहरों का भी मूल्यांकन किया जाएगा:
  - ♦ 'खुला पेशाब' (पीले धब्बे) और
  - ♦ 'खुले थूकना' (लाल धब्बे), जिसका सामना शहरों को करना पड़ रहा है।
- इसके अलावा, इस वर्ष एमओएचयूए आवासीय और वाणिज्यिक क्षेत्रों की पिछली गलियों की सफाई को भी बढ़ावा दे रहा है।

स्वच्छ सर्वेक्षण के बारे में

- 2016 से MoHUA द्वारा संचालित स्वच्छ सर्वेक्षण, दुनिया का सबसे बड़ा शहरी स्वच्छता और स्वच्छता सर्वेक्षण है।
- नागरिकों को उनकी सेवा प्रदान करने में सुधार लाने और स्वच्छ शहर बनाने की दिशा में शहरों और कस्बों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- यह स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के दायरे में आयोजित किया गया है।
- इसका उद्देश्य बड़े पैमाने पर नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना और समाज के सभी वर्गों में जागरूकता पैदा करना है।
  - ♦ कस्बों और शहरों को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने की दिशा में मिलकर काम करने के महत्व के बारे में।

नोट: शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय लेता है।

- भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) को मूल्यांकन करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) 2021 रिपोर्ट

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) 2021 रिपोर्ट जारी की।

- यह स्कूली शिक्षा प्रणाली के समग्र मूल्यांकन को दर्शाता है।

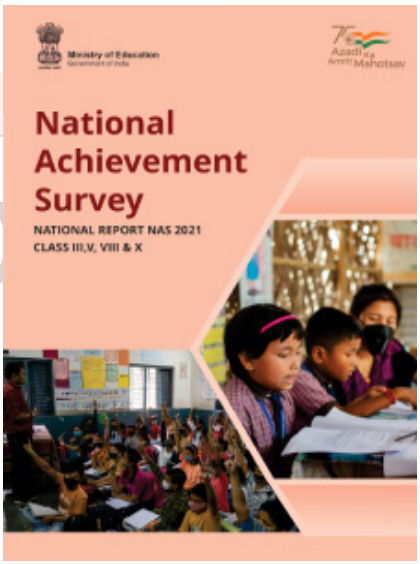

प्रमुख बिंदु

- रिपोर्ट देश में स्कूली शिक्षा प्रणाली के स्वास्थ्य का आकलन करती है।
  - ♦ तीन वर्ष की चक्र अवधि के साथ कक्षा III, V, VIII और X में बच्चों की सीखने की क्षमता का व्यापक मूल्यांकन सर्वेक्षण करना।
- पिछला एनएएस 2017 में आयोजित किया गया था।
- NAS 2021 अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किया गया था और इसमें निम्नलिखित शामिल थे:
  - ♦ सरकारी स्कूल (केंद्र सरकार और राज्य सरकार);
  - ♦ सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल; तथा
  - ♦ निजी गैर सहायता प्राप्त स्कूल।

RAO'S ACADEMY

- कवर किए गए विषय हैं:
  - ♦ कक्षा 3 और 5 के लिए भाषा, गणित और ईवीएस;
  - ♦ कक्षा 8 और 9 के लिए भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान
  - ♦ कक्षा 10 के लिए भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी।
- ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के 720 जिलों के 1.18 लाख स्कूलों के लगभग 34 लाख छात्रों ने भाग लिया है।
- राष्ट्रीय रिपोर्ट कार्ड जारी कर दिया गया है और इसे nas.gov.in पर सार्वजनिक डोमेन में डाल दिया गया है।
- NAS 2021 का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली की दक्षता के संकेतक के रूप में बच्चों की प्रगति और सीखने की क्षमता का मूल्यांकन करना है।
  - ♦ ताकि विभिन्न स्तरों पर उपचारात्मक कार्रवाइयों के लिए उचित कदम उठाए जा सकें।
- यह सीखने में अंतराल को दूर करने में मदद करेगा।

यह सीखने के स्तर में सुधार के लिए दीर्घकालिक, मध्य-अवधि और अल्पकालिक हस्तक्षेप विकसित करने में राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों का भी समर्थन करेगा।

- यह राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण सीबीएसई द्वारा एक ही समय में एक ही दिन में प्रशासित किया गया था।
- सर्वेक्षण का प्रबंधन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) द्वारा डिजाइन और विकसित प्रौद्योगिकी मंच के माध्यम से किया गया था।

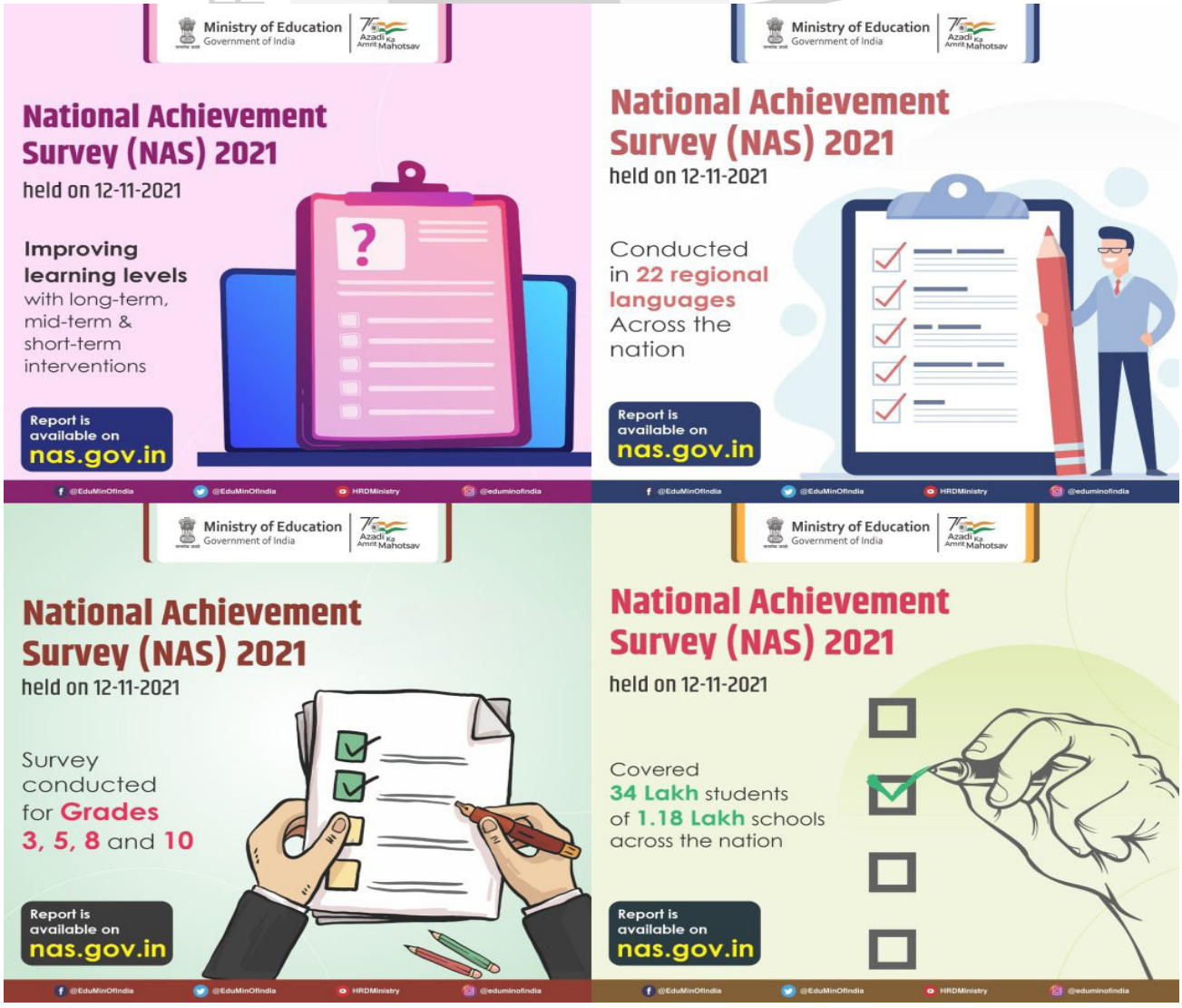

जल जीवन मिशन ने 50 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की

देश ने नल के पानी के कनेक्शन तक पहुंच वाले 50% ग्रामीण परिवारों का मील का पत्थर हासिल कर लिया है।

- गोवा, तेलंगाना, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, डीएंडएन हवेली और दमन और दीव, पुडुचेरी और हरियाणा ने पहले ही 100% घरेलू कनेक्शन हासिल कर लिए हैं।

प्रमुख बिंदु

- राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में फैले 9.59 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को उनके परिसरों में पानी मिल रहा है।
- पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश और बिहार में 90% से अधिक का कवरेज है और वे 'हर घर जल' का दर्जा हासिल करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।
- 2019 में जल जीवन मिशन की शुरुआत के समय, केवल 3.23 करोड़ घरों यानी 17% ग्रामीण आबादी के पास नल के माध्यम से पीने का पानी था।

जल जीवन मिशन के बारे में

जल जीवन मिशन की परिकल्पना ग्रामीण भारत के सभी घरों में 2024 तक व्यक्तिगत घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने के लिए की गई है।

- कार्यक्रम अनिवार्य तत्वों के रूप में स्रोत स्थिरता उपायों को भी लागू करेगा, जैसे:
  - ♦ धूसर जल प्रबंधन, जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन आदि के माध्यम से पुनर्भरण और पुनः उपयोग।
- जल जीवन मिशन पानी के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण पर आधारित होगा।
- इसे पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, जलशक्ति मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है।

जेजेएम के तहत घटक

निम्नलिखित घटक जेजेएम के अंतर्गत समर्थित हैं:

- विभिन्न स्रोतों/कार्यक्रमों से धन प्राप्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए और अभिसरण कुंजी है।
- प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल के पानी का कनेक्शन उपलब्ध कराने के लिए गांव में पाइप से जलापूर्ति के बुनियादी ढांचे का विकास।
- जल आपूर्ति प्रणाली की दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान करने के लिए विश्वसनीय पेयजल स्रोतों का विकास और/या मौजूदा स्रोतों का संवर्धन।
- जहां कहीं आवश्यक हो, प्रत्येक ग्रामीण परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए थोक जल अंतरण, उपचार संयंत्र और वितरण नेटवर्क।
- दूषित पदार्थों को हटाने के लिए तकनीकी हस्तक्षेप जहां पानी की गुणवत्ता एक मुद्दा है।
- ग्रेवाटर प्रबंधन।

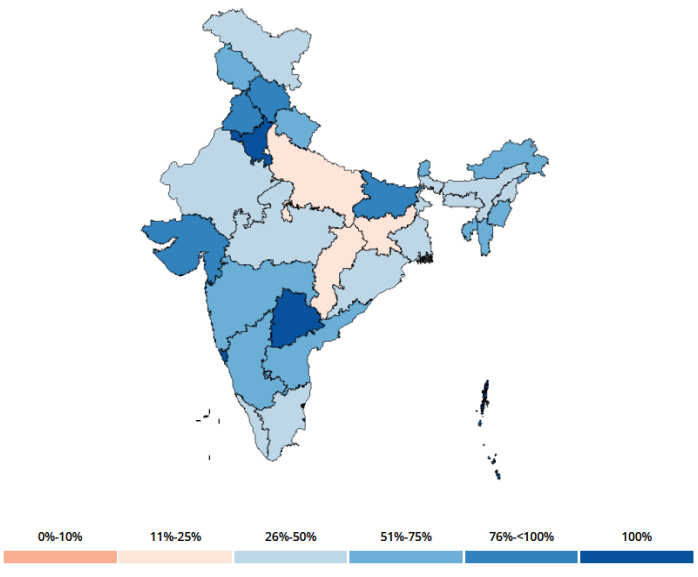

इमेज में: राज्यों में नल के पानी की उपलब्धता दिखाने वाला नक्शा।

NHA ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के लिए ऑनलाइन सार्वजनिक डैशबोर्ड लॉन्च किया

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) की अपनी प्रमुख योजना के तहत योजना पर वास्तविक समय की जानकारी के लिए एक सार्वजनिक डैशबोर्ड लॉन्च किया है।

- एबीडीएम सार्वजनिक डैशबोर्ड मिशन के तहत मुख्य रजिस्ट्रियों पर विस्तृत जानकारी प्रदर्शित करता है।

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के बारे में

- आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) का उद्देश्य देश के एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य ढांचे का समर्थन करने के लिए आवश्यक रीढ़ की हड्डी का विकास करना है।
- यह डिजिटल राजमार्गों के माध्यम से हेल्थकेयर पारिस्थितिकी तंत्र के विभिन्न हितधारकों के बीच मौजूदा अंतर को पाटेगा।

एबीडीएम घटक

- आभा संख्या:
  - ♦ आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (ABHA) नंबर स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से एक्सेस करने और साझा करने का एक परेशानी मुक्त तरीका है।
  - ♦ यह भाग लेने वाले स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ बातचीत को सक्षम बनाता है।

यह उपयोगकर्ता को सत्यापित स्वास्थ्य पेशेवरों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं से डिजिटल लैब रिपोर्ट, नुस्खे और निदान को मूल रूप से प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

- स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर रजिस्ट्री (HPR)
  - ♦ यह चिकित्सा की आधुनिक और पारंपरिक दोनों प्रणालियों में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण में शामिल सभी स्वास्थ्य पेशेवरों का एक व्यापक भंडार है।
  - ♦ हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स रजिस्ट्री में नामांकन करने से वे भारत के डिजिटल हेल्थ इकोसिस्टम से जुड़ने में सक्षम होंगे।
- स्वास्थ्य सुविधा रजिस्ट्री (HFR)
  - ♦ यह चिकित्सा की विभिन्न प्रणालियों में राष्ट्र की स्वास्थ्य सुविधाओं का एक व्यापक भंडार है।
  - ♦ इसमें अस्पतालों, क्लीनिकों, नैदानिक प्रयोगशालाओं और इमेजिंग केंद्रों, फार्मेसियों आदि सहित सार्वजनिक और निजी दोनों स्वास्थ्य सुविधाएं शामिल हैं।
- एकीकृत स्वास्थ्य इंटरफेस (यूएचआई)
  - ♦ UHI को विभिन्न डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक खुले प्रोटोकॉल के रूप में देखा गया है।
  - ♦ यूएचआई नेटवर्क एंड यूजर एप्लिकेशन (ईयूए) और भाग लेने वाले स्वास्थ्य सेवा प्रदाता (एचएसपी) अनुप्रयोगों का एक खुला नेटवर्क होगा।
  - ♦ यूएचआई मरीजों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं (एचएसपी) के बीच अपॉइंटमेंट बुकिंग, टेलीकंसल्टेशन, सर्विस डिस्कवरी और अन्य सहित विभिन्न प्रकार की डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को सक्षम करेगा।

नोट: एनएचए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के कार्यान्वयन का नेतृत्व कर रहा है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) के बारे में

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) "आयुष्मान भारत प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना" नामक भारत की प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य बीमा/आश्वासन योजना को लागू करने के लिए जिम्मेदार शीर्ष निकाय है।

RAO'S ACADEMY

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसी का उत्तराधिकारी है।
- यह पूर्ण कार्यात्मक स्वायत्तता के साथ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का एक संलग्न कार्यालय है।
- एनएचए का संचालन केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री की अध्यक्षता में एक शासी बोर्ड द्वारा किया जाता है।
- इसका नेतृत्व एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) करता है, जो भारत सरकार के सचिव स्तर का एक अधिकारी है, जो इसके मामलों का प्रबंधन करता है।
- राज्य स्तर पर योजना को लागू करने के लिए संबंधित राज्यों द्वारा एक सोसाइटी/ट्रस्ट के रूप में राज्य स्वास्थ्य एजेंसियों (एसएचए) की स्थापना की गई है।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी)

पीएमईजीपी को अब 2021-22 से 2025-26 तक पांच साल के लिए 15वें वित्त आयोग चक्र पर जारी रखने की मंजूरी दी गई है।

पीएमईजीपी के बारे में: पृष्ठभूमि

- भारत सरकार ने प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) नामक एक नए क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी कार्यक्रम की शुरूआत को मंजूरी दी थी।
- यह उन दो योजनाओं को मिलाकर किया गया जो 31.03.2008 तक प्रचालन में थीं।
  - ♦ प्रधानमंत्री रोजगार योजना (PMRY) और ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (REGP)।
- PMEGP सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MoMSME) द्वारा प्रशासित एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।

- राष्ट्रीय स्तर पर, योजना खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा कार्यान्वित की जा रही है।
  - ♦ केवीआईसी एकल नोडल एजेंसी के रूप में एमएसएमई मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में एक सांविधिक संगठन है।
- राज्य स्तर पर, योजना राज्य केवीआईसी निदेशालयों, जिला उद्योग केंद्रों (डीआईसी) और बैंकों के माध्यम से लागू की जाएगी।
- योजना के तहत सरकारी सब्सिडी केवीआईसी द्वारा चिन्हित बैंकों के माध्यम से लाभार्थियों को अंतिम वितरण के लिए भेजी जाती है।
- उद्देश्य:
  - ♦ देश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सतत और स्थायी रोजगार के अवसर पैदा करना
  - ♦ सूक्ष्म क्षेत्र में उच्च ऋण प्रवाह के लिए वित्तीय संस्थानों की भागीदारी को सुगम बनाना।
- पात्रता:
  - ♦ 18 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति
  - ♦ आठवीं कक्षा निर्माण में 10.00 लाख रुपये से अधिक और रुपये से ऊपर की परियोजना के लिए पास आवश्यक है। सेवा क्षेत्र के लिए 5.00 लाख
  - ♦ स्वयं सहायता समूह और चौरिटेबल ट्रस्ट
  - ♦ सोसायटी पंजीकरण अधिनियम- 1860 के तहत पंजीकृत संस्थाएं

RAO'S ACADEMY

- ♦ उत्पादन आधारित सहकारी समितियां
- सहायता की प्रकृति:
  - ♦ निर्माण क्षेत्र में स्वीकार्य परियोजना/इकाई की अधिकतम लागत रु.25 लाख है और व्यवसाय/सेवा क्षेत्र में रु.10 लाख है।

पीएमईजीपी के बारे में: परिवर्तन

मौजूदा योजना में निम्नलिखित प्रमुख संशोधन/सुधार किए गए हैं:

- निर्माण इकाइयों के लिए अधिकतम परियोजना लागत 25 लाख रुपये से बढ़ाकर 50 लाख रुपये और सेवा इकाइयों के लिए 10 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये करना।
- सभी कार्यान्वयन एजेंसियों को ग्रामीण या शहरी श्रेणी के बावजूद सभी क्षेत्रों में आवेदन प्राप्त करने और संसाधित करने की अनुमति है।
- पंचायती राज संस्थाओं के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों को ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत, जबकि नगर पालिका के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों को शहरी क्षेत्र के रूप में माना जाएगा।
- आकांक्षी जिलों और ट्रांसजेंडर के तहत पीएमईजीपी आवेदकों को विशेष श्रेणी के आवेदकों के रूप में माना जाएगा और उच्च सब्सिडी के लिए पात्र होंगे।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) ने रैलियों का आयोजन किया, नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया, पर्चे बांटे और जनता को तंबाकू से दूर रहने के लिए जागरूक करने के लिए सभी उपलब्ध साधनों का इस्तेमाल किया।

- इस वर्ष विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम "तंबाकू: हमारे पर्यावरण के लिए खतरा" है।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के बारे में

- विश्व स्वास्थ्य संगठन के सदस्य राज्यों ने 1987 में विश्व तंबाकू निषेध दिवस बनाया।
- यह तंबाकू महामारी और इससे होने वाली रोके जा सकने वाली मृत्यु और बीमारी की ओर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था।
- 1987 में, विश्व स्वास्थ्य सभा ने WHA40.38 प्रस्ताव पारित किया, जिसमें 7 अप्रैल 1988 को "एक विश्व धूम्रपान निषेध दिवस" कहा गया।
- 1988 में, WHA42.19 प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें हर साल 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाने का आह्वान किया गया था।
- तंबाकू उद्योग का पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव व्यापक और बढ़ रहा है।

यह हमारे ग्रह के पहले से ही दुर्लभ संसाधनों और नाजुक पारिस्थितिक तंत्र पर अनावश्यक दबाव डालता है।

- तंबाकू हर साल 8 मिलियन से अधिक लोगों की जान लेता है और हमारे पर्यावरण को नष्ट कर देता है, जिससे मानव स्वास्थ्य को और नुकसान पहुंचता है।
- दुनिया भर में, 13 से 15 वर्ष की आयु के कम से कम 14 मिलियन युवा वर्तमान में तंबाकू उत्पादों का उपयोग करते हैं।

RAO'S ACADEMY
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

श्रेष्ठ योजना

सरकार ने SHRESHTA (लक्षित क्षेत्रों में उच्च विद्यालयों में छात्रों के लिए आवासीय शिक्षा) नामक एक नई योजना को मंजूरी दी है।

- योजना का उद्देश्य देश के सर्वश्रेष्ठ निजी आवासीय विद्यालयों में मेधावी अनुसूचित जाति के लड़के और लड़कियों के लिए सीटें उपलब्ध कराना है।

प्रमुख बिंदु

- हर साल इस योजना के तहत कक्षा 9 और कक्षा 11 में प्रवेश के लिए लगभग 3000 छात्रों का चयन होने की उम्मीद है।
- "अनुसूचित जातियों के लिए काम कर रहे स्वैच्छिक और अन्य संगठनों को सहायता अनुदान" की पूर्ववर्ती केंद्रीय क्षेत्र की योजना को 1.4.2015 से संशोधित किया गया है। 2021-22 श्रेष्ठ के रूप में।
- कार्यान्वयन एजेंसी: सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
- छात्रों के लिए स्कूल शुल्क और छात्रावास शुल्क को कवर करने वाले स्कूलों को अनुदान सीधे वितरित किया जाता है।
- योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए छात्रों को राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन करना होगा।
- प्रवेश परीक्षा - श्रेष्ठ (एनईटीएस) राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित की जाती है।
- यह योजना केवल अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए है जिनके माता-पिता की वार्षिक आय रुपये तक है। 2.5 लाख।
- केवल वे उम्मीदवार जो दिए गए शैक्षणिक सत्र में आठवीं/दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण हैं या उपस्थित हो रहे हैं, वे कक्षा IX/XI में प्रवेश लेने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के साथ एकीकृत 'ई-संजीवनी'

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) ने अपनी प्रमुख योजना - आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के साथ ई-संजीवनी के सफल एकीकरण की घोषणा की।

- ई-संजीवनी के उपयोगकर्ता अब अपना 14 अंकों का अद्वितीय आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (ABHA) बना सकते हैं और इसका उपयोग अपने मौजूदा स्वास्थ्य रिकॉर्ड को जोड़ने के लिए कर सकते हैं।

प्रमुख बिंदु

- उपयोगकर्ता ई-संजीवनी पर अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डॉक्टरों के साथ साझा करने में भी सक्षम होंगे।

यह बेहतर नैदानिक निर्णय लेने और देखभाल की निरंतरता सुनिश्चित करने में मदद करेगा।

- एबीडीएम का लक्ष्य भारत में मौजूदा डिजिटल स्वास्थ्य समाधानों और हितधारकों के बीच की खाई को पाटने के लिए डिजिटल राजमार्गों का निर्माण करना है।
- एबीडीएम के साथ ई-संजीवनी का एकीकरण ऐसा ही एक उदाहरण है।
- 22 करोड़ आभा धारक अब ई-संजीवनी के माध्यम से बनाए गए अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को सीधे अपनी पसंद के हेल्थ लॉकर में लिंक और स्टोर कर सकते हैं।
- उपयोगकर्ता ई-संजीवनी पर अपने पहले से जुड़े स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डॉक्टरों के साथ साझा कर सकते हैं, जिससे परामर्श प्रक्रिया पूरी तरह से कागज रहित हो जाएगी।

ई संजीवनी के बारे में

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की राष्ट्रीय दूरसंचार सेवा (ई-संजीवनी) देश की सरकार द्वारा अपने नागरि. कों को दी जाने वाली अपनी तरह की पहली ऑनलाइन ओपीडी सेवा है।

RAO'S ACADEMY
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

- 'ईसंजीवनी', एक वेब आधारित व्यापक टेलीमेडिसिन समाधान है।
- यह 'संजीवनी' सीडीएसी मोहाली के प्रमुख एकीकृत टेलीमेडिसिन समाधान पर आधारित है।
- 'ई-संजीवनी' ग्रामीण क्षेत्रों और अलग-थलग पड़े समुदायों दोनों में विशेष स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच का विस्तार करती है।
- इसका उद्देश्य मरीजों को उनके घरों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है।
- अस्पताल में एक डॉक्टर और अपने घर की सीमा में एक मरीज के बीच सुरक्षित और संरचित वीडियो आधारित नैदानिक परामर्श को सक्षम किया जा रहा है।
- चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने के अलावा, यह असमान वितरण और बुनियादी ढांचे के साथ-साथ मानव संसाधनों की कमी से संबंधित मुद्दों को भी संबोधित करता है।
- ई-संजीवनी का उद्देश्य शहरी बनाम ग्रामीण, अमीर बनाम गरीब आदि के बीच मौजूद डिजिटल विभाजन को पाटकर स्वास्थ्य सेवाओं को न्यायसंगत बनाना है।
- ई-संजीवनी का उपयोग इंटर्न, विभिन्न सामान्य सेवा केंद्रों (सीएससी) आदि के लोगों को चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने के लिए भी किया जा सकता है।
- ई-संजीवनी सेवा दो प्रकारों में उपलब्ध है।
- पहला है eSanjeevani Ayushman Bharat-Health and Wellness Centre (AB-HWC) - डॉक्टर-टू-डॉक्टर टेलीमेडिसिन सेवा।
  - ♦ इसके माध्यम से एचडब्ल्यूसी में जाने वाले लाभार्थी हब में डॉक्टरों/विशेषज्ञों से वस्तुतः जुड़ सकते हैं।
  - ♦ यह हब तृतीयक स्वास्थ्य सुविधा/अस्पताल/मेडिकल कॉलेज में हो सकता है।
  - ♦ यह सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों और पृथक समुदायों में सामान्य और विशिष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाता है
- दूसरा संस्करण, ई-संजीवनी ओपीडी देश भर में मरीजों की सेवा कर रहा है, उन्हें सीधे डॉक्टरों से उनके घरों के आराम से जोड़ रहा है।
- दोनों संस्करण - eSanjeevani AB-HWC और eSanjeevani OPD को ABDM प्लेटफॉर्म के साथ एकीकृत किया गया है।

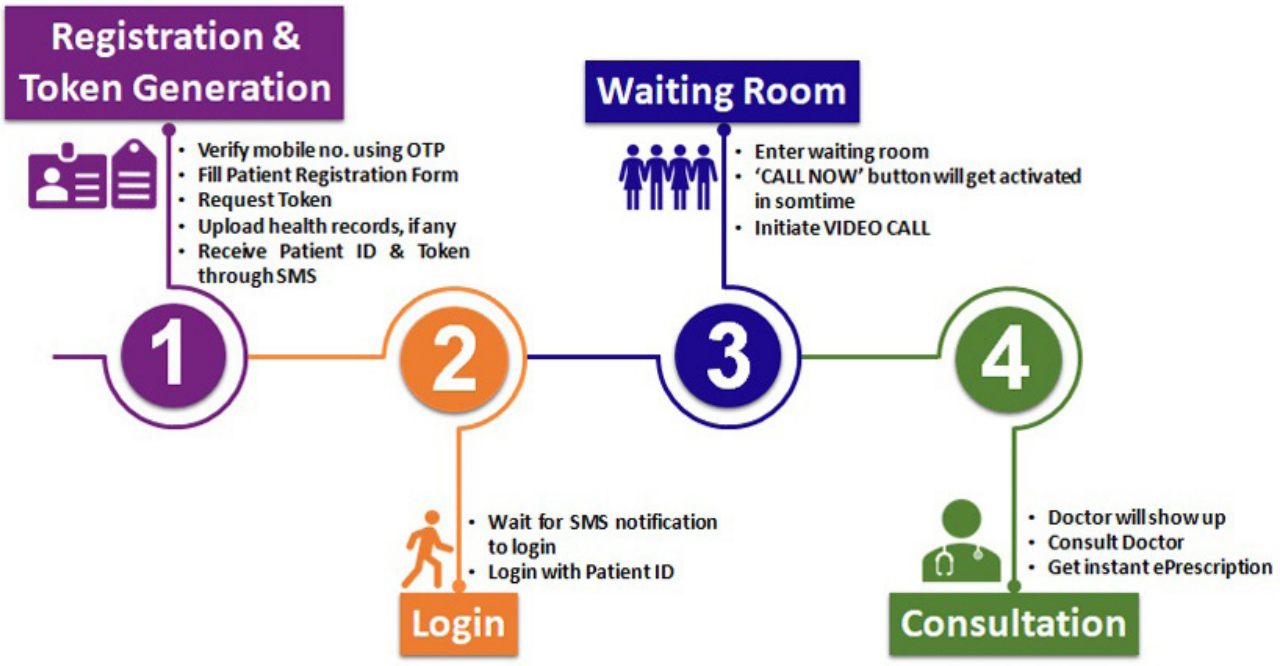

चौथा राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक

केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) का चौथा राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक (SFSI) जारी किया।

- इसका उद्देश्य खाद्य सुरक्षा के पांच मानकों में राज्यों के प्रदर्शन को मापना है।

The State Food Safety Index ranks States/UTs annually on five parameters of food safety through rigorous evaluation process.

प्रमुख बिंदु

- एसएफएसआई की शुरुआत 2018-19 से देश में खाद्य सुरक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में प्रतिस्पर्धी और सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से की गई थी।
- सूचकांक हमारे नागरिकों को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने में मदद करेगा।
- खाद्य सुरक्षा मानकों को मोटे तौर पर निम्नलिखित 5 महत्वपूर्ण कारकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है:
  - ♦ मानव संसाधन और संस्थागत डेटा (20% वेटेज के साथ)
  - ♦ अनुपालन (30% वेटेज के साथ)
  - ♦ खाद्य परीक्षण- अवसंरचना और निगरानी (20% वेटेज के साथ)
  - ♦ प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण (10% वेटेज के साथ)
  - ♦ उपभोक्ता अधिकारिता (20% वेटेज के साथ)
- राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए 3 श्रेणियों नामत: बड़े राज्यों, छोटे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में वर्गीकृत किया गया है।
- इस वर्ष, बड़े राज्यों में, तमिलनाडु शीर्ष रैंकिंग वाला राज्य था, उसके बाद गुजरात और महाराष्ट्र थे।
- छोटे राज्यों में, गोवा पहले स्थान पर रहा, उसके बाद मणिपुर और सिक्किम का स्थान रहा।
- केंद्र शासित प्रदेशों में, जम्मू और कश्मीर, दिल्ली और चंडीगढ़ ने पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया।

आयुष संस्थान को मिला एनएबीएल प्रत्यायन

पंचकर्म के लिए राष्ट्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (एनएआरआईपी), चेरुथुरुथी, केरल के जैव रसायन और विकृति विभाग को एनएबीएल एम (ईएल) टी प्रत्यायन मिला है।

- अपनी नैदानिक प्रयोगशाला सेवाओं के लिए एनएबीएल प्रत्यायन प्राप्त करने वाला सीसीआरएएस के तहत यह पहला संस्थान है।

प्रमुख बिंदु

- 'एनएबीएल मेडिकल (एंट्री लेवल) टेस्टिंग लैब्स' का सर्टिफिकेट नारिप- बायोकेमिस्ट्री एंड पैथोलॉजी विभाग को जारी कर दिया गया है।
- प्रयोगशाला की यह मान्यता सुनिश्चित करती है कि नागरिकों को विशेष रूप से गांवों, छोटे शहरों में रहने वाले लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवा मिले।
- एक आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के रूप में, इस मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला से जारी वैज्ञानिक डेटा वैज्ञानिक समुदायों के बीच इसकी सटीकता और सटीकता के लिए विश्वास और विश्वास प्रदान करता है।

RAO'S ACADEMY

NARIP के बारे में

- नारिप, केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत प्रमुख अनुसंधान संस्थानों में से एक है।
- संस्थान 21 जून, 1971 को शुरू किया गया था।
- संस्थान में एक फार्मेसी है जो न केवल संस्थान की आवश्यकताओं को पूरा करती है बल्कि अन्य संस्थानों/इकाइयों को दवाएं भी उपलब्ध कराती है।
- संस्थान की गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला यह सुनिश्चित करती है कि फार्मेसी में प्रस्तावित दवाएं निर्धारित मानकों के अनुसार हैं।

NABL के बारे में

परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (NABL) एक मान्यता निकाय है, जिसकी मान्यता प्रणाली ISO / IEC 17011 के अनुसार स्थापित है।

- एनएबीएल भारत में अनुरूपता मूल्यांकन निकायों को प्रत्यायन प्रदान करता है।
- एनएबीएल स्व-वित्तपोषित है और परिचालन लागत और अन्य व्यय को कवर करने के लिए अनुरूपता मूल्यांकन निकायों से शुल्क लेता है।
- एनएबीएल गैर-भेदभावपूर्ण तरीके से प्रत्यायन सेवाएं प्रदान करता है।

बाल स्वराज पोर्टल के तहत सीआईएस आवेदन

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने बाल स्वराज पोर्टल के तहत एक ष्सीआईएसएस एप्लिकेशनष लॉन्च किया है।

- इसका उद्देश्य सड़क पर बच्चों के पुनर्वास की प्रक्रिया (सीआईएसएसएस) में मदद करना है।

प्रमुख बिंदु

- बाल स्वराज देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता वाले बच्चों की ऑनलाइन ट्रैकिंग और डिजिटल रीयल-टाइम निगरानी तंत्र के लिए एनसीपीसीआर द्वारा शुरू किया गया एक पोर्टल है।
- पोर्टल के दो कार्य हैं- COVID केयर और ब्यै।
- COVID केयर लिंक उन बच्चों की सेवा करता है, जिन्होंने मार्च 2020 के बाद COVID-19 या अन्यथा के कारण माता-पिता में से किसी एक को या दोनों को खो दिया है।
- सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से सड़क स्थितियों में बच्चों का डेटा प्राप्त करने के लिए सीआईएसएस एप्लिकेशन का उपयोग किया जाता है।
  - ♦ तब डेटा का उपयोग उनके बचाव और पुनर्वास प्रक्रिया पर नजर रखने के लिए किया जाता है।
- यह पहल भारत के सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशन में की गई है।
- मंच डेटा एकत्र करने और जिला बाल संरक्षण अधिकारी (डीसीपीओ) को आवश्यक कार्रवाई करने के लिए रिपोर्ट करने का कार्य करता है।
- स्ट्रीट सिचुएशन में बच्चों की देखभाल और सुरक्षा

के लिए मानक संचालन प्रक्रिया 2.0 किसी भी बच्चे को 'चिल्ड्रन इन स्ट्रीट सिचुएशन' के तहत वर्गीकृत करती है यदि:

- ♦ बच्चा अकेला सड़कों पर रह रहा है,
- ♦ दिन में सड़कों पर रहना, या

परिवार के साथ सड़कों पर रह रहे हैं।

- इस घटना का मूल कारण बेहतर जीवन स्तर की तलाश में परिवारों का ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन है।
- यह पेशेवरों और संगठनों को जरूरतमंद बच्चों को कोई भी मदद प्रदान करने के लिए एक मंच भी प्रदान करता है।
- खुले आश्रयों, परामर्श सेवाओं, चिकित्सा सेवाओं, प्रायोजनों, नशामुक्ति सेवाओं, शिक्षा सेवाओं आदि के रूप में सहायता प्रदान की जा सकती है।
- मंच का उपयोग करने वाले संगठन और संस्थान निम्नलिखित हैं:
  - ♦ गैर सरकारी संगठन,
  - ♦ सिविल सोसायटी संगठन,
  - ♦ उच्च शिक्षा या तकनीकी संस्थान, फाउंडेशन, सोसाइटी या कोई ट्रस्ट।

भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम पर दिशानिर्देश

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने 'भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम के लिए दिशानिर्देश और भ्रामक विज्ञापनों के समर्थन, 2022' को अधिसूचित किया है।

- दिशा-निर्देशों का उद्देश्य भ्रामक विज्ञापनों पर अंकुश लगाना और ऐसे विज्ञापनों से प्रभावित या शोषित होने वाले उपभोक्ताओं की रक्षा करना है।

प्रमुख बिंदु

- दिशानिर्देश यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि उपभोक्ताओं को निराधार दावों, अतिरंजित वादों और गलत सूचनाओं के साथ मूर्ख नहीं बनाया जा रहा है।
- सीसीपीए को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की धारा 18 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिशानिर्देशों को अधिसूचित किया गया
- भ्रामक विज्ञापन को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की धारा 2(28) के तहत पहले ही परिभाषित किया जा चुका है।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) के बारे में

प्राधिकरण का गठन उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की धारा 10(1) के तहत किया गया था।

- अधिनियम ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 का स्थान लिया और उपभोक्ता की चिंताओं को दूर करने के लिए इसके दायरे को विस्तृत करने का प्रयास किया।
- केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) का उद्देश्य एक वर्ग के रूप में उपभोक्ताओं के अधिकारों को बढ़ावा देना, उनकी रक्षा करना और उन्हें लागू करना है।
- इसे निम्नलिखित कार्रवाई करने का अधिकार है:
  - ♦ उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन की जांच करना और शिकायत/अभियोजन स्थापित करना,

- ♦ असुरक्षित वस्तुओं और सेवाओं को वापस बुलाने का आदेश देना,
- ♦ अनुचित व्यापार प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापनों को बंद करने का आदेश,
- ♦ भ्रामक विज्ञापनों के निर्माताओं/प्रदर्शकों/प्रकाशकों पर दंड लगाना।

- प्राधिकरण उपभोक्ता मामले विभाग के अंतर्गत आता है।

वर्ल्ड ऑफ वर्क समिट

केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री ने जिनेवा में वर्ल्ड ऑफ वर्क समिट में भाग लिया।

- चर्चा का विषय "कई वैश्विक संकटों से निपटना: मानव केंद्रित सुधार और लचीलापन को बढ़ावा देना" था।

प्रमुख बिंदु

- शिखर सम्मेलन में चर्चा हुई कि मानव-केंद्रित दृष्टिकोणों के साथ भोजन, ऊर्जा और वित्तीय संकटों के श्रम और सामाजिक परिणामों से कैसे निपटा जाए
- शिखर सम्मेलन 110वें अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के दौरान आयोजित किया गया था।
- चर्चा में कई चुनौतियों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया, जिनका सामना काम की दुनिया कर रही है जैसे:
    - ♦ बिगड़ती असमानताएं, जनसांख्यिकीय वास्तविकताएं, असमान तकनीकी प्रगति, अनौपचारिकता और जलवायु परिवर्तन।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के बारे में

- ILO की व्यापक नीतियां अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन द्वारा निध रित की जाती हैं, जो जून में एक बार जून में जिनेवा, स्विट्जरलैंड में मिलती है।
- यह वार्षिक सम्मेलन ILO सदस्य राज्यों की सरकारों, श्रमिकों और नियोक्ता के प्रतिनिधियों को एक साथ लाता है।
- अक्सर श्रम की अंतर्राष्ट्रीय संसद कहा जाता है, यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय श्रम मानकों को स्थापित और अपनाता है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के बारे में

एकमात्र त्रिपक्षीय संयुक्त राष्ट्र एजेंसी, 1919 के बाद से ILO 187 सदस्य राज्यों की सरकारों, नियोक्ताओं और श्रमिकों को एक साथ लाता है।

- ILO की स्थापना 1919 में वर्साय की संधि के हिस्से के रूप में की गई थी, जिसने प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त कर दिया था।
- 1946 में, ILO संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी बन गया।
- यह श्रम मानकों को निर्धारित करने, नीतियों को विकसित करने और सभी महिलाओं और पुरुषों के लिए अच्छे काम को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम तैयार करने के लिए काम करता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

7 अंतरराष्ट्रीय संबंध

8वीं ब्रिक्स पर्यावरण मंत्रियों की बैठक

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री ने 8वीं ब्रिक्स पर्यावरण मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

- बैठक वस्तुतः चीन जनवादी गणराज्य की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।
- बैठक का विषय "उच्च गुणवत्ता वाली ब्रिक्स साझेदारी को बढ़ावा देना, वैश्विक विकास के लिए एक नए युग की शुरुआत" था।

निवेश प्रोत्साहन समझौता

भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने टोक्यो, जापान में एक निवेश प्रोत्साहन समझौते (IIA) पर हस्ताक्षर किए हैं।

- यह IIA वर्ष 1997 में भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के बीच हस्ताक्षरित निवेश प्रोत्साहन समझौते का स्थान लेता है।

प्रमुख बिंदु

- DFC द्वारा प्रस्तावित अतिरिक्त निवेश सहायता कार्यक्रमों जैसे ऋण, इक्विटी निवेश, निवेश गारंटी आदि के साथ तालमेल रखने के लिए IIA पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- यह उम्मीद की जाती है कि IIA पर हस्ताक्षर करने से भारत में DFC द्वारा प्रदान की जाने वाली निवेश सहायता में वृद्धि होगी, जिससे भारत के विकास में और मदद मिलेगी।

नोट: DFC संयुक्त राज्य अमेरिका सरकार की एक विकास वित्त एजेंसी है, जो पूर्ववर्ती विदेशी निजी निवेश निगम (OPIC) की उत्तराधिकारी एजेंसी है।

इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क

भारत के प्रधान मंत्री ने टोक्यो में एक कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें समृद्धि के लिए इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF) लॉन्च किया गया था।

- यह पहली बार अक्टूबर 2021 पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा शुरू किया गया था।

IPEF क्या है?

- भारत इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी (आईपीईएफ) का हिस्सा बनने के लिए सहमत हुआ, जो अमेरिका के नेतृत्व वाला एक आर्थिक समूह है, जिसमें अमेरिका सहित 13 देश शामिल हैं।
- IPEF में ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, भारत, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम शामिल हैं।
- 10 में से सात आसियान देश परामर्श में शामिल होने के लिए सहमत हुए।
  - ♦ सात आसियान देश हैं: ब्रुनेई, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम।
  - ♦ चार क्वाड देश, भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया स्वाभाविक रूप से इसका एक हिस्सा हैं, इसके बाद न्यूजीलैंड और दक्षिण कोरिया हैं।

YOUR SUCCESS IS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- सभी 13 पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के सदस्य हैं और भारत और अमेरिका को छोड़कर, सभी क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) में भी हैं।
- इन देशों का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 40 प्रतिशत का योगदान है।
- आर्थिक ढांचा मोटे तौर पर चार स्तंभों पर टिका है:
  - ♦ व्यापार,
  - ♦ आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन,
  - ♦ स्वच्छ ऊर्जा और डीकार्बोनाइजेशन, और
  - ♦ कर और भ्रष्टाचार विरोधी उपाय।
- यू.एस. व्यापार प्रतिनिधि (USTR) व्यापार स्तंभ का नेतृत्व करेंगे।
- अन्य (यानी, आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन, स्वच्छ ऊर्जा और डीकार्बोनाइजेशन, और कर और भ्रष्टाचार विरोधी उपाय) यू.एस. वाणिज्य विभाग के दायरे में आएंगे।
- व्यापार के मोर्चे पर, प्रयास "उच्च-मानक, समावेशी, मुक्त और निष्पक्ष-व्यापार प्रतिबद्धताओं" को स्थापित करना है।
- आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन के संबंध में-
  - ♦ ढांचा प्रमुख कच्चे और प्रसंस्कृत सामग्री, अर्धचालक, महत्वपूर्ण खनिजों और स्वच्छ ऊर्जा तकनीक तक पहुंच को सुरक्षित करने की इच्छा रखता है, विशेष रूप से संकट प्रतिक्रिया उपायों के लिए।
- स्वच्छ ऊर्जा, डीकार्बोनाइजेशन और बुनियादी ढांचा स्तंभ प्रदान करेगा-
  - ♦ तकनीकी सहायता और वित्त जुटाने में मदद,
  - ♦ रियायती वित्त सहित,
  - ♦ प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार और कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए
  - ♦ अक्षय ऊर्जा को अपनाने के लिए टिकाऊ और टिकाऊ बुनियादी ढांचे के विकास में देशों का समर्थन करके।
- अंत में, कर और भ्रष्टाचार विरोधी स्तंभ का उद्देश्य मजबूत कर, धन शोधन विरोधी और रिश्वत विरोधी व्यवस्था लागू करके निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है।

सदस्य कैसे भाग लेते हैं?

- देश किसी भी निर्धारित स्तंभ के तहत पहल में शामिल होने (या शामिल न होने) के लिए स्वतंत्र हैं।
- लेकिन एक बार जब वे नामांकन कर लेते हैं, तो उनसे सभी प्रतिबद्धताओं का पालन करने की अपेक्षा की जाती है।
- इसके अतिरिक्त, ढांचा अन्य देशों के लिए खुला होगा-

0 यदि वे भविष्य में शामिल होना चाहते हैं, बशर्ते वे निर्धारित लक्ष्यों और अन्य आवश्यक दायित्वों का पालन करने के लिए तैयार हों।

नोट: बिडेन प्रशासन पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ पुन: जुड़ाव के लिए IPEF को नए अमेरिकी नीति के रूप में पेश कर रहा है।

क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) के बारे में

- क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) आसियान के दस सदस्य देशों और उसके पांच एफटीए भागीदारों के बीच एक मुक्त व्यापार समझौता (FTA) है।

- आसियान के 10 सदस्य ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम हैं।
- पांच व्यापारिक भागीदार ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, न्यूजीलैंड और कोरिया गणराज्य हैं।
- समझौते का उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं, बौद्धिक संपदा आदि में व्यापार को कवर करना है।

भारत-जापान संबंध

भारत के प्रधान मंत्री क्वाड समूह की बैठक में भाग लेने के लिए जापान की यात्रा पर हैं।

भारत-जापान संबंधों के बारे में

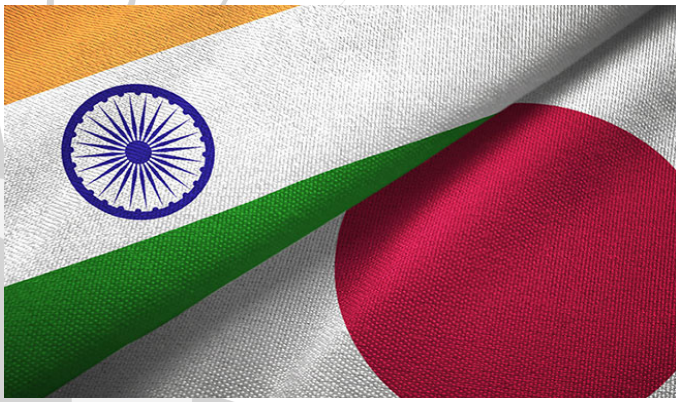

- कहा जाता है कि जापान और भारत के बीच आदान-प्रदान छठी शताब्दी में शुरू हुआ था जब जापान में बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, 1949 में, भारतीय प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने टोक्यो में यूनो चिड़ियाघर को एक भारतीय हाथी दान किया।
- जापान और भारत ने एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए और 28 अप्रैल, 1952 को राजनयिक संबंध स्थापित किए।
- यह संधि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान द्वारा हस्ताक्षरित पहली शांति संधियों में से एक थी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में, भारत के लौह अयस्क ने जापान को तबाही से उबरने में काफी मदद की।
- 1957 में जापानी प्रधान मंत्री नोबुसुके किशी की भारत यात्रा के बाद, जापान ने 1958 में भारत को येन ऋण देना शुरू किया।
  - ♦ यह जापानी सरकार द्वारा दी गई पहली येन ऋण सहायता थी।
- अगस्त 2000 में प्रधान मंत्री योशिरो मोरी की भारत यात्रा ने जापान-भारत संबंधों को मजबूत करने की गति प्रदान की।
  - ♦ श्री मोरी और प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने "जापान और भारत के बीच वैश्विक साझेदारी" की स्थापना का निर्णय लिया।
- अप्रैल 2005 में प्रधान मंत्री जुनिचिरो कोइजुमी की भारत यात्रा के बाद से, जापान-भारत वार्षिक शिखर बैठकें संबंधित राजधानियों में आयोजित की गई हैं।
- जब प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ने दिसंबर 2006 में जापान का दौरा किया, तो जापान-भारत संबंध "वैश्विक और सामरिक साझेदारी" तक बढ़ गए थे।
- सितंबर 2014 में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने जापान की आधिकारिक यात्रा की और प्रधान मंत्री शिंजो आबे के साथ एक शिखर बैठक की।
  - ♦ उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों को "विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी" में अपग्रेड करने पर सहमति व्यक्त की।
- 2015 में, दोनों नेताओं ने "जापान और भारत विजन 2025 विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी" की घोषणा की।
  - ♦ इसका उद्देश्य 'भारत-प्रशांत क्षेत्र और विश्व की शांति और समृद्धि के लिए मिलकर काम करना' है।
- वार्षिक शिखर सम्मेलनों के अलावा, वार्षिक विदेश मंत्री स्तर की सामरिक वार्ता, एनएसए-स्तरीय वार्ता, और मंत्रिस्तरीय स्तर 2+2, आदि भी नियमित रूप से होते हैं।
  - ♦ नवंबर 2019 में, पहली "2+2" बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।
- 2017 में स्थापित एक्ट ईस्ट फोरम का उद्देश्य भारत-जापान सहयोग के लिए एक मंच प्रदान करना है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- यह भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और जापान की "फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक विजन" के तहत है।

आर्थिक संबंध

- हाल के वर्षों में, जापान और भारत के बीच आर्थिक संबंधों का लगातार विस्तार और गहरा हुआ है।
- भारत जापान के लिए 18वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था, और जापान 2020 में भारत के लिए 12वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था।
- साथ ही, जापान से भारत में प्रत्यक्ष निवेश बढ़ा दिया गया है, और वित्त वर्ष 2020 में जापान भारत के लिए चौथा सबसे बड़ा निवेशक था।
- भारत में जापानी निजी क्षेत्र की रुचि बढ़ रही है, और वर्तमान में, लगभग 1,455 जापानी कंपनियों की भारत में शाखाएं हैं।
- भारत पिछले दशकों से जापानी ओडीए ऋण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता रहा है।
  - ♦ दिल्ली मेट्रो ओडीए के उपयोग के माध्यम से जापानी सहयोग के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।
- जापान को भारत का प्राथमिक निर्यात पेट्रोलियम उत्पाद, रसायन, तत्व, यौगिक, गैर-धातु खनिज बर्तन आदि रहा है।
- भारत का प्राथमिक आयात मशीनरी, विद्युत मशीनरी, लोहा और इस्पात उत्पाद, प्लास्टिक सामग्री, अलौह धातु, मोटर वाहनों के पुर्जे आदि हैं।
- जापान में काम कर रही भारतीय कंपनियों की संख्या भी बढ़ रही है और संख्या अब 100 से अधिक को पार कर रही है।

क्वाड लीडर्स समिट

भारत के प्रधान मंत्री ने टोक्यो, जापान में दूसरे इन-पर्सन क्वाड लीडर्स समिट में भाग लिया।

- मार्च 2021 में अपनी पहली आभासी बैठक के बाद से नेताओं की यह चौथी बातचीत थी।

प्रमुख बिंदु

- नेताओं ने एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धता को दोहराया।
- नेताओं ने चल रहे क्वाड सहयोग और भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण का भी जायजा लिया।
- एक क्वाड क्लाइमेट चेंज एक्शन एंड मिटिगेशन पैकेज (क्यू-चैम्प) की घोषणा की गई।
  - ♦ इसका उद्देश्य हरित शिपिंग, हरित हाइड्रोजन सहित स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु और आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे की दिशा में प्रयासों को मजबूत करना है।
- महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों से संबंधित चल रहे कार्यों के हिस्से के रूप में, महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर सिद्धांतों का क्वाड का सामान्य वक्तव्य शुरू किया गया था।
- नेताओं द्वारा इंडो-पैसिफिक के लिए मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) पर एक क्वाड पार्टनरशिप की भी घोषणा की गई।
- नेताओं ने क्वाड उपग्रह डेटा पोर्टल के माध्यम से क्षेत्र के देशों को पृथ्वी अवलोकन डेटा पर संसाधन उपलब्ध कराने पर सहमति व्यक्त की।
  - ♦ यह जलवायु घटनाओं, आपदा की तैयारी और समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग को ट्रैक करने में मदद करेगा।
  - ♦ समावेशी विकास के लिए अंतरिक्ष आधारित डेटा और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने में अपनी दीर्घकालीन क्षमताओं को देखते हुए भारत इस प्रयास में सक्रिय भूमिका निभाएगा।
- अगला क्वाड शिखर सम्मेलन 2023 में ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित किया जाएगा।

क्वाड के बारे में

क्वाड भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान का एक अनौपचारिक बहुपक्षीय समूह है जिसका उद्देश्य एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए सहयोग करना है।

- दो महासागरों से बना और कई महाद्वीपों में फैला यह क्षेत्र समुद्री व्यापार और नौसैनिक प्रतिष्ठानों का केंद्र है।
- हालांकि नेताओं द्वारा स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, इस समूह का एक प्रमुख आधार इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकना है।

RAO'S ACADEMY

क्वाड की पृष्ठभूमि

- 2004 में हिंद महासागर में आई सुनामी के हिंद-प्रशांत क्षेत्र में कहर बरपाने के बाद, भारत ने अपने बचाव प्रयासों को तेज कर दिया, यहां तक कि पड़ोसी देशों में भी।
- जल्द ही, आपदा राहत प्रयास में तीन अन्य नौसैनिक शक्तियां - यू.एस., ऑस्ट्रेलिया और जापान शामिल हो गईं।
- तब जापानी प्रधान मंत्री शिंजो आबे ने इस तरह की अवधारणा के साथ क्वाड देशों को एक साथ लाया।
- 2007 के इंडो-यू.एस मालाबार नौसैनिक अभ्यास में जापान, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर की आंशिक भागीदारी भी देखी गई।
- 2007 के बाद क्वाड ने गति खो दी और पूरे एक दशक बाद 2017 में ही इसे पुनर्जीवित किया गया।
- मार्च 2021 पहली बार था, डत. बिडेन, मोदी जी, ऑस्ट्रेलिया के निवर्तमान प्रधान मंत्री स्कॉट मॉरिसन, और तत्कालीन जापानी प्रधान मंत्री योशीहिदे सुगा एक आधिकारिक क्वाड शिखर सम्मेलन के लिए वस्तुतः मिले।

यह पहली बार था जब 'द स्पिरिट ऑफ द क्वाड' नामक एक संयुक्त बयान में समूह के लिए उद्देश्यों का एक सेट जारी किया गया था।

भारतीय नौसेना - बांग्लादेश नौसेना द्विपक्षीय पूर्व बोंगोसागर शुरू

भारतीय नौसेना (आईएन) का तीसरा संस्करण - बांग्लादेश नौसेना (बीएन) द्विपक्षीय अभ्यास 'बोंगोसागर' पोर्ट मोंगला, बांग्लादेश में शुरू हुआ।

- अभ्यास का बंदरगाह चरण पहले होगा जिसके बाद बंगाल की उत्तरी खाड़ी में एक समुद्री चरण होगा।

प्रमुख बिंदु

- अभ्यास बोंगोसागर का उद्देश्य उच्च स्तर की अंतरसंचालनीयता और संयुक्त परिचालन कौशल विकसित करना है।
- इसमें दोनों नौसेनाओं के बीच समुद्री अभ्यास और संचालन की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।
- भारतीय नौसेना के जहाज कोरा, एक स्वदेश निर्मित गाइडेड मिसाइल कार्वेट, और सुमेधा, एक स्वदेश निर्मित अपतटीय गश्ती पोत अभ्यास में भाग ले रहे हैं।

उपराष्ट्रपति ने गैबॉन का पहला उच्च स्तरीय दौरा किया

उपराष्ट्रपति ने राजधानी शहर लिब्रेविल में उच्च स्तरीय बैठकों की एक श्रृंखला के साथ गैबोनीज गणराज्य के लिए एक उच्च रैंकिंग भारतीय गणमान्य व्यक्ति की पहली यात्रा शुरू की।

गैबॉन के बारे में

- गैबॉन, एक मध्य अफ्रीकी देश, प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध है।
- अटलांटिक महासागर पर स्थित, यह कैमरून, इक्वेटोरियल गिनी और कांगो गणराज्य की सीमा में है।
- यह 2 मिलियन (2017) की आबादी और इसके 85% क्षेत्र को कवर करने वाले जंगलों के साथ कम आबादी वाला है।
- राजधानी और सबसे बड़ा शहर लिब्रेविल है।
- बोली जाने वाली भाषाएं फ्रेंच (आधिकारिक) और विभिन्न बंटू भाषाएं हैं।
- अफ्रीका में गैबॉन की शहरीकरण दर सबसे अधिक है।
- राजधानी, लिब्रेविल, और पोर्ट जेंटिल- देश की आर्थिक राजधानी- 59% आबादी का घर है।
- अपने तेल और खनिज भंडार और अपेक्षाकृत कम आबादी के कारण, गैबॉन अफ्रीका के धनी देशों में से एक है।
- गैबॉन का 10% से अधिक क्षेत्र संरक्षित पार्कलैंड है, देश में 13 राष्ट्रीय उद्यान हैं।

भारत और स्वीडन मेजबान उद्योग संक्रमण वार्ता

भारत और स्वीडन ने अपनी संयुक्त पहल यानी लीडरशिप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन (लीडआईटी) के एक हिस्से के रूप में उद्योग संक्रमण संवाद स्टॉकहोम की मेजबानी की।

- लीडआईटी पहल उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देती है जो वैश्विक जलवायु कार्रवाई में प्रमुख हितधारक हैं और विशिष्ट हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

प्रमुख बिंदु

- जापान और दक्षिण अफ्रीका, पहल के नवीनतम सदस्यों का स्वागत किया गया।
- यह देशों और कंपनियों को मिलाकर लीडआईटी की कुल सदस्यता को 37 तक बढ़ा देता है।
- इस उच्च स्तरीय संवाद ने संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन 'स्टॉकहोम+50' में भी योगदान दिया है।
- आयोजन के दौरान, भारत ने 2022-23 के कार्यान्वयन के लिए प्राथमिकताओं पर गोलमेज वार्ता की अध्यक्षता की।
- उद्योग संक्रमण के लिए नेतृत्व (लीडआईटी) के बारे में
- लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन (लीडआईटी) उन देशों और कंपनियों को इकट्ठा करता है जो पेरिस समझौते को हासिल करने के लिए कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- इसे सितंबर 2019 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन में स्वीडन और भारत की सरकारों द्वारा लॉन्च किया गया था और यह विश्व आर्थिक मंच द्वारा समर्थित है।
- लीडआईटी सदस्य इस धारणा की सदस्यता लेते हैं कि ऊर्जा-गहन उद्योग निम्न-कार्बन पथों पर प्रगति कर सकता है और होना चाहिए।
  - ♦ इसका उद्देश्य 2050 तक शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करना है।
- प्रबंधन बोर्ड स्वीडन, भारत और विश्व आर्थिक मंच के प्रतिनिधियों से बना है।
- सचिवालय नेतृत्व समूह के काम के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है और स्टॉकहोम पर्यावरण संस्थान (एसईआई) द्वारा इसकी मेजबानी की जाती है।

स्टॉकहोम+50 के बारे में

- (स्टॉकहोम+50) संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्टॉकहोम में आयोजित होने वाली एक अंतरराष्ट्रीय बैठक है।
- थीम: "स्टॉकहोम+50: सभी की समृद्धि के लिए एक स्वस्थ ग्रह – हमारी जिम्मेदारी, हमारा अवसर"
- यह मानव पर्यावरण पर 1972 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाया जाएगा।
  - ♦ 1972 के सम्मेलन ने पहली बार पर्यावरण को एक महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दा बना दिया।

- यह आयोजन नेताओं को 50 वर्षों की बहुपक्षीय पर्यावरणीय कार्रवाई का लाभ उठाने का अवसर प्रदान करेगा।
  - ♦ स्वस्थ ग्रह पर बेहतर भविष्य को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक साहसिक और तत्काल कार्रवाई को प्राप्त करना।
- स्टॉकहोम+50 का आयोजन संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया जाता है और इसकी मेजबानी केन्या सरकार के सहयोग से स्वीडन करता है।

भारत और बांग्लादेश के बीच रेल

हाल ही में बहाल हल्दीबाड़ी-चिलाहाटी रेल लिंक के माध्यम से एक नई यात्री ट्रेन सेवा मिताली एक्सप्रेस को हाल ही में शुरू किया गया था।

- न्यू जलपाईगुड़ी (भारत) - ढाका (बांग्लादेश) - मिताली एक्सप्रेस के बीच यह तीसरी यात्री ट्रेन सेवा जिसका वस्तुतः मार्च में उद्घाटन किया गया था।

प्रमुख बिंदु

- मिताली एक्सप्रेस ट्रेन को कोविड महामारी प्रतिबंधों के कारण पहले शुरू नहीं किया जा सका।
- मिताली एक्सप्रेस ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी से ढाका तक 595 किलोमीटर की दूरी तय करेगी (जिसमें से 61 किलोमीटर भारतीय हिस्सा है)।
- नई यात्री सेवा दोनों देशों के पर्यटन को बढ़ावा देगी क्योंकि यह बांग्लादेश को उत्तर बंगाल के साथ-साथ भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र से जोड़ती है।
- यह भारत के माध्यम से रेल द्वारा बांग्लादेशी नागरिकों को नेपाल की पहुंच भी प्रदान करेगा।
- भारत और बांग्लादेश के बीच पहले से मौजूद दो यात्री ट्रेन सेवाएं हैं:
  - ♦ कोलकाता-ढाका-कोलकाता मैत्री एक्सप्रेस और
  - ♦ कोलकाता-खुलना-कोलकाता बंधन एक्सप्रेस।

भारत-सेनेगल ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

उपराष्ट्रपति, जो तीन देशों के दौरे पर हैं, सेनेगल में डकार हवाई अड्डे पर पहुंचे।

- सेनेगल की यह पहली उच्च स्तरीय भारतीय यात्रा है और यह ऐसे समय में हो रहा है जब दोनों देश अपने राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष मना रहे हैं।

प्रमुख बिंदु

- विभिन्न क्षेत्रों में अपनी द्विपक्षीय साझेदारी को और गहरा करने के लिए दोनों पक्षों द्वारा तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।
- पहला समझौता ज्ञापन राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा मुक्त व्यवस्था से संबंधित है।
- दूसरा समझौता 2022-26 की अवधि के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सीईपी) के नवीनीकरण से संबंधित है।
- तीसरा समझौता ज्ञापन युवा मामलों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने का प्रयास करता है।

सेनेगल के बारे में

- सेनेगल पश्चिम अफ्रीका के तट पर स्थित एक देश है, जो पश्चिम में उत्तरी अटलांटिक महासागर की सीमा पर है।
- इसकी सीमा उत्तर में सेनेगल नदी के साथ मॉरिटानिया, पूर्व में माली, दक्षिण में गिनी और गिनी-बिसाऊ से लगती है।
- सेनेगल पश्चिम में द्वीप देश केप वर्डे के साथ समुद्री सीमा भी साझा करता है।
- सेनेगल तीन जलवायु क्षेत्रों के भीतर स्थित है, उत्तर में एक गर्म रेगिस्तान क्षेत्र, केंद्र में एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र और दक्षिण में एक उष्णकटिबंधीय सवाना क्षेत्र है।
- देश की आबादी लगभग 14.8 मिलियन (2016 में) है।
- राजधानी और सबसे बड़ा शहर डकार है।
- बोली जाने वाली भाषाएँ फ्रेंच (आधिकारिक), वोलोफ और अन्य पश्चिम अफ्रीकी भाषाएँ हैं।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO's Ac

भारत बांग्लादेश संयुक्त सैन्य अभ्यास

भारत बांग्लादेश द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के हिस्से के रूप में, बांग्लादेश के जशोर सैन्य स्टेशन में एक संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास Ex SAMPRITI-X आयोजित किया जा रहा है।

- अभ्यास का उद्देश्य दोनों सेनाओं के बीच अंतरसंचालनीयता को मजबूत करना और एक दूसरे के सामरिक अभ्यास और संचालन तकनीकों को समझना है।

प्रमुख बिंदु

- संयुक्त सैन्य अभ्यास Eñ SAMPRITI-X के दौरान, दोनों राष्ट्रों की सेनाएं कई नकली परिदृश्यों में विशेषज्ञता साझा करेंगी जैसे:
  - ♦ काउंटर टेररिज्म,
  - ♦ मानवीय सहायता और आपदा राहत और
  - ♦ संयुक्त राष्ट्र के जनादेश के तहत संयुक्त राष्ट्र शांति सेना।
- कंपनी की ताकत के भारतीय दल का प्रतिनिधित्व डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन द्वारा किया जा रहा है।

बहुराष्ट्रीय संयुक्त अभ्यास "पूर्व खान क्वेस्ट 2022"

मंगोलिया में सैन्य टुकड़ियों की भागीदारी की विशेषता वाला एक बहुराष्ट्रीय शांति अभ्यास "एक्स खान क्वेस्ट 2022" आयोजित किया गया था।

- भारतीय सेना का प्रतिनिधित्व लद्दाख स्काउट्स के एक दल द्वारा किया जाता है।

प्रमुख बिंदु

- अभ्यास भाग लेने वाले देशों के सशस्त्र बलों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने में सक्षम होगा जैसे:
  - ♦ क्षेत्र प्रशिक्षण अभ्यास, युद्ध चर्चा, व्याख्यान और प्रदर्शन।
- 14 दिवसीय अभ्यास का उद्देश्य निम्नलिखित है:
- इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ाने,
- सैन्य से सैन्य संबंधों का निर्माण,
- शांति सहायता अभियान विकसित करना और
- भाग लेने वाले देशों के बीच सैन्य तैयारी।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

8 आंतरिक सुरक्षा

सूरत और उदयगिरि युद्धपोत

स्वदेशी युद्धपोत निर्माण के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना - भारतीय नौसेना, सूरत और उदयगिरी के दो फ्रंटलाइन युद्धपोत, मुंबई के मझगांव डॉक्स लिमिटेड में समवर्ती रूप से लॉन्च किए गए थे।

- सूरत एक परियोजना 15B विध्वंसक है और उदयगिरि एक परियोजना 17। युद्धपोत हैं।

प्रमुख बिंदु

- श्सूरतश प्रोजेक्ट 15B डिस्ट्रॉयर्स का चौथा जहाज है जो P15A (कोलकाता क्लास) डिस्ट्रॉयर्स के महत्वपूर्ण बदलाव की शुरुआत करता है।
- सूरत जहाज को ब्लॉक निर्माण पद्धति का उपयोग करके बनाया गया है जिसमें दो अलग-अलग भौगोलिक स्थानों पर पतवार निर्माण शामिल है और एमडीएल, मुंबई में एक साथ जोड़ा गया है।
- उदयगिरिश, जिसका नाम आंध्र प्रदेश राज्य में एक पर्वत श्रृंखला के नाम पर रखा गया है, प्रोजेक्ट 17। फ्रिगेट्स का तीसरा जहाज है।
- ये बेहतर चुपके सुविधाओं, उन्नत हथियारों और सेंसर और प्लेटफॉर्म प्रबंधन प्रणालियों के साथ P17 फ्रिगेट्स (शिवालिक क्लास) के अनुवर्ती हैं।

प्रोजेक्ट 15B के बारे में

- प्रोजेक्ट 15B पोत कोलकाता - श्रेणी के विध्वंसक (परियोजना 15।) का अनुवर्ती है और इसे विशाखापत्तनम-श्रेणी के विध्वंसक के रूप में भी जाना जाता है।
- मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) अनुबंध के तहत है, जिसे जनवरी 2011 में भारतीय नौसेना के लिए चार प्रोजेक्ट 15B युद्धपोतों के निर्माण के लिए हस्ताक्षरित किया गया था।
- जहाजों को सेवा के इन-हाउस डिजाइन संगठन 'नौसेना डिजाइन निदेशालय' द्वारा डिजाइन किया गया है।
- युद्धपोतों का नाम विशाखापत्तनम, इंफाल, सूरत और मोरमुगाओ जैसे प्रमुख भारतीय शहरों के नाम पर रखा गया है।
- इस श्रेणी का पहला जहाज, आईएनएस विशाखापत्तनम, 2021 में चालू किया गया था।
- अन्य दो-मोरमुगाओ और इंफाल- को लॉन्च कर दिया गया है लेकिन अभी तक चालू नहीं किया गया है।
- 7,400 टन के पूर्ण भार विस्थापन के साथ, प्रत्येक 163 मीटर लंबी परियोजना 15B जहाज में उन्नत तकनीक है और इसे 30 समुद्री मील की अधिकतम गति पर क्रूज के लिए डिजाइन किया गया है।
- परियोजना 15B में कुल मिलाकर लगभग 75% स्वदेशी सामग्री है।
- विध्वंसक स्वदेशी हथियारों से लैस होंगे जैसे:
  - ♦ बीईएल की मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें,
  - ♦ ब्रह्मोस सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें, और

RAO'S ACADEMY

♦ लार्सन एंड टुब्रो के स्वदेशी टारपीडो ट्यूब लॉन्चर और पनडुब्बी रोधी स्वदेशी रॉकेट लॉन्चर।

- जहाज 312 व्यक्तियों के एक दल को समायोजित कर सकता है जिसकी 400 समुद्री मील की सहनशक्ति है।
- यह क्षेत्र के बाहर के ऑपरेशन में विस्तारित मिशन समय के साथ एक विशिष्ट 42-दिवसीय मिशन को अंजाम दे सकता है।

नीलगिरी-क्लास (प्रोजेक्ट 17।) फ्रिगेट्स के बारे में

नीलगिरि-श्रेणी के स्टील्थ फ्रिगेट, जिन्हें प्रोजेक्ट 17। फ्रिगेट के रूप में भी जाना जाता है, का निर्माण भारतीय नौसेना के लिए गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स द्वारा किया जा रहा है।

- परियोजना 17। कार्यक्रम में सात उन्नत निर्देशित मिसाइल युद्धपोत का विकास शामिल है।
- इन सात युद्धपोतों में से चार मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स द्वारा और शेष तीन जहाजों का निर्माण जीआरएसई द्वारा किया जाएगा।
- यह कार्यक्रम प्रोजेक्ट 17 शिवालिक-श्रेणी के युद्धपोतों का अनुवर्ती है।
- जहाजों का नाम आईएनएस नीलगिरि, आईएनएस हिमगिरी, आईएनएस उदयगिरि, आईएनएस दुनागिरी, आईएनएस तारागिरी, आईएनएस विंध्यगिरि और आईएनएस महेंद्रगिरि भारत में पर्वत श्रृंखलाओं के नाम पर रखा जाएगा।
- जहाज निर्माण के लिए लगभग 80% सामग्री और उपकरण घरेलू विक्रेताओं से मंगवाए जा रहे हैं।
- भारतीय नौसेना की युद्धक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए परियोजना 17। कार्यक्रम को फरवरी 2015 में भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- कक्षा का प्रमुख जहाज, आईएनएस नीलगिरी, सितंबर 2019 में मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स में लॉन्च किया गया था।
- प्रोजेक्ट 17। जहाज को स्थानीय रूप से नौसेना डिजाइन निदेशालय (सरफेस शिप डिजाइन ग्रुप) द्वारा डिजाइन किया गया था।
- नीलगिरि श्रेणी की लंबाई 149 मीटर, चौड़ाई 17.8 मीटर और ड्राफ्ट 5.22 मीटर होगा।
- युद्धपोतों में 226 कर्मियों को समायोजित करने की क्षमता होगी।
- प्रोजेक्ट 17। फ्रिगेट्स को संयुक्त डीजल और गैस (CODAG) टाइप प्रोपल्शन सिस्टम द्वारा संचालित किया जाएगा।

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) के बारे में

- जीआरएसई की उत्पत्ति 1884 से हुई है।
- प्रारंभ में कंपनी एक अनिगमित इकाई के रूप में जहाज निर्माण और मरम्मत कार्यशालाओं के संचालन के व्यवसाय में लगी हुई थी।
- कंपनी अधिनियम, 1913 के तहत कंपनी रजिस्ट्रार, कलकत्ता के साथ इसे 26 फरवरी, 1934 को "गार्डन रीच वर्कशॉप लिमिटेड" के रूप में शामिल किया गया था।
- 5 नवंबर, 1957 को इसका नाम "गार्डन रीच वर्कशॉप प्राइवेट लिमिटेड" रखा गया।
- 1960 में संगठन का राष्ट्रीयकरण किया गया और जल्द ही इसे रक्षा मंत्रालय के अधीन लाया गया।
- तब से कंपनी की शेयर पूंजी समय-समय पर अपने नामितियों के साथ भारत के राष्ट्रपति के पूर्ण स्वामित्व में है।
- सरकार के अधिग्रहण के बाद 30 नवंबर, 1961 को कंपनी का नाम बदलकर "गार्डन रीच वर्कशॉप लिमिटेड" कर दिया गया।
- कंपनी रजिस्ट्रार, पश्चिम बंगाल द्वारा निगमन के प्रमाण पत्र के बाद, 31 दिसंबर, 1976 को नाम फिर से षार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेडष में बदल दिया गया।

मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) के बारे में

- मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई, एक ISO 9001: 2015 कंपनी भारत में अग्रणी जहाज निर्माण यार्ड में से एक है।

RAO'S ACADEMY

- मझगांव डॉक का इतिहास 1774 का है, जब मझगांव में एक छोटी सूखी गोदी का निर्माण किया गया था।
- इसे 1934 में लिमिटेड कंपनी के रूप में शामिल किया गया था
- 1960 में सरकार द्वारा इसके अधिग्रहण के बाद, मझगांव डॉक भारत में प्रमुख युद्धपोत निर्माण यार्ड बनने के लिए तेजी से विकसित हुआ।
- यह एक एकल इकाई, छोटी जहाज मरम्मत कंपनी से एक बहु-इकाई और बहु-उत्पाद कंपनी में विकसित हुई है।
- कंपनी के डिजाइन के मौजूदा पोर्टफोलियो में घरेलू और विदेशी दोनों ग्राहकों के लिए उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला है।
- 1960 से, एमडीएल ने उन्नत विध्वंसक से लेकर मिसाइल नौकाओं और 6 पनडुब्बियों तक 26 युद्धपोतों सहित कुल 799 जहाजों का निर्माण किया है।

आईएनएस गोमती सेवामुक्त

34 महत्वपूर्ण वर्षों तक देश और भारतीय नौसेना की सेवा करने के बाद, आईएनएस गोमती को मुंबई में नौसेना डॉकयार्ड में सूर्यास्त के समय सेवामुक्त कर दिया गया था।

- कैप्टन सुदीप मलिक की कमान में जहाज का भुगतान किया गया।

प्रमुख बिंदु

- आईएनएस गोमती का नाम लखनऊ में जीवंत नदी गोमती से लिया गया है और इसे 16 अप्रैल 1988 को चालू किया गया था।
- गोदावरी श्रेणी के गाइडेड-मिसाइल फ्रिगेट्स का तीसरा जहाज, आईएनएस गोमती भी पश्चिमी बेड़े का सबसे पुराना योद्धा था, जब उसे सेवामुक्त किया गया था।
- अपनी सेवा के दौरान, ऑपरेशन कैक्टस, पराक्रम और रेनबो और कई द्विपक्षीय और बहुराष्ट्रीय नौसैनिक अभ्यासों में भाग लिया।
- उसके सेवामुक्त होने के बाद, लखनऊ में गोमती नदी के सुरम्य तट पर स्थापित किए जा रहे एक खुले संग्रहालय में जहाज की विरासत को जीवंत रखा जाएगा।
  - ♦ आईएनएस गोमती की कई युद्ध प्रणालियों को सैन्य और युद्ध अवशेषों के रूप में भी प्रदर्शित किया जाएगा।

रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 76,390 करोड़ रुपये के प्रस्तावों को मंजूरी दी

रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) ने 76,390 करोड़ रुपये की राशि के सशस्त्र बलों के पूंजी अधिग्रहण प्रस्तावों के लिए आवश्यकता की स्वीकृति (एओएन) को मंजूरी दी।

- यह 'खरीदें (भारतीय)', 'खरीदें और बनाएं (भारतीय)' और 'खरीदें (भारतीय-आईडीडीएम)' श्रेणियों के तहत किया गया था।
- इससे भारतीय रक्षा उद्योग को पर्याप्त बढ़ावा मिलेगा और विदेशी खर्च में उल्लेखनीय कमी आएगी।

रक्षा अधिग्रहण परिषद (DAC) के बारे में

रक्षा अधिग्रहण परिषद रक्षा मंत्रालय में सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है।

- रक्षा मंत्री परिषद के अध्यक्ष हैं।
- **सदस्य:** रक्षा राज्य मंत्री (आरआरएम)
  - ♦ चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) (नियुक्त होने पर)

- ♦ सेनाध्यक्ष (सीओएएस)
- ♦ नौसेनाध्यक्ष (सीएनएस)
- ♦ वायु सेना प्रमुख (सीएएस)
- ♦ रक्षा सचिव
- ♦ रक्षा उत्पादन और आपूर्ति विभाग के सचिव
- ♦ सचिव, रक्षा अनुसंधान और विकास
- ♦ सचिव, रक्षा वित्त
- ♦ वाइस चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (नियुक्त होने पर)/CISCS विशेष सचिव (अधिग्रहण)

- कारगिल युद्ध (1999) के बाद 2001 में 'राष्ट्रीय सुरक्षा प्रणाली में सुधार' पर मंत्रियों के समूह की सिफारिशों के बाद इसका गठन किया गया था।
- कार्य:
  - ♦ 15 साल की समयावधि को कवर करते हुए दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य योजना (LTPP) में पूंजी अधिग्रहण को 'सैद्धांतिक रूप से' अनुमोदन दें।
  - ♦ प्रत्येक पूंजी अधिग्रहण परियोजना को 'सैद्धांतिक रूप से' आवश्यकता की स्वीकृति दें।

इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि-4

इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि -4 का एक सफल प्रशिक्षण प्रक्षेपण, एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप, ओडिशा से किया गया था।

- सफल परीक्षण सामरिक बल कमान के तत्वावधान में किए गए नियमित उपयोगकर्ता प्रशिक्षण लॉन्च का हिस्सा था।

अग्नि मिसाइल के बारे में

- अग्नि श्रेणी की मिसाइलें कम दूरी की मिसाइलों से लेकर मध्यम दूरी की मिसाइलों (700-5000 किलोमीटर) तक सड़क और रेल गतिशीलता के साथ ठोस चालित बैलिस्टिक मिसाइल हैं।
- अग्नि मिसाइल एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) का एक घटक है।
- यह कार्यक्रम भारत द्वारा 1983 में +260 मिलियन के बजट के साथ शुरू किया गया था।
- इसे रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला (DRDL) द्वारा प्रबंधित किया गया था।
- अग्नि श्रेणी की मिसाइलों को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित ठोस ईंधन वाले इंजनों का उपयोग करना था।
- 1989 में, भारत ने अग्नि श्रेणी की मिसाइल का परीक्षण किया जिसकी मारक क्षमता 1000-1500 किलोमीटर थी। यह अग्नि I श्रेणी की मिसाइल थी।
- सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV-3) के ठोस ईंधन वाले बूस्टर मोटर के पहले चरण का इस्तेमाल दो चरणों वाली अग्नि मिसाइल के पहले चरण के लिए किया गया था।
- 1999 में, भारत ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के तत्वावधान में अग्नि-द्वितीय मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया।
  - ♦ अग्नि-द्वितीय में 2000 किमी की सीमा के साथ एक बेहतर मार्गदर्शन प्रणाली है।
- अग्नि-II ने दोनों चरणों में ठोस ईंधन का इस्तेमाल किया, जिससे मिसाइल लॉन्च करने के लिए तैयारी के समय में भारी कमी आई।
- 2011 भारत के परमाणु प्रतिरोध के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष था क्योंकि उसी वर्ष मध्यवर्ती श्रेणी अग्नि-III को भी भारतीय सेना में शामिल किया गया था।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- हालांकि, इस तथ्य के बावजूद कि भारत ने अग्नि-III को 3000 किलोमीटर की सीमा के साथ विकसित किया था, उन्हें अभी भी एक लंबी दूरी की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता थी।
- इससे अग्नि-IV मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का विकास हुआ।
  - ♦ मिसाइल की मारक क्षमता 4000ाउे थी।
- अग्नि-IV मिसाइल 4000 कि.मी. की सीमा के साथ परमाणु सक्षम है।
- अंतर-महाद्वीपीय सीमा क्षमता हासिल करने की भारत की इच्छा ने भारत को 5000 किमी की सीमा के साथ अग्नि-V मिसाइल विकसित करने के लिए प्रेरित किया।
- अग्नि मिसाइल के अन्य संस्करणों के विपरीत, अग्नि-V तीन चरणों वाली ठोस चालित बैलिस्टिक मिसाइल है।
- अग्नि-V मिसाइल को कई स्वतंत्र रूप से लक्षित पुनः प्रवेश वाहनों (MIRV) के साथ-साथ युद्धाभ्यास योग्य पुनः प्रवेश वाहन (MaRV) के साथ लगाया जा सकता है।
  - ♦ दोनों प्रौद्योगिकियां डीआरडीओ द्वारा विकसित की जा रही हैं।

AGNI - I

AGNI - II

AGNI - III

AGNI - IV

AGNI - V

YOUR SUCCE
RAO'S ACADEMY

9 विविध

ट्राई का रजत जयंती समारोह

प्रधानमंत्री ने भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के रजत जयंती समारोह के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित किया।

ट्राई के बारे में

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की स्थापना 20 फरवरी 1997 से संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी, जिसे भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण अधिनियम, 1997 कहा जाता है।

- उद्देश्य: दूरसंचार सेवाओं के लिए शुल्क निर्धारण/संशोधन सहित दूरसंचार सेवाओं को विनियमित करना, जो पहले केंद्र सरकार में निहित थे।
- ट्राई के मुख्य उद्देश्यों में से एक निष्पक्ष और पारदर्शी नीति वातावरण प्रदान करना है जो एक समान खेल मैदान को बढ़ावा देता है और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की सुविधा प्रदान करता है।
- ट्राई का मिशन देश में दूरसंचार के विकास के लिए परिस्थितियों का निर्माण और पोषण करना है।
- एक दूरसंचार विवाद निपटान और अपीलीय न्यायाधिकरण (टीडीसैट) की स्थापना करते हुए, 24 जनवरी 2000 से प्रभावी, एक अध्यादेश द्वारा ट्राई अधिनियम में संशोधन किया गया था।
  - ♦ टीडीसैट ट्राई से न्यायिक और विवाद संबंधी कार्यों को अपने हाथ में लेता है।
- टीडीसैट की स्थापना निम्नलिखित की देखरेख के लिए की गई थी:
  - ♦ एक लाइसेंसकर्ता और एक लाइसेंसधारी के बीच किसी भी विवाद का न्यायनिर्णयन करने के लिए,
  - ♦ दो या दो से अधिक सेवा प्रदाताओं के बीच किसी विवाद का न्यायनिर्णयन करने के लिए,
  - ♦ सेवा प्रदाता और उपभोक्ताओं के समूह के बीच किसी भी विवाद का न्यायनिर्णयन करने के लिए, और
  - ♦ ट्राई के किसी निर्देश, निर्णय या आदेश के विरुद्ध अपीलों को सुनना और उनका निपटान करना।

विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस 2022

विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस (डब्ल्यूटीआईएसडी) प्रतिवर्ष मनाया जाता है ताकि उन संभावनाओं के बारे में जाग. रूकता बढ़ाने में मदद मिल सके जो इंटरनेट और अन्य सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) के उपयोग से समाजों और अर्थव्यवस्थाओं में आ सकती हैं।

- WTISD-2022 "वृद्ध व्यक्तियों और स्वस्थ उम्र बढ़ने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी" विषय पर केंद्रित है।

प्रमुख बिंदु

- WTISD 17 मई को मनाया जाता है, जो पहले अंतर्राष्ट्रीय टेलीग्राफ कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने और ITU के निर्माण की वर्षगांठ का प्रतीक है।
- विश्व दूरसंचार दिवस 1969 से 17 मई को प्रतिवर्ष मनाया जाता है, आईटीयू की स्थापना और 1865 में पहले अंतर्राष्ट्रीय टेलीग्राफ कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने के अवसर पर।
- इस वर्ष की थीम लोगों को स्वस्थ, जुड़े और स्वतंत्र रहने में मदद करने में दूरसंचार/आईसीटी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाती है - शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक रूप से।

YOUR SUCCESS OUR PRIDE
RAO'S ACADEMY

नोट: इससे पहले, भारत को अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) परिषद के सदस्य के रूप में एक और 4 साल के कार्यकाल (2019-2022) के लिए चुना गया था।

डिजिटल इंडिया भाषा

डिजिटल इंडिया भाषा के लिए रणनीति बनाने के लिए एमईआईटीवाई ने शोधकर्ताओं और स्टार्टअप्स के साथ मंथन किया।

- डिजिटल इंडिया BHASHINI भारत का AI आधारित भाषा अनुवाद मंच है।

डिजिटल इंडिया BHASHINI के बारे में

- मिशन डिजिटल इंडिया BHASHINI, यानी (भारत के लिए भाषा इंटरफेस) राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) का एक हिस्सा है।
- एक भाशिनी प्लेटफॉर्म कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) संसाधनों को एमएसएमई, स्टार्टअप्स और व्यक्तिगत इनोवेटर्स को सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराएगा।
- इस मिशन का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को उनकी अपनी भाषा में देश की डिजिटल पहल से जोड़कर उन्हें सशक्त बनाना है।
- भाशिनी प्लेटफॉर्म इंटरऑपरेबल है और पूरे डिजिटल इकोसिस्टम को उत्प्रेरित करेगा।
- डिजिटल सरकार के लक्ष्य को साकार करने के लिए यह एक बड़ा कदम है।
- मिशन डिजिटल इंडिया भाशिनी का उद्देश्य जनहित के क्षेत्रों में इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं में सामग्री को पर्याप्त रूप से बढ़ाना है।
  - ♦ विशेष रूप से शासन और नीति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी आदि में, जो नागरिकों को अपनी भाषा में इंटरनेट का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- बहुभाषीता स्टार्टअप्स के लिए नवीन समाधान विकसित करने का एक बड़ा अवसर प्रस्तुत करती है जो सभी नागरिकों को उनकी भाषा के बावजूद पूरा कर सकता है।

भारत का पहला लैवेंडर महोत्सव

देश के पहले 'लैवेंडर फेस्टिवल' का उद्घाटन जम्मू-कश्मीर के भद्रवाह में हुआ, जिसे भारत की बैंगनी क्रांति का जन्मस्थान भी कहा जाता है।

- देश का पहला नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाई एल्टीट्यूड मेडिसिन भी भद्रवाह में बनाया जा रहा है।

प्रमुख बिंदु

- लैवेंडर रोजगार सृजन और अनुसंधान का एक अवसर है जो इस क्षेत्र के लिए विकास के कई प्रतिमान खोल रहा है।
- भद्रवाह में लैवेंडर महोत्सव में बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, प्रगतिशील किसानों और कृषि उद्यमियों द्वारा भाग लिया जा रहा है।
- लैवेंडर की खेती ने जम्मू-कश्मीर के भौगोलिक दृष्टि से दूरस्थ क्षेत्रों में लगभग 5,000 किसानों और युवा उद्यमियों को रोजगार दिया है।
- 200 एकड़ से ज्यादा जमीन पर 1,000 से ज्यादा किसान परिवार इसकी खेती कर रहे हैं।

भारत ITU में फिर से चुनाव लड़ेगा

भारत 2023-2026 की अवधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) परिषद के लिए फिर से चुनाव लड़ रहा है।

- भारत 1869 से आईटीयू का सदस्य रहा है और संघ के कार्यों और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

आईटीयू के बारे में

- अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है – आईसीटी।
- इसकी स्थापना 1865 में संचार नेटवर्क में अंतरराष्ट्रीय संपर्क को सुगम बनाने के लिए की गई थी।
- इसके कार्यों को निम्नानुसार वर्णित किया जा सकता है:
  - ♦ यह वैश्विक रेडियो स्पेक्ट्रम और उपग्रह कक्षाओं का आवंटन करता है,
  - ♦ तकनीकी मानकों को विकसित करता है जो सुनिश्चित करता है कि नेटवर्क और प्रौद्योगिकियां निर्बाध रूप से आपस में जुड़ती हैं,
  - ♦ और यह दुनिया भर में कम सेवा वाले समुदायों के लिए आईसीटी तक पहुंच में सुधार करने का प्रयास करता है।
- ITU की वैश्विक सदस्यता में 193 सदस्य देशों के साथ-साथ कुछ 900 कंपनियां, विश्वविद्यालय और अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठन शामिल हैं।
- भारत 1952 से आईटीयू परिषद का नियमित सदस्य रहा है।
- भारत को पिछली बार 2018 में एक और 4 साल के कार्यकाल (2019-2022) के लिए ITU परिषद के सदस्य के रूप में चुना गया था।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

“ विद्याधनं सर्व धनं प्रधानम् ”

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of **RACE**)

आपकी सफलता हमारी प्राथमिकता

ADDRESS: **R-26, Zone-II, Opp, Railway Track, M.P. Nagar, Bhopal**
CONTACT: **0755-7967814, 7967718, +91 83196 18002**
EMAIL: info@theracefoundation.com
WEBSITE: **www.theracefoundation.com**